अथवा

पाणिनीयप्रबोधः —ले० श्री गोपालशास्त्री दर्शनकेशरी

अङ्कविभाजनम्

अव्ययान्ते	३०	१००
भ्वादितः कृदन्तान्ते	३०	
कारकसमासयोः	२०	
तद्धितस्त्रीप्रत्यययोः	२०	

(सूचना—लघुसिद्धान्तकौमुद्याः प्रश्नपत्रनिर्माणे अङ्कविभाजनक्रमः अवश्यं पा ऌनीयः) ।

२—द्वितीयं प्रश्नपत्रम् पद्यकाव्यम्

(खण्डत्रयस्य समस्तग्रन्थेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

प्रथमखण्डः

(क) रघुवंशस्य द्वितीयसर्गस्य आदितः २५ श्लोकाः

(ख) छन्दः

आर्या, अनुष्टुप्, वियोगिनी, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजातिः, केवलं लक्षणोदाहरणानि ।

द्वितीयखण्डः

(क) रघुवंशस्य द्वितीयसर्गस्य २६-५० श्लोकाः

(ख) छन्दः

दोधकम्, तोटकम्, भुजङ्गप्रयातम्, द्रुतविलम्बितम्, वंशस्थः केवलं लक्षणोदाहरणानि ।

तृतीयखण्डः

(क) रघुवंशस्य द्वितीयसर्गः । ८०

(ख) छन्दः

प्रहर्षिणी, वसन्ततिलका, मालिनी, हरिणी, शिखरिणी, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितम्, स्रग्धरा । केवलं लक्षणोदाहरणानि । २०

सहायक-ग्रन्थः

शब्दधातुरूपच्छन्दसां तालिका
सम्पादकः—विनोदराव पाठकः
प्रकाशकः—शारदा प्रकाशन संस्थान,
डी—३६/४४ अगस्त्य कुंड, वाराणसी ।

गद्यकाव्यम्

३—तृतीयं प्रश्नपत्रम्

(खण्डत्रयस्य ग्रन्थेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

प्रथमखण्डः

(क) नीतिसंग्रहः सम्पादकः—गौरीनाथ पाठकः
प्रकाशकः—शारदा प्रकाशन संस्थान
अगस्त्य कुंड वाराणसी ।

(ख) अनुवादः (१) संस्कृतवाक्यानां हिन्दीभाषायामनुवादः
(२) हिन्दीवाक्यानां संस्कृतेऽनुवादः

द्वितीयखण्डः

(क) नीतिसंग्रहः— सम्पादकः—गौरीनाथपाठकः

(ख) अनुवादः (१) हिन्दीभाषातः संस्कृते ।
(२) संस्कृतात् हिन्दीभाषायाम्

तृतीयखण्डः

(क) नीतिसंग्रहः सम्पादकः—गौरीनाथ पाठकः ४०
प्रकाशकः—शारदा प्रकाशन संस्थान,
डी—३६/४४ अगस्त्य कुंड, वाराणसी

(ख) अनुवादः— संस्कृतात् हिन्दीभाषायाम् ३५
हिन्दीभाषातः संस्कृते २५

सहायकग्रन्थः—

१—बालनिबन्धमाला—ले० श्रीवासुदेव द्विवेदी,
प्रकाशकः—सार्वभौमसंस्कृतप्रचारकार्यालय,
वाराणसी

२—संस्कृतरचनानुवादशिक्षकः ले०—विश्वेश्वरसिद्धान्तशिरोमणिः

४—चतुर्थं प्रश्नपत्रम् दर्शनम्

(खण्डत्रयस्य ग्रन्थेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

प्रथमखण्डः

तर्कसंग्रहस्य प्रत्यक्षखण्डम् ।

द्वितीयखण्डः

तर्कसंग्रहस्य अनुमानोपमानशब्दखण्डाः ।

तृतीयखण्डः

तर्कसंग्रहः १००

अनिवार्यविषयः हिन्दी

(तृतीयखण्डस्य ग्रन्थेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

५—पञ्चमं प्रश्नपत्रम्

प्रथमखण्डः

विशेष—पाठ्यग्रन्थों से गद्यांश एवं पद्यांश की व्याख्या तथा पाठसारांश पूछे जायेंगे। अङ्कविभाजन निम्नलिखित रूप से होगा।

(अ) पाठ्यग्रन्थ ४०

नवभारती, भाग १ उत्तरप्रदेशराजकीयप्रकाशन

(ब) द्रुतपाठः रेल की सीटी, ले०—श्री प्रसाद २०

प्रकाशक लोकभारती, इलाहाबाद

(ग) व्याकरण १५

व्याकरण का महत्त्व, वर्णभेद, लिपि, शब्दभेद संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण, लिंग, वचन तथा पुरुष।

सहायकपुस्तक—

व्याकरणज्योत्स्ना, भाग १, ले०—श्री करुणापति त्रिपाठी

प्र०—हिन्दीप्रचारक पुस्तकालय, वाराणसी

(घ) निबन्ध २५

सहायक पुस्तक—

निबन्धसुधा, ले०—कपिलदेव त्रिपाठी

प्रकाशक—भारतीयविद्याप्रकाशन, वाराणसी

द्वितीयखण्ड:

(क) पाठ्यपुस्तक—

नवभारती, भाग २ उत्तरप्रदेशराजकीयप्रकाशन। ४०

(ख) रेल की सीटी, ले०—श्रीप्रसाद............ २०

(ग) व्याकरण १५

क्रियाभेद और क्रियाविशेषण, अव्यय, कारक और विभक्ति, लिङ्ग, वचन तथा क्रियापद।

सहायकपुस्तक—

व्याकरणज्योत्स्ना, भाग २ ले०—श्री करुणापति त्रिपाठी।

(ग) निबन्ध (वर्णनात्मक) २५

सहायकपुस्तक—

निबन्धसुधा, ले०—श्री कपिलदेव त्रिपाठी

भारतीयविद्याप्रकाशन, वाराणसी

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी

तृतीय खण्डः पंचम प्रश्नपत्रम्-अंक-१००

प्रष्टव्यः—पाठ्यग्रन्थों से गद्यांश एवं पद्यांश की व्याख्या तथा पाठ सारांश पूछे जायेगें।

(क) पाठ्यपुस्तक—नवभारती भाग-१-३ (राजकीयप्रकाशन) ४०

(ख) द्रुतपाठ—पिकनिक और अन्य कहानियाँ २०
प्र०—साहित्यभवन, इलाहाबाद

अथवा

रेल की सीटी, ले०—श्री प्रसाद, प्र०—लोकभारती, इलाहाबाद

(ग) व्याकरण—व्याकरण का महत्त्व वर्णभेद लिपि, शब्दभेद, संज्ञा, सर्वनाम, विशेष लिंग वचन तथा पुरुष। १५

पाठ्यग्रन्थ—व्याकरण, ज्योत्स्ना, भाग १,
ले०—पं० करुणापति त्रिपाठी, हिन्दीप्रचारकपुस्तकालय, वाराणसी।

निबन्ध

(घ) सहायक पुस्तक—निबन्ध सुधा, ले०—कपिलदेव त्रिपाठी २५

अनिवार्यविषयः सामाजिकशास्त्रम्

(तृतीय खण्ड में निर्धारित विषयों एवं पुस्तकों से प्रश्न पूछे जायेगे)

६—षष्ठं प्रश्नपत्रम्(इतिहास,भूगोल और नागरिकशास्त्र)पूर्णाङ्काः१००

प्रथमखण्डः

(क) इतिहास ३४

१—नामकरण, विस्तार, भारतीयसंस्कृति की विविधता और मौलिक एकता।

२—भारतीय इतिहास के प्रमुख उपकरण, साहित्य और पुरातत्त्व।
३—भारत का पाषाणयुग, धातुयुग।
४—सिन्धुघाटी की सभ्यता।
५—आर्यों का मूल, वैदिक साहित्य और संस्कृति।
६—जनपदों का युग और संस्कृति।
७—धार्मिक सुधारों का युग–महावीर का जीवन चरित्र और उपदेश, बुद्ध का जीवन चरित्र और उपदेश।
८—बुद्धकालीन समाज और संस्कृति।
९—मगध साम्राज्य का उदय और विकास।
१०—विदेशी आक्रमण—ईरानी और यूनानी-सिकन्दर का चरित्र और भारत विजय।
११—मगध साम्राज्य का उत्कर्ष—मौर्यवंश—चन्द्रगुप्त मौर्य का चरित्र और शासन-प्रवन्ध, विन्दुसार, अशोक का चरित्र और अन्य विवरण।
१२—मौर्योत्तर भारत–मौर्यकालीन संस्कृति, मौर्य साम्राज्य का पतन नये राज्यों का उदय, शुङ्गवंश, कण्ववंश, आन्ध्र, सातवाहन, खारवेल। विदेशियों के आक्रमण और भारत में उनके राज्य का उदय, शक, पह्लव, मृषिक, तुषार (कुषाण), कनिष्क का चरित्र और कार्य।
१३—गुप्तयुग–गुप्तों का वंशपरिचय, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त, परवर्ती गुप्त, गुप्तशासन काल-प्रबन्ध, गुप्तकालीन समाज और संस्कृति।
१४—गुप्तोत्तर भारत–हूण–आक्रमण, पुष्यभूति वंश का संक्षिप्त परिचय हर्ष का चरित्र और कार्य तथा उस समय का समाज और संस्कृति।

१५—हर्षोत्तर भारत—विकेन्द्रीकरण, प्रान्तीय राज्यों का संक्षिप्त परिचय, पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूट, संघर्ष, दक्षिणापथ के राज्यों का संक्षिप्त-परिचय, पूर्व-मध्यकालीन समाज और संस्कृति।

सहायक पुस्तकें—

१—भारतीय इतिहास की रूपरेखा--प्रथमखण्ड, ले०—डा० वलराम श्रीवास्तव

२—हमारा इतिहास, भाग १, रामचरण विद्यार्थी,
प्र०—शंकर प्रकाशन, अलीगढ़

(ख) भूगोल ३३

(१) भौतिक पृथ्वी का आकार, गतियाँ, ऋतु-परिवर्तन, दिन-रात मानचित्र का सामान्य ज्ञान।

(२) स्थानीय भूगोल—वाजार व मेले, गाँवों कस्बों तथा नगरों का सम्बन्ध, विशेष फसलें एवं उद्योग।

(३) भारतवर्ष—स्थितिसीमा, विस्तार, प्राकृतिक, बनावट, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, उद्योग, यातायात, व्यापार, पञ्चवर्षीय योजनायें, जनसंख्या एवं प्रमुख नगर।

सहायक पुस्तकें—

१—प्रारम्भिक भूगोल, ले०—कु० सुमन वर्मा

२—देशविदेश भाग १, ले०—गुलाबचन्द्र कक्कड़, प्र०—नेशनल प्रेस, इलाहाबाद।

(ग) नागरिकशास्त्र— ३३

१—नगर तथा जिला की शासन-व्यवस्था का अध्ययन।

२—नगरपालिका एवं जिला परिषद्, संगठन तथा कार्य ।
३—ग्रामीण समस्याएँ तथा उनका समाधान ।
४—ग्रामसभा तथा ग्रामपञ्चायत संघटन एवं कार्य ।
५—स्थानीय एवं राष्ट्रीय पर्व

सहायक पुस्तकें—

१—संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान, ले०—श्री जगदीश सहाय विसारिया ।
२—हमारा इतिहास, भाग १, ले०—रामचरण विद्यार्थी प्र०—शंकर प्रकाशन, अलीगढ़ ।

द्वितीयखण्डः

(क) इतिहास   ३४

१—भारत में इस्लामधर्म का प्रवेश—अरब आक्रमण ।
२—भारत पर तुर्कों के आक्रमण—सुबुक्तगीन, महमूद और मुहम्मदगोरी ।
३—भारत में तुर्कों का शासन-इल्तुतमिश, रजिया, बलबन ।
४—खिलजी तुर्क-जलालुद्दीन-अलाउद्दीन का चरित्र और शासन-प्रबन्ध ।
५—तुगलकवंश—गयासुद्दीन, मुहम्मद फिरोज ।
६—तुर्कों का पतन, तैमूर का आक्रमण, सैयद और लोदीवंश का संक्षिप्त परिचय ।
७—बाबर का चरित्र और आक्रमण मुगलसाम्राज्य की स्थापना ।
८—हुमायूँ और शेरशाह ।
९—अकबर का चरित्र और कार्य ।
१०—जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के काल में मुगल साम्राज्य की राजनीतिक दशा ।

११—शिवाजी का चरित्र और कार्य, मराठा साम्राज्य की स्थापना।

१२—मुगल साम्राज्य का पतन।

१३—चौदहवीं से सोलहवीं शती के बीच के धार्मिक सुधारक और सन्त।

१४—मुगलकालीन समाज और संस्कृति।

सहायक पुस्तकें—

१—भारतीय इतिहास की रूपरेखा—द्वितीय खण्ड।
लें०—डा बलराम श्रीवास्तव

२—हमारा इतिहास, भाग २, लें०—रामचन्द्र विद्यार्थी, प्र०—शंकर प्रकाशन, अलीगढ़।

(ख) भूगोल : ३३

(१) भौतिक-अक्षांश एवं देशान्तर रेखा, ग्रहण, धरातल के प्रकार,जलवायु और मौसम।

(२) एशिया–स्थिति, सीमा, विस्तार, प्राकृतिक बनावट,जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, मुख्य उद्योग, यातायात, व्यापार एवं बन्दरगाह, नगर एवं जनसंख्या।

(३) खोज की यात्राएँ, पृथ्वी के विभिन्न भागों के खोज की कुछ रोचक कहानियाँ—कोलम्बस, वास्कोडिगामा तथा उसकी सामुद्रिक यात्राएँ।

सहायक पुस्तकें—

१—देशविदेश भाग-२, लें०—गुलाबचन्द्र कक्कड़, प्र०—नेशनल प्रेस, इलाहाबाद।

२—प्रारम्भिक भूगोल, लें०—कुमारी सुमन वर्मा।

(ग) नागरिकशास्त्र— ३३

(१) उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में भारतीय संघ के राज्यों का अध्ययन, राज्यपाल, मन्त्रिमण्डल, व्यवस्थापिका सभा निर्वाचन तथा मताधिकार ।

(२) न्यायव्यवस्था, सर्वोच्च न्यायालय, हाईकोर्ट, जिला न्यायालय ।

(३) भारतीय जीवन की कुछ समस्याएँ—निरक्षरता, निर्धनता, अस्पृश्यता, कृषि-प्रणाली, सामाजिक प्रथाएँ ।

सहायक पुस्तकें—

१—संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान, द्वितीय खण्ड, ले०—श्री जगदीशसहाय बिसारिया ।

२—हमारा इतिहास भाग–२, ले०—रामचरण विद्यार्थी, शंकर प्रकाशन अलीगढ़ ।

तृतीयखण्डः

(क) इतिहास— ३४

१—भारत में यूरोपीय व्यापारी, पुर्तगाली, डच, फ्रान्सीसी और अंग्रेज इनका मुगल शासन से सम्बन्ध ।

२—यूरोपीय व्यापारियों की प्रतिद्वन्दिता और उसका देशी राज्यों पर प्रभाव ।

३—भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना, प्लासी का युद्ध, ईस्टइंडिया कम्पनी और बंगाल के नवाब ।

४—ईस्टइंडिया कम्पनी का मराठा और मैसूर राज्यों से संघर्ष, मराठा साम्राज्य का पतन, अन्य देशी राज्यों का कम्पनी शासन द्वारा दमन ।

५—कम्पनी साम्राज्य का विस्तार, अवध और नेपाल का पतन, दक्षिण के देशी रियासतों का पतन।

६—कम्पनी और सिक्ख, अफगानिस्तान और सिन्ध से सम्बन्ध।

७—आन्तरिक सुधार—प्राशासनिक और सामाजिक।

८—१८५७ का प्रथम स्वातन्त्र्य समर, कारण और परिणाम।

९—कम्पनी शासन का अन्त, भारत में ब्रिटिश शासन का प्रारम्भ, भारत का संवैधानिक विकास और ब्रिटिश शासन की आन्तरिक व्यवस्था।

१०-स्वतन्त्रता आन्दोलन और महात्मा गाँधी।

११-आधुनिक युग के कुछ सामाजिक, धार्मिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी आन्दोलन का संक्षिप्त परिचय।

१२-स्वतन्त्रता की उपलब्धि और स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद।

सहायक पुस्तकें—

१—भारतीय इतिहास की रूपरेखा, तृतीय खण्ड, ले०—डा० बलराम श्रीवास्तव।

२—हमारा इतिहास, भाग ३, ले०—रामचरण विद्यार्थी, प्र०—शंकर प्रकाशन, अलीगढ़।

(ख) भूगोल ३३

(१) भौतिक-भूकम्प, ज्वालामुखी, नदी, वायु एवं हिम के कार्य, चट्टानें, सामुद्रिक धारायें, ज्वार-भाटा।

(२) विश्व-महाद्वीप और महासागर, महाद्वीपों का अध्ययन, स्थिति, सीमा, विस्तार, प्राकृतिक बनावट, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, मुख्य उद्योग, यातायात, व्यापार

एवं बन्दरगाह, मुख्य नगर, जनसंख्या, विश्व के बृहत् प्राकृतिक खण्ड ।

(३) प्रायोगिक-भूगोल मापक का अध्ययन, वर्षा, वायु दाब, ताप मापक यन्त्र, समताप तथा समभार रेखाएँ भारत, एशिया तथा विश्व के मानचित्र पर पहाड़ों, नदियों मुख्य नगरों, बन्दरगाहों तथा प्रमुख उद्योग केन्द्रों का प्रदर्शन ।

सहायक पुस्तकें—

१—प्रारम्भिक भूगोल, ले०—कुमारी सुमन वर्मा

२—देशविदेश, भाग ३, ले०—गुलाबचन्द्र कक्कड़ । नेशनल प्रेस, इलाहाबाद ।

(ग) नागरिकशास्त्र ३३

१—भारतीय संविधानान्तर्गत स्वीकृत मौलिक अधिकारों का संक्षिप्त अध्ययन ।

२—भारतीय गणराज्य का संक्षिप्त परिचय ।

३—केन्द्रीय शासन-व्यवस्था, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, मन्त्रिमण्डल, विधान-सभा ।

४—अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति-संघटन, संयुक्त राष्ट्र-संघ तथा उनकी शाखाएँ ।

५—महात्मा गांधी और उनका आध्यात्मिक प्रभाव ।

सहायक पुस्तकें—

१—संक्षिप्त सामाजिक ज्ञान, तृतीय खंड, ले०—श्री जगदीशसहाय विसारिया ।

२—हमारा इतिहास भाग-३, ले०—रामचरण विद्यार्थी, शंकर प्रकाशन, अलीगढ़ ।

अनिवार्यविषयः गणितम्

(तृतीयखण्डस्य नियतविषयेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

७—सप्तमं प्रश्नपत्रम् पूर्णाङ्काः १००

प्रथमखण्डः

स्थानमानम् व्यवहारगणितम् ।

सहायकग्रन्थः—जूनियर-हाईस्कूले निर्धारितः ।

द्वितीयखण्डः

साधारणभिन्नम्, दशमलवभिन्नम्, सरलीकरणस्य सुगमाः प्रश्नाः ।
सहायकग्रन्थः—जूनियर-हाईस्कूले निर्धारितः ।

तृतीयखण्डः

(क) त्रैराशिकस्य साधारणज्ञानम् ।

सहायकपुस्तकम्—अङ्कगणित, भाग ३ (राजकीय प्रकाशन, उ०प्र०)

वैकल्पिको विषयः

(वेद-ज्यौतिष—विज्ञान-गणित-संगीत-गृहविज्ञानेषु एकः विषयोऽवश्यं ग्राह्यः)

(खण्डत्रयस्य नियत ग्रन्थेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

८—अष्टमं प्रश्नपत्रम् वेदः पूर्णाङ्काः १००

प्रथमखण्डः

ऋग्वेदीयरुद्रस्य (आश्वलायनरुद्रपद्धत्यनुसारीणि) १-३ सूक्तानि ।

२

अथवा

शुक्लयजुर्वेदरुद्राष्टाध्याय्याः १-३ अध्यायाः ।

अथवा

कृष्णयजुर्वेदरुद्राध्यायस्य प्रथमोऽनुवाकः ।

अथवा

सामवेदे पवित्रवर्गः ।

अथवा

अथर्ववेदीयरुद्रस्य १-३ सूक्तानि ।

सहायक पुस्तकम्—

पञ्चशाखीयरुद्रसंग्रहः ।

द्वितीयः खण्डः

वेदः

ऋग्वेदीयरुद्रस्य (आश्वलायनरुद्रपद्धत्यनुसारीणि) ४-१२ सूक्तानि ।

अथवा

शुक्लयजुर्वेदरुद्राष्टाध्याय्याः ४-५ अध्यायौ ।

अथवा

कृष्णयजुर्वेदरुद्राध्यायस्य २-४ अनुवाकाः ।

अथवा

सामवेदे—अरीष्टवर्गः वैनायकी संहिता च ।

अथवा

अथर्ववेदीयरुद्रस्य ४-१२ सूक्तानि ।

सहायकपुस्तकम्

पञ्चशाखीयरुद्रसंग्रहः

तृतीयखण्डः

वेदः १००

ऋग्वेदीयरुद्रस्य (आश्वलायनरुद्रपद्धत्यनुसारी) १३ सूक्तादवशिष्टो भागः।

अथवा

शुक्लयजुर्वेदरुद्राष्टाध्याय्याः ६-८ अध्यायाः।

अथवा

कृष्णयजुर्वेदरुद्राध्यायस्य ५-११ अनुवाकाः।

अथवा

सामवेदे—स्कन्द-विष्णु-रुद्रसंहिताः।

अथवा

अथर्ववेदीयरुद्रस्य १-३ सूक्तादवशिष्टो भागः।

सहायकग्रन्थः—

पञ्चशाखीयरुद्रसंग्रहः।

अथवा

ज्योतिषम्

(खण्डत्रस्य नियतग्रन्थेयु प्रश्ना भविष्यन्ति)

प्रथमखण्डः १००

बृहदवकहडाचक्रम् (सं०—श्री अवधविहारीत्रिपाठी)

अथवा

ज्योतिषप्रबोधः श्रीगणेशदत्तपाठकसंगृहीतः।

द्वितीयखण्डः १००

बृहदवकहडाचक्रम् सं०—श्री अवधविहारी त्रिपाठी

अथवा

ज्योतिषप्रवोधः—श्रीगणेशदत्तपाठकसंगृहीतः

तृतीयखण्डः १००

बृहदवकहडाचक्रम् सं०—श्री अवधविहारी त्रिपाठी

अथवा

ज्योतिषप्रवोधः—श्रीगणेशदत्तपाठकसंगृहीतः

अथवा

विज्ञानम्

(तृतीयखण्डस्य पाठ्यग्रन्थेषु प्रश्ना भविश्यन्ति)

प्रथमखण्डः

निम्नलिखित विषयों का सामान्य ज्ञान—

द्रव्य और द्रव्य के साधारणगुण, द्रव्य की अवस्थायें (भौतिक तथा रासायनिक), लम्बाई की इकाई, लम्बाई नापना।

तौल, वस्तु की तौल निकालना, साधारण तुला का ज्ञान।

लीवर, लीवर के प्रकार, घिरनी, दैनिक जीवन में इनके कुछ उपयोग, वायुमण्डल की वातें (भौतिक तथा रासायनिक गुण), वायुमण्डल का दाव, शुद्ध तथा अशुद्ध वायु, वायु का आवागमन तथा उपयोगिता।

उष्मा–उष्मा के स्रोत तथा उष्मा का संचरण।

प्रकाश, प्रकाश का स्रोत, प्रकाश का सरल रेखा में गमन, सूची क्षेत्र कैमरा चुम्बक के गुण, चुम्बकीय पदार्थ।

घर्षण विद्युत् उसके गुण, (चुम्बक की भाँति आकर्षण-विकर्षण आदि और प्रकाश), आकाश की विद्युत, फ्रेंकलिन का प्रयोग ।

जल-प्रकृति का सबसे बड़ा घोलक, शुद्ध तथा अशुद्ध जल, जल साफ करने की प्रक्रिया, पदार्थों का साधारण गुण जाँच करना ।

लौह तथा गन्धक के उदाहरण ।

विभिन्न श्रेणी के जीवों (प्राणी तथा बनस्पति) के विषय में सामान्यज्ञान । मेरुदण्डधारी जीव —मछली का साधारण ज्ञान ।

कुछ हानिकारक प्राणी, किशानों के मित्रऔर शत्रु विना रीढ़ वाले प्राणी—केचुआ, तितली, विच्छी आदि ।

मनुष्य के शरीर के विषय में सामान्य ज्ञान, शरीर के भिन्न-भिन्न अंग, प्रत्यंग तथा उनके विषय में साधारण ज्ञान ।

ध्रुवतारा एवं सप्तर्षि मण्डल ।

सहायक पुस्तकें—

१—जनरल साइंस रीडर प्रथम भाग । ले०—डा० सत्यप्रकाश ।

२—प्रारम्भिक विज्ञान और प्राकृतिक निरीक्षण। ले०—श्री मनोहरलाल भार्गव तथा गङ्गाशरण भार्गव ।

द्वितीयखण्डः—

(सामान्य ज्ञान)

गति के नियम, (न्यूटन का सिद्धान्त) ।

वल की परिभाषा, वेग, संवेग (मोमेण्टम्), गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त, दैनिक जीवन के कुछ साधारण यन्त्र ।

कार्बन डाई आक्साइड एवं आक्सीजन का अध्ययन, चूने के पानी से पहचान। मोमबत्ती के जलने पर आक्सीजन का सहयोग।

कारबन, सरसों का तेल, शक्कर तथा वस्तु के जलने पर कारबन निकलना।

संगमरमर या खड़िया द्वारा गैस तैयार करना। आग बुझाने की मशीन, सोडावाटर, कारवन डाई आक्साइड से पत्तियों द्वारा भोजन की तैयारी, कारवन डाई आक्साइड एवं आक्सीजन का चक्र।

प्रयोगशाला में आक्सीजन का उत्पादन, उसके गुणों का अध्ययन तथा लाभ।

घोल, घोलक, घोलक के रूप में पानी, घुलने में द्रव्य नष्ट नहीं होता घुलने पर ताप का प्रभाव, संतृप्त तथा असंतृप्त घोल, पानी में घुलनेवाली वस्तुएँ, अन्य घोलक, द्रव्य एवं गैसों का घुलना, घुलनशीलता पर ताप का प्रभाव, रवे बनाना, रवों पर ताप का प्रभाव, बिना घोल के रवे वनाना, तूतिया या फिटकिरी का बड़ा रवा बनाना।

रवे का पानी, रवे पर हवा का प्रभाव, सूती रेशमी तथा ऊनी कपड़ों पर से दाग और धब्बे दूर करना। चिकनाई मशीन के धब्बे, खून के धब्बे, नीली स्याही के धब्बे, लाल स्याही के धब्बे, आयोडीन के धब्बे, वार्निस के धव्वे, जङ्ग के धब्बे, तारकोल के धब्बे, फल और घास के धब्बे।

सूती कपड़ों की धुलाई।

हमारे शरीर की रचना, मल विसर्जन अङ्ग, गुर्दे तथा फेफड़ों से विसर्जन, त्वचा से विसर्जन, बृहत् अन्त्र मलाशय द्वारा विसर्जन, यकृत का कार्यं।

जूं और चीलर तथा उससे रक्षा।

पौधों की जातियाँ, पौधों से मनुष्य को लाभ।

पत्तियाँ उनकी उपयोगिता, पत्तियों के विभिन्न अङ्ग, भूमि को उर्वरा शक्तियों का योग।

राशियों और तारों का अध्ययन।

सहायक पुस्तकें—

१—जनरल साइंस रीडर द्वितीय भाग। ले० डॉ० सत्यप्रकाश।

२—प्रारम्भिक विज्ञान और प्राकृतिकनिरीक्षण। ले०—श्री मनोहरलाल भार्गव तथा श्रीगङ्गाशरण भार्गव।

तृतीयखण्ड: १००

द्रव्य, मात्रा और भार, कमानीदार तुला, भौतिक तुला, लीवर के सिद्धान्त, आयतन, सुडौल तथा वेडौल वस्तुएँ।

घनत्व तथा आपेक्षित्क घनत्व, किसी ठोस वस्तु का घनत्व निकालना द्रव का भार, घनत्व, आपेक्षित घनत्व, आर्कमिडिस का सिद्धान्त, उत्प्लावन बल, आर्कमिडिस के सिद्धान्त से किसी वस्तु का आपेक्षिक घनत्व निकालना।

वैरोमीटर, (वायु चाप मापक) साधारण वैरोमीटर वनाना।

थर्मामीटर, थर्मामीटर वनाना, तापक्रम के स्केल—फार्नहाइट, सेन्टीग्रेड, रयूमर, उष्मा के प्रभाव।

प्रकाश परावर्तन के नियम, बहुदर्शक यन्त्र, समतल तथा नतोदर दर्पण।

धारा विद्युत्, प्रारम्भिक सेल विद्युत धारा के चुम्वकीय प्रभाव।

द्रव के दाब के नियम, तैरने की क्रिया, नाव, निकल्सन हाइड्रोमीटर, लेक्टोमीटर।

उष्मा की इकाई, कैलोरी उष्मा का प्रभाव तथा परिवर्तन, उष्मा की परिभाषा विशिष्ट, गुप्त ताप परिभाषा।

प्रकाश, वर्तनाङ्क की परिभाषा, वर्तनाङ्क निकालना, पूर्णपरावर्तन मरीचिका लैंस के भेद, लैंस का उपयोग।

चुम्वक की बल रेखायें, चुम्वक के अन्य उपयोग, विद्युत् धारा से चुम्बक वनाना, विद्युत्धारा की रासायनिक क्रिया, विद्युत्धारा का तापीय प्रभाव, विद्युत् दर्शक, विद्युत् घंटी, बिजली का बल्व।

ध्वनि, ध्वनि का उत्पादन और संचरण, ध्वनि का रूप

साधारण अम्ल एवं क्षार, काष्टिक सोडा, काष्टिक पोटाश, अमोनिया चूने का पानी, हाइड्रोक्लोरिक अम्ल, सलफ्यूरिक अम्ल, नाइट्रिक अम्ल मृदु तथा कठोर जल, रासायनिक गुण, स्थायी व अस्थायी कठोरता तथा उनका निराकरण, सामान्य लवण, सोडियम क्लोराइड, नाइट्रेट आदि। धातुएं, धातुओं के साधारण गुण तथा उनके उपयोग, मिश्रधातुओं के साथ, स्वर्ण, ताम्र, रजत, यशद या जिंक, शीशा, टीन, लोहा एवं इस्पात तथा पीतल के विषय में साधारण व्यावहारिकज्ञान।

लाभप्रद एवं हानिप्रद जीवाणु और उनसे लाभ, हानिप्रद जीवाणु एवं उनसे बचने के उपाय। घर के कीड़े-मकोड़े, मक्खी, मच्छड़, खटमल, पिस्सू, तेलचट्टा तथा उनसे वचने के उपाय।

मानवशरीर, स्नायुतन्त्र एवं प्रत्येक का कार्य।

परागण स्वयं तथा पर परागण के विभिन्न उपाय तथा लाभ, फूल के विषय में साधारण ज्ञान, विभिन्न प्रकार के फल तथा उनका वर्गीकरण।

सौरमण्डल--सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, मङ्गल आदि सप्तर्षिमण्डल।

विद्युत के विषय में साधारण ज्ञान।

सहायक पुस्तकें--

१--जनरल साइन्स रीडर तृतीय भाग। ले०—डॉ० सत्यप्रकाश।

२--प्रारम्भिक विज्ञान और प्राकृतिक निरीक्षण, भाग १-२
ले० श्री मनोहरलाल भार्गव तथा श्रीगङ्गाशरण भार्गव।

अथवा

गणितम्

(तृतीय खण्डस्य पाठचग्रन्थेषु प्रश्ना भविष्यन्ति)

प्रथमखण्ड:

अंकगणित–दशमलवभिन्न–योगादि नियमचतुष्ठय,

दशमलव भिन्नों का साधारण तथा भिन्नों को दशमलव भिन्न मं रूपान्तरित करना।

बीजगणित बीजगणित के संकेत। स्थानापत्ति। बीजगणितीय अंकगणितकोष्ठसरलीकरण।

१—रेखागणित–कोण-उनके भेद नापना तथा उनका निर्माण। पटरी गुनिया तथा परकार का प्रयोग। नाप के द्वारा निम्नलिखित ज्ञान या प्रकट करना।

(१) आसन्न कोणों तथा एक बिन्दु पर बने कोणों के गुण।

(२) सम्मुख कोण तुल्य होते हैं।

(३) त्रिभुज के तीनों कोणों का योग दो समकोणों के तुल्य होता है।

(४) त्रिभुज की भुजाओं तथा भुजसम्मुख कोणों का परस्पर सम्बन्ध। समानान्तर रेखाओं का निर्माण रचना द्वारा त्रिभुजों की समरूपता का ज्ञान-पैमाना (Scale drawing) द्वारा रचना। रचना द्वारा त्रिभुजों की अनुरूपता की निम्नलिखित

स्थितियों का प्रदर्शन—

(अ) जब तीनों भुजायें तुल्य हों।

(ब) दो भुजायें तथा अन्तर्गत कोण तुल्य हों।

(स) एक भुजा तथा दो कोण तुल्य हों।

सहायक पुस्तकें—

१—अंकगणित भाग १ जूनियर हाई स्कूल में निर्धारित।

२—रेखागणित भाग १ ,, ,, ,, ,,

द्वितीयखण्ड:

अंकगणित—वर्गों तथा आयतों के क्षेत्रफल। सूत्र द्वारा वृत्त की परिधि तथा क्षेत्रफल। लाभ-हानि के सरल प्रश्नपत्र। आयताकार घनों के आयतन तथा घनमूल। सरल क्षेत्रपंजी।

बीजगणित—दो अज्ञातवर्गों के युगपत् समीकरण तथा उन पर आधारित सरलप्रश्न। सरल आलेख—(Graphs)।

रेखागणित—निम्निलिखित प्रमेयों की उपपत्तियाँ (उन पर आधारित सरल प्रश्न रहेंगे)—

(क) त्रिभुज के तीनों अन्तःकोण का योग दो समकोण के तुल्य

होता है, तथा वहिष्कोण किसी भी एक अन्तःकोण से वड़ा होता है।

(ख) समद्विवाहु त्रिभुज के आधार के कोण परस्पर तुल्य होते हैं, इसका विलोम :

(ग) त्रिभुज में वृहद्-भुजसम्मुखकोण लघुभुजसम्मुखकोण की अपेक्षा होता है, इसका विलोम।

(घ) समानान्तर चतुर्भुज की सम्मुख भुजायें तथा सम्मुख कोण तुल्य होते हैं। समानान्तर चतुर्भुज का विकर्ण उसे दो बराबर भागों में विभक्त करता है और समानान्तर चतुर्भुज के विकर्ण एक दूसरे को समद्विभाजित करते हैं इसका विलोम।

(ङ) दो सम तथा समानान्तर रेखाओं के छोरों को एक ही दिशा में मिलाने वाली सरल रेखायें परस्पर सम और समानान्तर होती हैं।

सहायक पुस्तकें—

१—अंकगणित भाग २ (जूनियर हाई स्कूल में निर्धारित)

२—रेखागणित भाग २ " " "

तृतीयखण्डः १००

अंकगणित—एकिक नियम के कठिन प्रश्न। सरल व्यवहार-गणित। साधारण व्याज। महाजनी गुर (सूत्र)। निष्पत्ति तथा अनुपात।

वीजगणित—सरल योगादि नियमचतुष्टय। एक अज्ञातवर्ण के सरल समीकरण तथा उन पर आधारित सरल प्रश्न।

रेखागणित—रचना द्वारा ऊँचाइयों तथा दूरियों (Hieght & distance) का ज्ञान, पटरी तथा परकार की सहायता से निम्नलिखित रचना करना—

(क) सरल रेखा का समद्विभाजन।

(ख) कोण का समद्विभाजन।

(ग) सरलरेखास्थित अथवा तद्बहिर्गत विन्दु से सरलरेखा पर लम्ब डालना।

(घ) निर्दिष्ट कोण के तुल्य कोण निर्माण करना।

(ङ) ६०; ४५; तथा ३०^0 के कोणों का निर्माण।

(च) किसी निर्दिष्ट विन्दु से किसी निर्दिष्ट रेखा के समानान्तर रेखा खींचना।

(छ) सरलरेखा को वहुत से तुल्य भागों में बाँटना।

(ज) त्रिभुजों की रचना।

(झ) किसी दृश्य विन्दु की—जिस पर न तो पहुँचा जा सकता है, न तो जिसके सम्मुख धरातल पर लम्ब डाला जा सकता है—ऊँचाई ज्ञात करना।

(ञ) दो सरल धरातलस्थ दृश्य बिन्दुओं (जिन तक पहुँचा नहीं जा सकता) की दूरी ज्ञात करना।

(ट) आयत समानान्तर चतुर्भुज तथा त्रिभुजों के क्षेत्रफल।

(ठ) शुल्व प्रमेय (Phithagoras Theorum) तथा इसका विलोम।

सहायक पुस्तक—

१. अंकगगित भाग ३ (जूनियर हाई स्कूल में निर्धारित)
२. रेखागणित भाग ३ ,, ,, ,,

अथवा

संगीतम्

(संगीतगृहविज्ञानविषयोः बालिकानामेव प्रवेशाधिकारः)
(कण्ठ सङ्गीत)

प्रथमखण्ड:

प्रायोगिक

१—स्वरज्ञान-सात शुद्ध स्वरों का पूर्ण ज्ञान उन्हें सुनकर पहिचानना। दस सरल अलंकारों का सरगम और आकार में अभ्यास।

२—रागज्ञान–राग विलावल, यमन और भैरवी में एक-एक छोटा ख्याल जो त्रिताल में हो तथा एक लक्षणगीत एक सरगम भी जानना आवश्यक है।

३—तालज्ञान–निम्नलिखित तालों की मात्रा, बोल विभाग, खाली, ताली और सम दिखलाते हुए ताल लय में बोलना।

ताल, त्रिताल, झपताल तथा दादरा।

सैद्धान्तिक (निम्नलिखित प्रश्नपत्र) ६०

१—निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या करना—
संगीत, संगीत की मुख्य पद्धतियाँ स्वर आरोह, अवरोह, सप्तक, (मन्द मध्य, तार) मात्रा, सम।

२—इस वर्ष के पाठयक्रम में आये रागों का साधारण परिचय।

३—इस वर्ष के पाठ्यक्रम में आये तालों कोताललिपि में लिखना।

४—कुछ सरल अलंकारों को लिखना।

द्वितीयखण्ड:

प्रायोगिक　　४०

१. स्वर-ज्ञान-सात शुद्धतथा पाँच विकृत स्वरों का ज्ञान । कुछ अलंकारों का सरगम तथा आकार में अभ्यास ।

२. रागज्ञान-समाज यमक और भैरवी रागों का एक-एक छोटा ख्याल साधारण अलाप तथा कुछ तानों सहित ।
तथा राग काफी और देश में एक-एक सरगम अथवा लक्षणगीत ।

३. तालज्ञान-निम्नलिखित तालों की मात्रा, वोल, सम,खाली दिखलाते हुए ठाह लय में वोलना ।
ताल, त्रिताल,झपताल, एकताल और कहरवा ।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र)

१. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान तथा उनकी व्याख्या संगीत, अलंकार, ध्वनि, स्वर (शुद्ध तथा विकृत), लय, नाद (आहत तथा अनाहत), सम, खाली आवर्तन ।

२ इस वर्ष के पाठचक्रम में आये हुए रागों का साधारण सैद्धांतिक परिचय ।

३. इस वषं के पाठचक्रम में आये तालों कोताललिपि में लिखना ।　　४०

४. संगीतलिपि (नोटेशन) का साधारणज्ञान ।

तृतीयखण्ड:

प्रायोगिक (कण्ठसंगीत)

१. स्वरज्ञान—सातशुद्धतथा पाँच विकृत स्वरों का ज्ञान तथा उन्हें सुनकर पहिचानना ।

अलंकारों को सरगम तथा आकार में ठाह और द्विगुण लयों में कहना।

२. राग ज्ञान—राग भैरवी तथा विहाग में एल-एक छोटा ख्याल, साधारण आलाप तथा सरल तानों के साथ।
राग वागेश्वरी तथा आसावरी में एक-एक सरगम अथवा लक्षण गीत। उपर्युक्त किन्हीं राग में एक भजन जानना आवश्यक है।

३. ताल ज्ञान—निम्नलिखित तालों को हाथ से ताली देकर ठाह और द्विगुण लयों में बोलना—
ताल—त्रिताल, झपताल, दादरा तथा कहरवा।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र)

१. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या—
वर्ण (स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी), संगीत, स्वर, श्रुति, आरोह, अवरोही, वादी, संवादी, मात्रा, विभाग, सम, आवर्तन।

२. पाठचक्रम में आये रागों का सैद्धान्तिक परिचय।

३. पाठचक्रम में आये तालों को ठाह तथा द्विगुण लयों में ताल-लिपि में लिखना।

४. निम्नलिखित संगीतज्ञों का संक्षिप्त परिचय—
श्रीभातखण्डे, श्रीविष्णुदिगम्बर।

सहायक पुस्तकें—

१. संगीतशास्त्र, भाग १। ले०—महेशनारायण सक्सेना।

२. संगीतशास्त्रदर्पण, भाग १। ले०—शान्तिगोवर्धन।

३. हिन्दुस्तानीसंगीतपद्धति । ले०—विष्णुनारायण भातखण्डे ।

अथवा

वाद्य-संगीत [सितार]

प्रथमखण्ड:

प्रायोगिक—

१—वाद्य की वैठक का ज्ञान ।

२—दस सरल अलंकारों को ठाह में बजाने का अभ्यास ।

३—कुछ सरल अलंकारों को दुगुन में वजाने का अभ्यास ।

४—दा दिर दा रा का साधारण ज्ञान ।

५—राग यमन में चार सरल अलंकारों का बजाने का अभ्यास ।

६—त्रिताल तथा दादरा ताल को हाथ से ताली देते हुए ठाह लय में बोलने का अभ्यास ।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) ६०

निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा—

(१) संगीत-अलंकार, आरोह, अवरोह, तान ।

(२) अलंकार एवं गतों को स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास ।

(३) पाठ्यक्रम के रागों का साधारण परिचय ।

द्वितीयखण्ड:

प्रायोगिक ४०

(१) दस कठिन अलंकारों को ठाह तथा दुगुन में बजाने का अभ्यास ।

(२) कुछ अलंकारों का दा दिर दा रा-दा दिर दिर दिर इस बोलों के आधार पर बजाने का अभ्यास ।

(३) राग यमन में सिर्फ रजाखानी गत, साधारण तान तोड़ों सहित ।

(४) तीन ताल-झपताल-इन तालों के बोलों को ताली देते हुए ठाह तथा दुगुन लय में बोलने का अभ्यास ।

(५) पिछले वर्ष के अलंकारों-तालों तथा रागों का अभ्यास आवश्यक है ।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) ६०

(पिछले वर्ष के समस्त पारिभाषिक शब्द तथा निम्नलिखित)

(१) स्वर-ध्वनि, वादी-संवादी-गत-मोड़ ।

(२) पाठचक्रम के रागों का साधारण परिचय ।

(३) गतों तथा अलंकारों को स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास ।

(४) पाठचक्रम के तालों को ठाह दुगुन में लिखने का अभ्यास ।

तृतीयखण्ड:

प्रायोगिक ४०

(गत वर्षों का समस्त पाठचक्रम सम्मिलित है तथा निम्नलिखित)

(१) राग यमन तथा राग खमाज में एक-एक रजाखानी गत, कुछ अच्छे तान तोड़ों सहित ।

(२) राग काफी की एक मध्यलय की गत तान तोड़े सहित ।

(३) एक ताल-चारताल-कहरवा-इन तालों के बोलों को हाथ से ताली देते हुए ठाह तथा दुगुन में बोलने का अभ्यास ।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र)　　६०

(पूर्व पाठ्यक्रम सम्मिलित है तथा निम्नलिखित)

(१) श्रुति-अलाप-झाला-राग-पकड़-आश्रय राग-थाट, वर्णस्वर वाज, गमक, घसीट, जाति, ठेका स्थायी ।

(२) पाठ्यक्रम के समस्त रागों का राग वर्णन ।

(३) लिखित स्वरसमूहों द्वारा राग पहचानने का अभ्यास ।

(४) गतों को स्वलिपि में लिखने का अभ्यास तथा तालों को ठाह दुगुन में लिखने का अभ्यास ।

(५) श्रीभातखण्डे तथा श्री पलुस्कर की संक्षिप्त जीवनी ।

सहायक ग्रन्थ—

कण्ठ-संगीत के समान ।

अथवा

वाद्य संगीत [तबला]

प्रथमखण्डः

प्रायोगिक　　४०

१—लयज्ञान-प्रत्येक मात्रा पर ताली देते हुए लय की स्थिरता दिखलाना ।

२—हाथ से निम्नलिखित वोलों को निकलना ।
धा, ना, तेटे, धी, तिरकिट, तूना, कत्ता ।

३—ताल ज्ञान-त्रिताल, झपताल, तथा दादरा को हाथ से ताली देकर ठाह लय में बोलना तथा तवला पर बजाना । ताल त्रिताल में एक सरल मुखड़ा तथा दो कायदा बजाना ।

सैद्धांतिक (लिखित प्रश्नपत्र) ६०

१—निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या करना—
ताल, मात्रा, कायदा, मुखड़ा, ठाह तथा सम।

२—अपने वाद्य का चित्र वनाकर उसके अङ्गों को बतलाना।

३—ताल, त्रिताल, झपताल तथा दादरा को ताललिपि में लिखना।

द्वितीयखण्डः

प्रायोगिक ४०

१—लय ज्ञान—प्रत्येक मात्रा पर ताली देकर अङ्गों की सहायता से ठाह और द्विगुण लयों को दिखलाना।

२—हाथ से निम्नलिखित वोलों को बजाना।
वागे, तागे, धीना, धे, क्रां धा, किरतक, गिदगिन, धूं,

३—ताल ज्ञान— त्रिताल, एक ताल तथा कहरवा को हाथ से ताली देकर ठाह लय में वोलना तथा तबला पर वजाना। ताल त्रिताल में मुखड़ा एक टुकड़ा चार कायदा वजाना।

सैद्धांतिक (लिखित प्रश्नपत्र) ६०

१—निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या—लय, ताल, ताली, विभाग खाली, ठेका, टुकड़ा।

२—तवला के अंङ्गों को चित्र द्वारा समझाना।

३—पाठ्यक्रम में आये तालों को ठाह लय में लिखना।

४—ताल, त्रिताल के मुखड़ा, टुकड़ा तथा कायदा को ताललिपि में लिखना।

तृतीयखण्डः

प्रायोगिक— ४०

(१) लयज्ञान—अङ्कों की सहायता से दुगुन तथा चौगुन लयों को दिखलाना। हाथ से ताली देकर लय की स्थिरता दिखलाना।

(२) बायें तथा दाहिने हाथ से वादन की विभिन्न विधियाँ तथा उनसे उत्पन्न शब्दों का ज्ञान।

(३) तालज्ञान—ताल त्रिताल, झपताल, एक ताल तथा दादरा को ठाह और द्विगुण लयों में बजाना। ताल-त्रिताल तथा ताल झपताल में सुन्दर मुखड़ा, टुकड़ा और कायदा आदि बजाना।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) ६०

(१) निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या करना—लय (विलम्बित-मध्य-द्रुत) ताल, मात्रा आवर्तन, विभाग ठेका ताली, खाली, सम, तिहाई, दुगुन।

(२) बायें तथा दाहिने हाथ से बजने वाले शब्दों का ज्ञान।

(३) तबले का संक्षिप्त इतिहास जानना।

(४) पाठ्यक्रम में आये तालों कोताललिपि में लिखना।

(५) पाठ्यक्रम में आये टुकड़ा, कायदा, तिहाई आदि को ताललिपि में लिखना।

सहायक पुस्तकें

कंठसंगीत के समान।

अथवा

गृहविज्ञानम्

(केवलं वालिकानां कृते)

प्रथमखण्ड:

सैद्धान्तिक ६०

व्यक्तिगत स्वास्थ्य-शरीर की स्वच्छता, मानसिक-स्वास्थ्य शिष्टाचार, परिवार तथा विद्यालय के लोगों के प्रति व्यवहार ।
घर- आदर्श गृह ।

भोजन-शरीर में कार्य का सूक्ष्म वर्णन ।

कपड़ों के विषय में—सफाई की आदतें तथा उन्हें उचित ढंग से रखने की विधि ।

प्रायोगिक ४०

(१) मिट्टी से घर का माडल बनाना !

(२) सिलाई-रूमाल वनाना ।

(३) दस्तकारी ।

द्वितीयखण्ड:

सैद्धान्तिक ६०

(१) स्वास्थ्यविज्ञान—पानी, वायु, दूध, भोजन ।
भोजन—उसकी देखभाल, चौका । उचित ढंग से भोजन परसने की व्यवस्था, भारतीय तथा विदेशी शैली से भोजन पकाने की विविध विधियाँ । भोजन को गन्दगी से बचाने का ढंग । वर्तनों की सफाई

(२) घर-घर की सफाई, देहात व शहर के मकान, कूड़ा कर्कट, मल-मूत्र, सफाई न रखने से हानियाँ ।

(३) कपड़ों की देख भाल—रेशमी तथा ऊनी कपड़ों की विशेष देख भाल, कपड़ों की धुलाई, ऊनी, सूती, रेशमी, नाइलोन, टेरिलीन, डक्रान ।

प्रायोगिक ४०

(१) धुलाई-कपड़ों की ।

(२) सफाई-घर की ।

(३) सिलाई-बखिया, काज बनाना, पैबन्द, रफू करना ।

तृतीयखण्ड:

सैद्धान्तिक— ६०

घर—सजावट, आय को दृष्टि में रखते हुए। देहात व शहर दोनों जगह के मकानों की सजावट।

कीड़े-मकोड़े—हानियाँ, नष्ट करने का ढंग ।

आय-व्यय—बजट ।

परिवार, समाज तथा विद्यालय में शिष्टाचार

प्रायोगिक— ४०

(१) सिलाई—डलिया, झोला ।

(२) कढ़ाई—तकिया, गिलाफ, मेजपोश, रूमाल काढ़ना । बच्चों के कपड़ों की कढ़ाई ।

(३) बिनाई—बच्चों के सेट, औरतों के स्वेटर या ब्लाउज ।

(४) सिलाई—पेटीकोट, पाजामा, ब्लाउज, फ्राक ।

सूचना—कपड़े का खाका व पैमाना लिखित होना चाहिये और कपड़े की कटिंग कागज पर होनी आवश्यक है ।

(५) भोजन—बालक, स्त्रियाँ एवं पुरुषों का संतुलित आहार, दाल, चावल, रोटी, तरकारी, पूड़ी कचौड़ी हलुआ तथा दो प्रकार की मिठाई, सैगो, बार्ली, तरकारी व दाल का रूप।

सहायक पुस्तक :—

सरल गृह विज्ञान, भाग १, एस०पी० सुखिया तथा जी०पी० शेरी शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा।

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

अंग्रेजी

(तृतीयखण्डस्यविषये प्रश्नाभविष्यन्ति)

प्रथमखण्डः

There will be only one paper, carrying 100 marks of three hours duration. The distribution of marks shall be as follows :—

(1) Prescribed Text	40
(2) Translation-Simple sentences	10
(3) Grammar-Parts of speech	10
(4) Composition-Use of words	10
(5) Dictation	10
(6) Recitation	10
(7) Spelling Exercise	10

PRESCRIBED TEXT BOOKS

१–बेसिक इङ्गलिश रीडर भाग १, उत्तर प्रदेश राजकीयप्रकाशन।

द्वितीयखण्ड:

There shall be only one paper carrying marks 100 of three hours duration. The distribution of marks shall be as follows —

(1) Prescribed Text	40
(2) Grammar—Parsing of Nouns Pronouns Adjectives and Verbs	10
(3) Translation—All forms of three tenses	10
(4 Composition—Framing Sentences on simple topics.	10
(5) Dictation	10
(6) Recitation	10
(7) Spelling exercise	10

PRESCRIBED TEXT HOOKS

बेसिक इङ्गगलिश रीडर भाग २, राजकीय प्रकाशन उत्तर प्रदेश

तृतीयखण्ड:

There shall be one Paper carrying 100 marks of three hours duration. The distribution of marks shall be as follows.

(1)	Prescribed Text	40
(2)	Grammar	25
(3)	Translation	20
(4)	Composition—Letter, short stories and other topics of interest	15

PRESCRIBED TEXT BOOKS

बेसिक इङ्गलिश रीडर भाग ३, राजकीय प्रकाशन उत्तर प्रदेश।

GRAMMAR

(a) Tenses & Voices

(b) Word formation

(c) Acquaintance with all parts of speech

(d) Simple parsing

(e) Analysis of simple sentences

(f) Direct and Indireet Narration

—o—

पूर्वमध्यमापरीक्षा

१—प्रवेशनियमः—

पूर्वमध्यमापरीक्षायां वक्ष्यमाणपरीक्षासुत्तीर्णा अन्वयमर्हन्ति ।

(अ) प्रथमापरीक्षा सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य ।

(आ) प्रथमापरीक्षा काशिकराजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयस्य।

(इ) ज्ञानप्रभापरीक्षा ,, ,, ,,

(ई) प्रवेशिकापरीक्षा काशीहिन्दूविश्वविद्यालयस्य

(उ) प्रथमापरीक्षा विहारसंस्कृतसमितेः ।

(ऊ) प्रथमापरीक्षा कामेश्वरसिंह, संस्कृत विश्वविद्यालयस्य, दरभंगा ।

(ए) जूनियरहाईस्कूलपरीक्षा (संस्कृतविषयसहिता) उत्तरप्रदेश-शिक्षाविभागस्य ।

(ऐ) कस्यापि प्रादेशिकशासनस्य शिक्षाविभागद्वारा प्राप्तमान्यता-समितेर्विश्वविद्यालयस्य वा तत्समकक्षपरीक्षा ।

(ओ) सम्बद्धमहाविद्यालयानां प्रधानाचार्यैः, विश्वविद्यालयस्या-चार्यैः, विभागाध्यक्षैः वा योग्यतापरीक्षाद्वारा अर्हतायां प्रमाणितायाम् अदत्तप्रथमादिपरीक्षाः छात्राः पूर्वमध्यमा-परीक्षायाः प्रथमवर्षे प्रवेशमर्हन्ति । योग्यतापरीक्षायाः उत्तरपुस्तिकाश्च नूनं संरक्षणीयाः येनापेक्षिते सति तासां निरीक्षणं भवेत् ।

विशेषः—जूनियरहाईस्कूलपरीक्षां तत्समकक्षपरीक्षां वा उत्तीर्णाः प्राचीनव्याकरण दर्शन-साहित्य-ज्योतिष-पुराण-थेरवादबौद्धदर्शनविषयेषु पूर्वमध्यमायामन्वेतुमर्हन्ति ।

२—इयं परीक्षा द्वाभ्यां वर्षाभ्यां पूर्णा भविष्यति । अस्यां परीक्षायां खण्डशः परीक्षार्थिनः अन्वेतुमर्हन्ति ।

(क) पूर्वमध्यमाप्रथमखण्डपरीक्षामुत्तीर्णा एवं द्वितीयखण्डे अन्वेतुमर्हन्ति ।

३—अस्यां परीक्षायां वक्ष्यमाणेषु अनिवार्य-कवर्ग-खवर्गविषयेषु घण्टात्रयसमाधेयानि,प्रतिखण्डं पञ्च प्रश्नपत्राणि, ऐच्छिकातिरिक्तविषये प्रतिखण्डम् एकं प्रश्नपत्रम्, प्रतिप्रश्नपत्रं च पञ्चाशत् पूर्णाङ्काः भविष्यन्ति । प्रतिखण्डं प्रतिविषयं प्रतिशतं त्रयस्त्रिंशद् (३३) अङ्कानां लाभ उत्तरणप्रयोजको भविष्यति ।

४—पूर्वमध्यमायाः प्रथमखण्डे श्रेणीविभागो न भविष्यति ।

५—पाठचक्रमः—

अनिवार्यविषयाः

१—संस्कृतकाव्यम्

२—संस्कृत-व्याकरणम्

३—हिन्दीभाषा च

वैकल्पिकविषयः 'क' वर्गः

(निम्नलिखित क वर्गान्तर्गतस्यैकस्य विषयस्य ग्रहणमनिवार्यम्)

(१) ऋग्वेदः (२) शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः) (३) कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः) (४) सामवेदः (५) अथर्ववेदः

(शौनकशाखीयः) (६) प्राचीनव्याकरणम् (७) नव्यव्याकरणम् (८) साहित्यम् (९) न्यायः (१०) दर्शनम् (११) थेरवादबौद्धदर्शनम् (१२)ज्यौतिषम् (१३) पुराणेतिहासम् (१४) प्राकृत एवं जैनागमः।

वैकल्पिकविषयः 'ख' वर्गः

(निम्नलिखित ख वर्गान्तर्गतस्य एकस्य विषयस्य ग्रहणमनिवार्यम्)

(१) नागरिकशास्त्रम् (२) अर्थशास्त्रम् (३) इतिहासः (४) पुराण-इतिहास एवं संस्कृति (५) भूगोलः (६) हिन्दीभाषा (७) नेपालीभाषा (८) विज्ञानम् (९) गणितम् (१०) पालीभाषा (११)प्राकृतिकभाषा (१२) समाजशास्त्रम् (१३) तुलनात्मकदर्शनम् (१४) संगीतम् (कण्ठसंगीत-तबला-वाद्यसंगीत-सितार-वाद्यसंगीतेष्वन्यतमम्) (केवलं वालिकानां कृते) (१५) गृहविज्ञानम् (केवलं वालिकानां कृते)

ऐच्छिकः अतिरिक्तः विषयः

अंग्रेजी

(अंग्रेजीभाषायां प्रतिखण्डं एकं प्रश्नपत्रं भविष्यति, तत् स्वेच्छया परीक्षार्थिनः ग्रहीतुं प्रभवन्ति। उत्तीर्णतायां प्रमाणपत्रे तदुल्लेखो भविष्यति एवं प्रथमखण्डे उत्तीर्णा एवं द्वितीयखण्डे अन्वेतुमर्हन्ति।

पूर्वमध्यमा-प्रथमखण्डम्

	पूर्णाङ्काः	उत्तरणाङ्काः
प्रथमं प्रश्नपत्रम्—अनिवार्यविषयः संस्कृतकाव्यम्, पद्यानुवादनिबन्धानाम्	५०	१७
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्—अनिवार्यविषयः संस्कृतव्याकरणम् व्याकरणस्य	५०	१७

तृतीयं प्रश्नपत्रम्—अनिवार्यं विषयः हिन्दीभाषा		
गद्यव्याकरणनिबन्धानाम्	५०	१७
चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—वैकल्पिकः 'क' वर्गीयो विषयः		
कवर्गीयविषयस्य	५०	१७
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्—वैकल्पिकः 'ख' वर्गीयो विषयः		
वैकल्पिकखवर्गीयविषयस्य	५०	१७
ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः		
अंग्रेजीभाषायाः	५०	१७

अनिवार्यविषयः संस्कृतकाव्यम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्—पद्यानुवादनिबन्धानाम्　　५०

(क) रघुवंशस्य १, ३ सर्गौ　　१५

(ख) प्रतापविजयः (प्रतापिप्रतापतः हल्दीघाटीपरिचयान्तः)　　१५

लें०—ईशदत्त शास्त्री—प्रकाशन—देवभाषा प्रकाशन
दारागंज प्रयाग

(ग) अनुवादः—हिन्दीभाषातः संस्कृते　　१०

सहायक ग्रन्थः—

१—अनुवादकला—चारुदेव शास्त्रिकृता
प्रकाशकः—मोतीलाल वनारसीदास, वाराणसी।

(घ) निबन्धः संस्कृतभाषायाम्　　१०

सहायक ग्रन्थः—

१—सरलसंस्कृतनिबन्धादर्शः श्रीवासुदेवद्विवेदिकृतः
प्र०—सार्वभौमसंस्कृतप्रचारकार्यालयः वाराणसी

२—निवन्धचन्द्रिका—श्रीकृष्णदेव उपाध्याय,

चौखम्भा ओरियण्टालिया, वाराणसी

३—पद्यमाला—सम्पादकः श्री हरिशङ्करमिश्रः

प्र०—मोतीलाल वनारसीदास, वाराणसी

अनिवार्यविषयः—सांस्कृतव्याकरणम्

द्वितीयं प्रश्नप्रत्रम्—व्याकरणस्य ५०

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते)

मध्यकौमुदी-आदितः अव्ययप्रकरणान्ता

अथवा

वालसिद्धान्तकौमुदी—आदितः स्त्रीप्रत्ययप्रकरणान्ता ले० ज्योतिस्वरूपमिश्रः प्रकाशक—ज्योतिस्वरूपमिश्र द्वारा—भवदेव मिश्र वी ४ सेक्रेटरियेट कालोनी, महानगर, लखनऊ

अथवा

भट्टिकाव्यम् १-४ सर्गाः

विशेषः—प्रश्नपत्र निर्माणकाले भट्टिकाव्यतः २५ अङ्कानां व्याकरण—सम्बन्धिप्रश्नाः अनिवार्यरूपेण प्रष्टव्याः

(केवलं व्याकरणच्छात्रेभ्यः)

तर्कसंग्रहः पदकृत्यसहितः प्रत्यक्षखण्डान्तः

सहायक ग्रन्थः—

सामान्यसंस्कृतव्याकरणम्

सम्पादकः—श्री रामजी उपाध्यायः—डा० मनोरमा तिवारी—

प्र० चौखम्भा ओरियण्टालिया, वाराणसी

अनिवार्य विषयः हिन्दी

तृतीय प्रश्नपत्रम्—गद्यनिबन्धानुवादानाम्   ५०

(क) पाठ्यपुस्तकम्—निबन्ध सौरभः सम्पादक
—डा० श्रीप्रसाद, डा० विसंभरनाथ
(प्र०—विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी)   १२

(ख) द्रुतपाठ—चतुर्युग (प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, प्रयाग)   ६

(ग) व्याकरण—मुहावरों का प्रयोग   ५
सहायक पुस्तक—सुगम हिन्दी व्याकरण
ले० जीवनाथ शास्त्री (प्र० राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली)

(घ) अनुवाद—संस्कृत से हिन्दी   ५
हिन्दी से संस्कृत   ५
भाव सारांश—संस्कृत प्रवाह—सम्पादक   ५
सोमेश्वर प्र० अभिनव साहित्य प्रकाशन, चौक वाराणसी

(ङ) निबन्ध—   १२
सहायक पुस्तकें
१—नवीन हिन्दी निबन्ध—डा० राजकिशोर त्रिपाठी
चौखम्भा–औरियंटालिया—चौक वाराणसी

२—अच्छी हिन्दी—रामचन्द्र वर्मा

३—निबन्ध सौरभ—सम्पादक—डा० श्रीप्रसाद—डा० विसंभरनाथ, प्र०–विश्वविद्यालय प्रकाशन, चौक, वाराणसी।

वैकल्पिकः विषयः (क वर्गः)

१—ऋग्वेदः

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् ५०

(क) सस्वराया ऋग्वेदसंहितायाः ३५
प्रथममण्डले सूक्तानि १-३, १७-१९, २२, ४०-४३, ५०, ८०, ८९, ९५-९९, ११२, ११४, ११५, १२२, १४२, १५४-१५७।

(ख) पाणिनीयशिक्षा सामान्यार्थसहिता १५

२—शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः १-५ अध्यायाः ३५

(ख) याज्ञवल्क्यशिक्षा १५

३—कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) तैत्तिरीयसंहितायः सस्वरायाः प्रथमं काण्डम् ३५

(ख) पाणिनीयशिक्षा १५

४—सामवेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्

(क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः पूर्विचिकस्य १-२ प्रपाठकौ ३५

(ख) नारदीयशिक्षा सामान्यार्थ सहिता १५

५—अथर्ववेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः १-२ काण्डे ३५

(ख) माण्डूकीशिक्षा १५

६—प्राचीनव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रन् ५०

(क) अष्टाध्याय्याः १-२ अध्यायौ काशिकाधारेण सूत्रपदच्छेद-विभक्तिसमासार्थोदाहरणसिद्धिसहितौ। उदाहरण-सिद्धौ विशेष-सूत्रातिरिक्तसूत्रप्रदर्शनं नानिवार्यम्। ३०

(ख) नियताध्याययोः (१-२) सूत्रपाठकण्ठस्थीकरणम्। १०

(ग) सन्धिविषयः, अजमेरमुद्रितः गुरुकुलकाङ्गड़ी मुद्रितो वा। १०

७—नव्यव्याकरणम्

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् ५०

सिद्धान्तकौमुदी स्त्रीप्रत्ययान्ता

४—साहित्यम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) कुमारसम्भवस्य १-२ सर्गौ २५

(ख) रघुवंशस्य ६-७ सर्गौ २५

९—न्यायः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्या अनुमानखण्डान्तो भागः

१०. दर्शनम्

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् ५०

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः प्रत्यक्षखण्डान्तो भागः

११. थेरवादबौद्धदर्शनम्

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् ५०

धम्मचक्कपवत्तनसुत्तं, महामंगलसुत्तं, वसलसुत्तं, पराभवसुत्तं च
पाठचग्रन्थ–पालिपाठसंगहो–भाग-१, २, ले० डा० महेशतिवारी।

१२. ज्यौतिषम्

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् ५०

(क) लीलावती सम्पूर्णा ३५

(ख) मुहूर्तचिन्तामणिः संक्रान्तिप्रकरणान्तः १५

१३. पुराणेतिहासम्

चतुर्थ प्रश्नपत्रम् ५०

(क) वाल्मीकिरामायणस्य वालकाडस्य प्रथमःसर्गः मूलरामायणम् २५

(ख) महाभारतस्य शीलनिरूपणाध्यायः २५

१४. प्राकृत एवं जैनागमः

चतुर्थप्रश्नपत्रम्

दव्वसंगहो—नेमिचन्द्राचार्यकृतः

(शब्दार्थसहिता व्याख्या ३० अंकाः, संस्कृत अथवा हिन्दीभाषया अनुवादः २० अंका)

ग्रन्थप्राप्ति—

१. श्रीगणेशप्रसाद वर्णी जैन ग्रन्थमाला, नरिया, वाराणसी ।

२. परमश्रुतप्रभावक मण्डल, राजचन्द्र आश्रम, आगास (गुजरात)

३. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

१५. जैनदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

रत्नकरण्डकम् (स्वामीसमन्तभद्रकृतः)

व्याख्या २०

विषयपरिचयः २०

ग्रन्थकर्तुः परिचयः १०

ग्रन्थप्राप्तिः १. वीर सेवा मन्दिर ट्रस्ट, जैन मंदिर, नरिया वाराणसी–५.

२. सरल जैन ग्रन्थमाला, जवाहरगंज, जबलपुर (म. प्र.) ।

वैकल्पिको विषयः ('ख' वर्गः)

१. नागरिकशास्त्रम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

नागरिकशास्त्र के सिद्धान्त

१. नागरिकशास्त्र, अर्थ, परिभाषा, क्षेत्र तथा महत्व ।

२. नागरिकता—तात्पर्य, प्राप्ति एवं विलुप्ति । नागरिक के अधिकार तथा कर्तव्य, उत्तम नागरिकता के पथ में बाधायें एवं निराकरण के उपाय ।

३. समाज परिवार तथा अन्य संस्थाओं का महत्त्व ।

४. राज्य की परिभाषा तत्त्व और कर्तव्य ।

५. सरकार—परिभाषा एवं कर्तव्य, वर्तमान शासन प्रणालियों के भेद ।

६. कानून एवं स्वतन्त्रता ।

सहायक ग्रन्थ—

हाईस्कूल नागरिक शास्त्र—राजनारायण गुप्ता
नागरिक सिद्धान्त कौमुदी—गोरखनाथ चौबे
नागरिक शास्त्र के सिद्धान्त—ओमप्रकाश केला
हाईस्कूल नागरिक शास्त्र—कन्हैयालाल वर्मा

२. अर्थशास्त्रम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

अर्थशास्त्र की परिभाषा और उसका क्षेत्र—उपयोगिता, मूल्य और आय, आर्थिक कार्य माँग, पूर्ति इत्यादि की साधारण परिभाषा । अर्थशास्त्र के विभाग । उत्पादन और उत्पादन के साधन-भूमि, श्रम, श्रमकुशलता पूँजी और इसका कृषि तथा उद्योग-धन्धों पर प्रभाव ।

स्थानीय क्षेत्र की कृषि का सर्वेक्षण—प्रति एकड़ उपज कम होने के कारण । खेतों का छोटा होना और विभाजन । कुटीर-उद्योग तथा स्थानीय-उद्योग । कृषि-कला में उन्नति तथा नये साधनों का उपभोग ।

उपभोग तथा जीवनस्तर का सम्बन्ध—आवश्यकताएँ, आय, आवश्यकताओं की पूर्ति। आवश्यकताओं का वर्गीकरण, वचत। किसान के उपभोग का लेखा। देहातों के कारीगर एवं उनका जीवन-स्तर।

वस्तुविनिमय—(Barter) क्रय तथा विक्रय, वाजार, कृषि की उपज तथा उनके विक्रय के लिये उपयुक्त मंडियाँ। गाँव के हाट उनकी उपयोगिता तथा सङ्गठन। कृषि की उपज का विनिमय, बँटाई प्रथा और उसके गुण तथा दोष। श्रमिकों का वेतन। परम्पराओं और प्रथा का आर्थिक जीवन पर प्रभाव। उत्तर प्रदेश में बन्दोवस्त। गाँव की समस्याएँ—शिक्षा, स्वास्थ्य, मनोरंजन के साधन इत्यादि। पशु-सम्बन्धी समस्याएँ एवं उनका निवारण। उत्तर प्रदेश में पञ्चायत-राज्य।

सहकारिता—सहकारी समितियों का कार्य। विभिन्न प्रकार की सहकारी समितियाँ।

सहायक ग्रन्थ—

(१) अर्थशास्त्र का सरल परिचय

ले०—कृष्णमुरारी सक्सेना, तथा आर० के० गुप्ता,

प्रकाशक—जवाहर प्रकाशन, ६४ अर्जुननगर' गाजियावाद।

(२) प्रारम्भिक अर्थशास्त्र, ले० आर० एन० गुप्ता तथा श्रीनाथ अग्रवाल।

प्रकाशक—अग्रवाल प्रेस, शिवचरन लाल रोड,

इलाहाबाद—२

(३) अर्थशास्त्र का सरल अध्ययन
लें०—ओमप्रकाश केला, प्रकाशक भारतीय प्रकाशन, हीवेट रोड, इलाहाबाद। ९०

(४) हाईस्कूल अर्थशास्त्र की रूपरेखा भाग १
लें०—आनन्दस्वरूप गर्ग राजहंस प्रकाशन मंदिर, एजुकेशनल पब्लिसर्स, सुभाषबाजार, मेरठ।

३. इतिहास

पञ्चम प्रश्नपत्रम्

भारत का इतिहास आरम्भ से १५२६ तक। ५०

(इस काल के प्रमुख घटनाओं और व्यक्तियों का सामान्य परिचय)।

सहायक ग्रन्थ—

१—भारतवर्ष का इतिहास—डा० अवधविहारी पाण्डेय,
प्रकाशक—नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी।

२—भारतवर्ष का इतिहास—डा० ईश्वरी प्रसाद
प्रकाशक—इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद।

४. पुराण-इतिहास एवं संस्कृति

पंचम पत्र—

रामायणकालीन घटनाओं एवं व्यक्तियों का सामान्य परिचय ५०

(क) १—रामायण का संक्षिप्त परिचय, २-क्रौञ्चवध, ३-ऋष्यशृङ्गोपाख्यान, ४-विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण का प्रस्थान ५-

ताड़कावध, ६–सगरोपाख्यान, ७–धनुर्यज्ञ तथा रामादि का विवाह, ८–राम का राज्याभिषेक, ९–कैकेयी का वरद्वययाचन, १०–राम का वनवास, ११–राम और केवट (निषाद), १२–राम का चित्रकूट निवास, १३–राम-भरत-मिलन, १४–राम का पंचवटी गमन तथा राक्षसों का वध, १५–सीताहरण, १६–जटायु का आख्यान, १७–राम और सुग्रीव की मैत्री, १८–वालि-वध, १९–सीतान्वेषण, २०–हनुमान का सागर संतरण, २१–हनुमान और सीता संवाद, २२–लङ्कादहन, २३–राम-रावण युद्ध, २४–रावण-वध, २५–राम का राज्याभिषेक।

(ख) १–वाल्मीकि, २–विश्वामित्र, ३–दशरथ, ४–राम, ५–लक्ष्मण, ६–भरत, ७–शत्रुघ्न, ८–जनक, ९–परशुराम, १०–वशिष्ठ, ११–सुग्रीव, १२–बालि, १३–हनुमान, १४–रावण, १५–विभीषण, १६–मेघनाद।

(ग) १–कौशल्या, कैकेयी, ३–सीता, ४–तारा, ५–मन्दोदरी।

५. भूगोल

प्रश्नपत्र

प्राकृतिक भूगोल––

१—गणित सम्बन्धी सौर मण्डल, पृथ्वी का आकार, विस्तार और उनकी गतियाँ, दिन-रात, ऋतुएँ अक्षांश एवं देशान्तर, ग्रहण।

२—स्थल मण्डल चट्टानें, धरातल पर परिवर्तनकारी शक्तियाँ (जल, वायु, तथा हिम के कार्य, भूचाल, ज्वालामुखी, भूमध्य रेखायें।)

३—जल मण्डल-महासागर, सामुद्रिक धारायें, लहरें और ज्वार-भाटा उनके कारण और प्रभाव।

४—वायु मण्डल—जलवायु तथा मौसम, वायुभार की पेटियां, चक्रवात और प्रतिचक्रवात, ताप वायुभार पवन और वर्षा-मापक यन्त्र, समताप तथा सम वायु-भार रेखायें।

(आ) विश्व का भूगोल—

१—महाद्वीपों का अध्ययन—प्राकृतिक बनावट, जलवायु, वनस्पति, मुख्य फसलें, खनिज उद्योग, प्रमुख-नगर, एवं पोताश्रय यातायात तथा व्यापार।

२—मुख्य प्राकृतिक खण्डों का अध्ययन, मानवीय क्रियायें एवं जीवनप्रक्रिया पर भौगोलिक वातावरण का प्रभाव।

६. हिन्दी

पंचमपत्रम् ५०

द्रष्टव्य—पाठ्यपुस्तक से संदर्भ सहित व्याख्या, पूरक पाठ्यपुस्तक से सामान्य विवेचनात्मक कवियों का परिचय, छन्द और अलंकार।

पाठ्यपुस्तकें—हाईस्कूल काव्य संकलन, राजकीय प्रकाशन उ० प्र०।

संदर्भ व्याख्या— २०

कवि परिचय— १०

(द्रुतपाठ—हिन्दी कहानियाँ—सं॰ डा॰ वैजनाथ मिश्र)

प्र॰ मोतीलाल बनारसी दास वाराणसी। १२

छन्द और अलंकार— ८

१–छन्द—दोहा, चौपाई, सोरठा, हरिगीतिका, कवित्त, छप्पय, कुंडलियाँ।

२–अलंकार—यमक, अनुप्रास, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्ति, दृष्टान्त अर्थान्तर, न्यास,

सहायक ग्रन्थ—काव्यांगकौमुदी, भा॰–२ ले॰ पं॰ विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (प्र॰ वाणी वितान प्रकाशन, वाराणसी)

७. नेपाली

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

अङ्कविभाजनम्

(१) व्याख्या	१५
(२) लेखक परिचय	५
(३) अनुवाद संस्कृत वाट नेपाली	५
(४) ,, नेपाली वाट संस्कृत	५
(५) सहायक ग्रन्थवाट	१०
(५) पाठचांशवाट प्रश्न	१०

पाठ्यपुस्तकनामानि :—

(क) ऋतुविचार अथवा लालित्य

लेखक—लेखनाथ पौडेल—पुस्तक संसार, भोटाहिटी, काठमाण्डू नेपाल

(ख) मुनामदन, ले०—लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, साझा प्रकाशन काठमाण्डू, नेपाल

(ग) नेपाली पद्यचन्द्रिका भाग १, ले०—जगदीशचन्द्र रेग्मी, रेग्मीबन्धु, नेपाली पुस्तक—सदन, दुर्गाघाट, वाराणसी।

सहायकग्रन्थ :—

(१) नेपाली सजिलो व्याकरण

लेखक—पुष्कर समशेर राणा—साझा प्रकाशन, काठमाण्डू नेपाल

(२) अलङ्कारसंग्रह

लेखक—कुलचन्द्रगौतम, नेपाली साहित्य सदन, दूधविनायक, वाराणसी।

अथवा

काव्यचन्द्रिका—

लेखक—शेषराज शर्मा रेग्मी, बन्धु नेपाली-पुस्तकसदन, दुर्गाघाट वाराणसी।

(३) अनुवादचन्द्रिका भाग १, शोभनाथ सिग्देल—पुस्तक-संसार, भोटाहिटी, काठमाण्डू, नेपाल

८. विज्ञानम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्   ५०

(सूचना—विज्ञान के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से अधिक हो जिससे विद्यार्थियों को सिद्धान्त तथा व्याख्या बोधगम्य हो। पाठ्यक्रम अध्यापन से इस बात पर ध्यान दिया जाय कि विज्ञान सम्बन्धी नियमों को वह समझ सके एवं अपनी चिन्तनशक्ति तथा विचारधाराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं। जबतक प्रयोगात्मक परीक्षा सम्भव नहीं हो—लिखित प्रश्नों में से दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों प्रयोगात्मक-पुस्तिका रखना आवश्यक है।)

भौतिकशास्त्र

स्थिर तथा गतिज अवस्था, वेग त्वरण, समवेग, कार्य, ऊर्जा-शक्ति इनकी परिभाषा तथा इकाइयाँ, यान्त्रिक शक्ति, स्थिति तथा गतिशक्ति, इनकी परिभाषा तथा उदाहरण, उर्जा के अन्य रूप—ताप, प्रकाश, विद्युत आदि। द्रव्य तथा शक्ति के बीच सम्बन्ध—दैनिक जीवन के यन्त्र, बैरोमीटर, वायुदाब का मापन, द्रव्य से दाब का नियम, उत्प्लावन बल, पंप, सायफन, उष्मा, ताप की इकाई, ठोस द्रव्य और गैसों का प्रसार, कैलरीमीति, कैलरीमीटर, ठोस की विशिष्ट उष्मा निकालना, दशा परिवर्तन तथा गुप्तताप, बर्फ का गुप्तताप निकालना, उष्मा का संचरण।

प्रकाश—गोदर्पण नतोदर, तथा उन्नतोदर, नतोदर दर्पण के नाभ्यन्तर का सूत्र, दोनों दर्पणों के नाभ्यन्तर निकालना, प्रतिबिम्बों की रचना।

लैंस के भेद—लेंस द्वारा प्रतिबिम्ब की रचना, लेंस सूत्र, नतोदर लेंस का नाभ्यन्तर निकालना, लैंस का उपयोग, ग्रीष्म में वर्तन,

प्रकाशयन्त्र और हमारे नेत्र, लैंस, कैमरा, मैजिक लैन्टर्न, टेलीस्को मायक्रोस्कोप, पेरीस्कोप।

रसायनशास्त्र और उसकी उपयोगिता।

द्रव्य और उसके गुण।

अवस्था में परिवर्तन, ठोस वस्तुओं का द्रव में विलयन, केलास भौतिक और रासायनिक परिवर्तन पदार्थों की परीक्षा, साधार उपकरणों का बनाना, वायु का अध्ययन, तत्त्व और यौगिक रसायन शास्त्री की भाषा, आक्सीजन नाइट्रोजन वायु मण्डल, धातुओं प अम्लों का प्रवाह, हाइड्रोजन जल, कारबन-डाईआक्साइड।

जीवविज्ञान

जीवविज्ञान, उद्देश्य तथा लाभ, जीवधारियों के लक्षण, ए सम्पूर्ण जीव की दृष्टि से जीव-कोष। प्राणी तथा वनस्पति में एकत समानता, वर्गीकरण का उद्देश्य तथा लाभ, जीवजगत् के वर्ग समू के विषय में सामान्यज्ञान, प्राणिविज्ञान तथा उनकी सफलता ला तथा इसकी उपयोगिता, प्राणि-विज्ञान शिक्षा के विकास, प्राकृति तथा प्रायोगिक-अध्ययन एवं उपयोगिता।

मेढक एवं प्राणी के उदाहरण, स्वरूप, आवास तथा आका प्राकृतिक वितरण और व्यवहार, मेढक की आन्तरिक रचना, विभि अंग संस्थान तथा उनके कार्य, मानवशरीर के विभिन्न अङ्गों के का एवं तुलना :

निम्नवर्गीय प्राणियों का अध्ययन तथा लाभ, लाभदायक तथ हानिकारक प्राणियों के विषय में साधारण ज्ञान, कपास के गुबरीं टिड्डी, रेशम के कीट, मच्छिका, मधुमच्छिका एवं मच्छड़ के विषय साधारण ज्ञान।

प्रायोगिक कार्य—

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को अवश्य दिखाये जाने चाहिये—

वर्नियर स्केल का प्रयोग कैलीपर्स तथा स्क्रू गेज का प्रयोग।

भौतिक तुला तथा कमानीदार तुला द्वारा मात्रा और भार निकालना।

लीवर की कार्यविधि दिखाना, ठोस तथा द्रव का आयतन निकालना।

आर्कमेडिस सिद्धान्त की परीक्षा करना।

पानी से हल्के ठोस का अपेक्षित घनत्व निकालना।

आपेक्षिक घनत्व, बोतल से द्रव का आपेक्षिक घनत्व निकालना।

यू नली द्वारा किसी द्रव का आपेक्षिक घनत्व निकालना, वायु के दाव तथा सायफन कार्य दिखाना।

ताप का संचरण, संवाहन तथा विकिरण दिखाना। विभिन्न धातुओं पर ताप का प्रभाव दिखाना, फार्टिन के वायुदाब मापक का पाठ लेना और उसमें तापक्रम सम्बन्धी संशोधन करना।

आक्सीजन कार्बोनडाइक्साइड, नेट्रोजीन, तथा हाइड्रोजीन, बनाना तथा उनके गुणों को देखना, रव बनाना (नमक फिटकिरी और तूतिया)।

पानी के क्वथनांक तथा वर्फ के गलनांक पर गन्दगी का प्रभाव दिखाना। उच्चतम निम्नतम तापक्रम यन्त्र द्वारा किसी दिन का उच्चतम तथा निम्नतम तापक्रम निकालना। समतल तथा गोलीय दर्पण का अध्ययन करना, एवं दर्पणों को पहिचानना, प्रीज्म का

कार्य दिखाना, जीवकोष का अध्ययन करना, मेढक के आन्तरि रचना देखना ।

सहायक पुस्तकें—

१—हाईस्कूल भौतिकशास्त्र—पं० गङ्गाशरण भार्गव, पं० मनोह लाल भार्गव, प्र०—नन्दकिशोर एण्डब्रदर्स, वाराणसी ।

२—सरलभौतिकी—के० कुमार एवं भार्गव ।

३—हाईस्कूल भौतिकी—शंभुदयाल अग्रवाल ।

४—हाईस्कूल भौतिक विज्ञान—आर० के० वाउन्ट्रा ।

५—प्रारम्भिक भौतिकी—वी० एल० कुलश्रेष्ठ ।

६—हाईस्कूल रसायन—पं० गङ्गाशरण भार्गव पं० मनोहर लाल भार्गव, प्र० नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी ।

७—सरलरसायन—के० कुमार एवं भार्गव ।

८—सरलरसायनविज्ञान—एस० पी० टण्डन ।

९—प्रारम्भिक वनस्पतिविज्ञान—डा० रामकुमार सक्सेना, डा० कामेश्वर सहाय भार्गव, प्र०—नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी ।

१०—वनस्पति विज्ञान—आर० डी० विद्यार्थी ।

११—हाईस्कूल वनस्पतिविज्ञान—आ० के० वाउन्ट्रा ।

१२—प्रारम्भिक जीवविज्ञान भाग २—एस० पी० टण्डन ।

१३—हाईस्कूल जीवविज्ञान, डा एस० के० गोस्वामी एवं अग्रवाल, मेरठ ।

गणितम्

(केवल जीवविज्ञान के विकल्प में)

वीजगणित–योगादिनियम–चतुष्टय, गुणनखण्ड–द्विघाती व्यञ्जक, दो घनों का योग और अन्तर, दो वर्गो का अन्तर, महत्तमसमापवर्तक, लघुत्तमसमापवर्त्य, भिन्न सरल एक वर्ण एकघात समीकरण, दो या तीन अज्ञात वर्गों का युगपद, समीकरण, एक अज्ञातवर्ण का वर्गसमीकरण, समीकरणों पर आधारित प्रश्न ।

९. गणितम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) अंकगणित तथा प्रारम्भिक सांख्यिकी २०

वृतका क्षेत्रफल, प्रतिशत, लाभ हानि, निष्पत्ति तथा समानुपात, साझा-पत्ती, मिश्रव्यांज (Compound Interest), आवृत्ति वंटन (Frequency distiribution) और केन्द्रीय प्रवृत्ति तथा अपसरण के माप (Measure of central tendency and dispersion) पर आधारित सरल प्रश्न ।

(ख) घन मापन । १०

निम्नलिखित घन-पिण्डों के तल तथा आयतन—लांम्बिक समानाफलक, संक्षेप (Prism) तथा स्तूप (Pyramids) वर्तुल वैलन तथा शंकु, गोल तथा गोलखण्ड । छिन्नी (Frustums) पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे ।

(ग) वीजगणित २०

योगादि नियम चतुष्टय, गुणनखण्ड-द्विघाती व्यञ्जक, दो वर्गों का अन्तर, दो घनों का योग तथा अन्तर, चक्रीय क्रम के कंजक जो त्रिघात से अधिक न हो, शेषफल के सरल प्रयोग से गुणनखण्ड ज्ञात करना । महत्तम समापवर्तक, लघुत्तम समापवर्त्य, भिन्न, घातांक नियम, सरल विलोपन, सरल एक वर्ण एक ज्ञात समीकरण, दौ या तीन अज्ञात वर्णों का सरल युगपत् समीकरण, एक अज्ञात वर्ण का वर्ग

समीकरण, समीकरणों पर आधारित सरल प्रश्न । युगपत् समीकरणों का आलेखन द्वारा हल ।

१०. पालिः

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) पालिपाठमाला (पठमो भागो) ३

महाबोधि सभा, सारनाथ ।

(ख) व्याकरण—बुद्ध, लता, फल, मुनि, रत्ति, भिक्खू आदि। शब्दानां रूपाणि. पठ, भू, ह, सह, रक्खू, वद, पच धातूनां लट्, लिट्, लृट्, लिडादिलकारेषु रूपाणि । २०

सहायक पुस्तकें—

पालिप्रबोध— ले०—आद्यादत्त ठाकुर

११. प्राकृतम्

पंचमप्रश्नपत्रम् ५०

(क) रचनानुवादः व्याकरणं च ३० अङ्काः
(प्राकृतिक काव्यमंजरी १–४ पाठाः)

(ख) प्राकृतगद्यपाठाः २०
(प्राकृत काव्यमंजरी ५—० पाठाः)

ग्रन्थप्राप्ति

१. प्राकृत काव्यमंजरी—डा० प्रेमसुमन जैन ।
प्रकाशक—राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान
मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर (राजस्थान)

सहायक ग्रन्थ

१. पाइअविन्नाणकहा—श्री विजयकस्तूर सूरीश्वर ।
प्रकाशक—मास्टर जसवंतलाल गीरधरलाल, अहमदावाद।

मानव समाज की विशेषताएँ

व्यक्ति और समाज

मानव समूह का अर्थ प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह

नमुदाय का अर्थ ग्रामीण तथा नगर समुदाय

संस्थानों का अर्थ परिवार, राज्य, धर्म

सामाजिक नियन्त्रण का अर्थ

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ

सामाजिक विघटन का अर्थ तथा प्रमुख प्रकार।

सहायक पुस्तकें--

समाजशास्त्र के मूल सिद्धान्त—कैलाशनाथ शर्मा

समाजशास्त्र के मूलतत्त्व---सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार।

१३. तुलनात्मकदर्शनम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्

धर्म की परिभाषा, भारत में विभिन्न धर्म, वैदिक, बौद्ध, जैन तथा सिक्ख धर्म के प्रवर्तक तथा उनके विचार, इस्लाम धर्म के प्रवर्तक तथा उनके विचार, यहूदी और ईसाई धर्म की उत्पत्ति तथा विचार, चीनी कन्फ्यूसस तथा ताओ के विचार, पारसी धर्म तथा उनके मूल सिद्धान्त मध्यकालीन भारतीय सन्त सम्प्रदाय।

पाठ्यग्रन्थ—

१—विश्व के प्रमुख धर्म --श्री जी० आर० सिंह एवं श्री सी० डब्ल्यू० डेविड

२—विश्व के धर्म प्रवर्तक --डा० रघुनाथसिंह

१४. संगीतम्

(केवलं बालिकानां कृते)

कण्ठसंगीतम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

प्रायोगिक ३०

१—स्वरज्ञान—सात शुद्ध और पाँच विकृत स्वरों का समुचित अभ्यास. शिक्षक द्वारा गाये जाने पर शुद्ध स्वर तथा रागों को पहचानना ।

२—दस अलङ्कारों को ठाह और दुगुणलयों में सरगम आकार में कहना ।

३—रागज्ञान—निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल, अलाप, तान सहित । किसी भी राग में एक भजन । राग यमन, राग खमाज ।

४—निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल । अलाप, तान रहित लेकिन आरोह अवरोह पकड़ जानना आवश्यक है ।
राग विलावल, आसावरी और देश ।

उपर्युक्त रागों में लक्षणगीत और सरगम गीत जानना आवश्यक है ।

५—तालज्ञान—निम्नलिखित तालों की मात्रा, विभाग, सम, खाली, ताली आदि दिखाते हुए ठाह और दुगुण लयों में बोलना
ताल, त्रिताल, झपताल, एकताल और दादरा

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

१ —निम्नलिखित सरल पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या—
संगीत, भारत की दो संगीत पद्धतियाँ, नाद, थाट, स्वर, वर्ण

(स्थायी, आरोही, अवरोही और संचारी) वादी, संवादी अनुवादी, विवादी अलंकार राग, जाति (ओढ़व, षाढ़व-संपूर्ण) सप्तक (मन्द्र, मध्य, तार), पकड़, आलाप, तान, स्थायी अन्तरा, स्वर मालिका, लक्षणगीत ख्याल (छोटा तथा बड़ा ख्याल), लय, (विलम्बित, मध्य, द्रुत), ताल, मात्रा, ताली, खाली, सम ।

२—पाठचक्रम में आये रागों की परिभाषा, शास्त्रोय परिचय लिखना ।

३—पाठचक्रम में आये तालों को ठाह और द्विगुण लयों में लिखना ।

४—पाठचक्रम में आये छोटे ख्याल, लक्षणगीत को स्वरलिपि में लिखना ।

५—श्री भातखण्डे और विष्णु-दिगम्वर जी स्वरलिपि पद्धति की तुलना ।

६—अमीर खुसरू और तानसेन की जीवनी पर संक्षिप्त प्रकाश ।

७—सरल स्वर समूहों द्वारा रागों को पहिचानना ।

वाद्यसंगीतम् (सितार)

पञ्चम प्रश्नपत्र— ५०

प्रायोगिक— ३०

१—मुख्य राग—यमन, खमाज इन रागों की एक-एक रजाखानी गत, तान तोड़ों सहित :—

२—गौण राग—भूपाली, विलावल, देश इन रागों की एक-एक रजाखानी गत, तान तोड़ों सहित :—

छोटे-छोटे स्वर समुदाय द्वारा राग पहिचानने का अभ्यास ।

३—तीन ताल, झपताल, एकताल इन तालों के ठेकों की ताली देते हुए ठाह तथा दून में बोलने का अभ्यास ।

सैद्धान्तिक—(लिखित प्रश्नपत्र)— २०

निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान ।

संगीत, स्वर, शुद्ध और कोमल, सप्तक, अलंकार, अलाप, तान, मुर्की, कण, आरोह, अवरोह, पकड़, वादी, सम्वादी, थाट, ध्वनि, वर्ण, स्थायी, आरोही, अवरोही, संचारी, राग, जाति ।

४—पाठचक्रम के सभी रागों को स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास ।

५—अपने पाठचक्रम के सभी रागों का परिचय ।

६—निम्नलिखित संगीतज्ञों का चरित्र—

श्री भातखण्डे, श्रीविष्णु दिगम्बर पलुस्कर ।

७—लिखित स्वरों द्वारा राग पहचानने का अभ्यास ।

वाद्यसङ्गीतम् (तबला)

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

प्रायोगिक— ३०

१—लयज्ञान—अंकों की सहायता से ठाह, दुगुना और चौगुन लयों को ताली देकर दिखाना ।

२—हाथ से निम्नलिखित वोलों को तबले पर निकालना, ता, ना, तेटे, तिरकिट, तूना, त्रिका, धे, धीन, चा, कत्ता आदि ।

३—तालज्ञान—निम्निलिखित तालों में एक पेशकारा, एक मुखड़ा, चार तुकड़ा, दो तिहाई, चार कठिन कायदे तथा परन जानना आवश्यक है ताल—झपताल, त्रिताल और चौताल ।

४—ताल कहरवा, रूपक, दीपचन्दी और दादरा के ठेकों का साधारण ज्ञान।

५—उपर्युक्त सभी तालों को हाथ से ताली देकर ठाह और दुगुन लयों में कहना।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

१—निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या—
लय (विलम्बित मध्य, द्रुत), ठाह, दुगुन, चौगुन, ठेका, पल्टा, तिहाई मोहरा, मुखड़ा, टुकड़ा, पेशकारा, परन, मात्रा, सम, खाली, ताल, भारी।

२—तबला की उत्पत्ति का साधारण ज्ञान।

३—पाठ्यक्रम में आये तालों को ठाह और द्विगुण लयों में लिखना।

४—पाठ्यक्रम में आये कायदे, टुकड़ा, पेशकारा, परन और तानों कोताललिपि में लिखना।

५—निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी—
अमीर खुशरू, तानसेन।

१५. गृहविज्ञानम्

(केवलं बालिकानां कृते)

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

सैद्धान्तिक— ३०

(अ) मकान की सफाई तथा चुनाव, फर्नीचर, सजावट, कमरों का वितरण।

(आ) कटाई तथा सिलाई (सङ्केत रखने चाहिये) पुरुष के लिये कुर्ता, कमीज, पैजामा, ब्लाउज, फैंसी-कालर, मेज-पोश, तकिये का गिलाफ, चाय के टेबुल का आवरण।

प्रायोगिक— २०

त्रिकोणात्मक तथा गोलागार पहियों का बाधना । हड्डियों के टूटने पर उनका उपचार। परिचारिका की परिभाषा, परिचारिका के गुण, रोगी का कमरा, बिस्तरा लगाना, नहलाना नाड़ी-परीक्षा, श्वास तथा तापक्रम का लेखा, बर्फ की पोटी का प्रयोग, गर्म पानी के बोतल का प्रयोग ।

वस्त्रों की धुलाई—

सूती कपड़ों को धोना कलफ तथा लोहा करना । ऊनी तथा रेशमी कपड़ों को धोना तथा कलफ एवं लोहा करना ।

पाकविज्ञान—

जौ, साबूदाना, सूजी दही का अम्ल पानी, दाल, चावल तथा खिचड़ी बनाना ।

सहायक पुस्तकें—

१—गृहकला तथा गृहप्रबन्ध, ले० विमला शर्मा तथा मलका वर्मा, प्र० लायल बुकडिपो मेरठ

२—वस्त्र विज्ञान तथा परिधान ले० प्रमिला वर्मा, प्र०—विहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी पटना-३

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

अंग्रेजी

There shall be one paper of 50 marks containing Prose, Translation Grammar and Unseen.

DISTRIBUTION OF MARKS—

A—Prose Text :

(i) Explanation of prose pieces in English or Hindi. 10

(ii) Explanation of prose pieces in English. 5

(iii) Questions from the text. 6

(iv) Word meanings in English or Hindi with illustration of such words in sentences of English. 5

B—Grammar :—

(i) Parsing. 5

(ii) Analysis. 4

C—(i) Translation. 10

(ii) Unseen. 5

PRESCRIBED BOOK :

हाईस्कूल इंगलिश रीडर—उत्तर प्रदेश शासन
(प्रोजलेखन पाठ १ से १० तक) द्वारा प्रकाशित

—: o :—

पूर्वमध्यमा-द्वितीयखण्डम्

१—प्रवेशनियमः—

(अ) पूर्वमध्यमाप्रथमखण्डे उत्तीर्णो द्वितीयखण्डे अन्वयमर्हति ।

(आ) १९५० ईशाब्दतः पूर्वं मध्यमाप्रथमखण्डपरीक्षामुत्तीर्णाश्छात्राः नवीननिर्दशिकानुसारं खण्डपूर्वमध्यमाया द्वितीयखण्डे पूर्वगृहीत 'क' वर्गीयविषयेण सह अनिवार्यविषयं कमप्येकं 'ख' वर्गीयविषयं च गृहीत्वाऽन्वेतुमर्हन्ति ।

२—प्रथमखण्डे यः विषयः गृहीतः स एव द्वितीयखण्डे ग्रहीतुं शक्यते ।

३—पूर्वमध्यमायाः द्वितीयखण्डे अनिवार्यविषयाणां त्रीणि प्रश्नपत्राणि, कवर्गे एकं, खवर्गे च एकमिति पञ्च प्रश्नपत्राणि घण्टात्रयसमाधेयानि भविष्यन्ति । अतिरिक्ते अंग्रेजीविषये एकं प्रश्नपत्रम्, यत् प्रथमखण्डे अंग्रेजीविषये उत्तीर्ण एव ग्रहीतुं शक्नोति । प्रतिप्रश्नपत्रं पञ्चाशदङ्काः । प्रतिखण्डं प्रतिविषयं प्रतिशतं त्रयस्त्रिंशदङ्कानां लाभ उत्तरणप्रयोजको भविष्यति ।

४—पूर्वमध्यमापरीक्षायाः प्रतिखण्डं श्रेणीविभागो न भविष्यति अपितु अन्तिमखण्डमुत्तीर्णे प्रतिखण्डे प्राप्ताङ्कानां योगेन निम्ननिर्दिष्टरीत्या श्रेणी विभागो भविष्यति ।

श्रेणीनिर्धारणम्—

(१) तत्र समष्टौ प्रतिशतं षष्ठिस्तदधिकान् वा अंकान् लब्धवन्तः प्रथमश्रेण्यां निवेशं लप्स्यन्ते ।

(२) समष्टौ प्रतिशतं पञ्चचत्वारिंशतं तदधिकान् वा अंकान् लब्धवन्तः द्वितीयश्रेण्यां निवेशं लप्स्यन्ते ।

(३) समष्टौ प्रतिशतं त्रयस्त्रिंशतं तदधिकान् वा अंकान् लब्धवन्तः तृतीयश्रेण्यां निवेशं लप्स्यन्ते ।

पाठ्यक्रमः—

	पूर्णाङ्काः	उत्तरणाङ्काः
अनिवार्यविषयः संस्कृतकाव्यम्		
प्रथमं प्रश्नपत्रम्—गद्यानुवादनिबन्धानाम्	५०	१७
अनिवार्यविषयः संस्कृतव्याकरणम्		
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्—व्याकरणस्य	५०	१७
अनिवार्यविषयः हिन्दीभाषा		
तृतीयं प्रश्नपत्रम्—गद्यव्याकरणनिबन्धानाम्	५०	१७
वैकल्पिको विषयः 'क' वर्गः		
चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—कवर्गीयविषयस्य	५०	१७
वैकल्पिको विषयः 'ख' वर्गः		
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्—खवर्गीयविषयस्य	५०	१७
ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः		
एकं प्रश्नपत्रम्—अंग्रेजी भाषायाः	५०	१७

अनिवार्यविषयः संस्कृतकाव्यम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम् गद्यानुवादनिबन्धानाम् ५०

(क) शिवराजविषयस्य प्रथमो विरामः १५

प्रकाशकः—व्यासपुस्तकालय, मान-मन्दिर, वाराणसी

(ख) अनुवादः हिन्दीभाषातः संस्कृते १०

संस्कृतभाषातः हिन्दीभाषायाम् १०

(ग) निबन्धः संस्कृतभाषायाम् १५

सहायकग्रन्थः द्वा सुपर्णा ले० —रामजी उपाध्यायः ।

सहायकग्रन्थः १०

१. निबन्धप्रकाशः—ले०—श्रीकृष्णकुमारोऽवस्थी

२. निवन्धादर्शः—ले०–म० म० गिरिधरशर्माचतुर्वेदः

प्रकाशकः—चौखम्भा सं० सिरीज, वाराणसी

अनिवार्यविषयः व्याकरणम्

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् व्याकरणस्य ५०

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते)

मध्यकौमुद्याः कारकप्रकरणम्, समासप्रकरणम्, भ्वादिगणाश्च

अथवा

वालसिद्धान्तकौमुद्याः कारकप्रकरणम्, समासप्रकरणम्, तद्धितप्रकरणम्

ले० व प्र०—ज्योतिःस्वरूपमिश्र, द्वारा–भवदेवमिश्र

बी ४ सेक्रेटरियेट कालोनी, महानगर,

लखनऊ ।

अथवा

भट्टिकाव्यम् ५–८ सर्गाः

अथवा

(केवलं व्याकरणच्छात्रेभ्यः)

तर्कसंग्रह पदकृत्यसहितः अनुमानादिसमाप्तिपर्यन्तः

अनिवार्यविषयः हिन्दी

तृतीयं प्रश्नपत्रम्— ५०

गद्यानुवाद व्याकरणनिवन्धानाम्

प्रष्टव्य--पाठ्यपुस्तक के अंशों का सामान्य अर्थपाठ, सारांश, व्याकरण, भाषा प्रयोग एवं निबन्ध–

(क) पाठ्यपुस्तक–निवन्धायन--सं॰-डा॰ सिद्धनाथ श्रीवास्तव डा॰ बृजनारायण पाण्डेय, प्र॰--कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद। १५

(ख) द्रुतपाठ–कथा प्रवाह–सं॰ द्विजेन्द्रनाथ मिश्र, निर्गुण, (प्र॰–साहित्य भवन प्रा॰ लि॰ इलाहाबाद) १०

(ग) अनुवाद— संस्कृत से हिन्दी ४

हिन्दी से संस्कृत ४

सहायक पुस्तक–सुन्दरकाण्डम् (सर्ग ४ से ६ तक) सं॰ पं॰ श्रीनारायण चतुर्वेदी

(घ) वाक्य विचार तथा वाक्य विश्लेषण ५

सहायक पुस्तक–हिन्दी रचना और अनुवाद ले॰डा॰श्रीप्रसाद डा॰ रामअवध पाण्डेय प्र॰ मोतीलाल बनारसी दास।

(ङ) निबन्ध— १२

सहायक पुस्तक–.सांस्कृतिक साहित्यक निबन्ध"(लेखक वेद कुमारी तथा रामप्रताप त्रिपाठी) निबन्ध सुधार (ले॰ कपिलदेव त्रिपाठी)

वैकल्पिकः

"क" वर्गः

१. ऋग्वेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) सस्वराया ऋग्वेदसंहिताया नियतो भागो यथा— ३५

मण्डलम्—१, सूक्तानि १५८, १६४, १६६, १८७, १८८।

मण्डलम्—२, सूक्तानि १२, २३-२५, ३३, ४१-४३।

मण्डलम्—३, सूक्तानि ७, २७, ३७-३८, ४०-४२, ५५, ५९।

मण्डलम्—४, सूक्तम् ४।

(ख) प्रयोगरत्नानुसारी गणेशपूजनादिपुण्याहवाचनप्रयोगो नान्दीश्राद्धप्रयोगश्च १५

२. शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) शुक्लयजुःसंहितायाः सस्वरायाः ६–११ अध्यायाः ३५

(ख) ग्रहशान्तिप्रयोगः नान्दीश्राद्धान्तः संस्कारभास्करानुसारी

३. कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाः द्वितीयं काण्डम् ३५

(ख) हिरण्यकेशीया आपस्तम्बीया वा पुण्याहवाचनपद्धतिः १५

४. सामवेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) सामवेदसंहितायाः पूर्वार्चिकस्य ३-४ प्रपाठकौ ३५

(ख) ग्रामगेयगानस्य आग्नेय पर्वं सम्पूर्णम्। १५

५. अथर्ववेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः ३-४ काण्डे ३५

(ख) प्रयोगरत्नानुसारिणी वरणान्ता पद्धतिः अथर्ववेदीय-पुण्याहवाचनमधुपर्कप्रयोगसहिता। १५

६. प्राचीनव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) अष्टाध्याय्याः ३-४ अध्यायौ। काशिकाधारेण सूत्र-पदच्छेदविभक्ति-समासार्थोदाहरण-सिद्धिसहितौ। विशेषसूत्रातिरिक्तसूत्रप्रदर्शनं नानिवार्यम्। १०

(ख) नामिकः वैदिकांशवर्जितः अजमेरमुद्रितः १०

(ग) अष्टाध्याय्याः ३-४ अध्यायस्थसूत्रपाठकण्ठस्थीकरणम् १०

७. नव्यव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

सिद्धान्तकौमुदी कारकादिचातुर्र्थिकान्ता।

८. साहित्यम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) चन्द्रालोकः सव्याख्यः सोदाहरणः ३०

(ख) किरातार्जुनीयस्य १-२ सर्गौ २०

९. न्यायः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

(क) न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः उपमानखण्डाद् अवशिष्टो भागः २५

(ख) माथुर्याः पञ्चलक्षणीप्रकरणम् । २५

१०. दर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः अनुमानादिशब्दखण्डान्तो भागः ५०

११. थेरवादबौद्धदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

अम्बट्ठसुत्तं, महासीहनादसुत्तं, तेविज्जसुत्तं (दीघनिकाये-प्रथमोभागः) ५०

१२. ज्यौतिषम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

भास्करीयवीजगणितम् (नवीन-बीजगणितीयतत्तद्विषयकोदाहरणसहितम्) ५०

१३. पुराणेतिहासम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—

१. श्रीमद्भगवद् गीता १-९ अध्याय २५

२. युगपुराणम्—डा० श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी २५

१४. प्राकृत एवं जैनागमः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

नायाधम्मकहाओ

(प्रथमश्रुतस्कन्ध सप्तमअध्ययनम्)

अथवा—पाइय गज्जसंगहो वीयो भाओ (कथा १–१०)
(शब्दार्थं सहिता व्याख्या ३० अंकाः, संस्कृत अथवा हिन्दी भाषया अनुवादः २० अंकाः)

ग्रन्थप्राप्ति—

१. ज्ञाताधर्मकथा—सं० मुनि घासीलल,
प्रकाशक—जैन शास्त्रोद्धार समिति, राजकोट (गुजरात)

२, ज्ञाताधर्मकथा—सं० अमोलक ऋषि, हैदराबाद।

३. पाइय गज्जसंगहो वीयो भाओ—डा० राजाराम जैन,
ह० द० जैन कालेज, आरा (विहार)

पूर्वमध्यमाद्वितीयखण्डम्

वैकल्पिकविषयः ("क" वर्गः)

जैनदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

परीक्षामुखसत्रम् (माणिक्यनन्दिप्रणीतम्)

व्याख्या २०

विषयपरिचयः २०

ग्रन्थकर्तुः परिचयः १०

वैकल्पिकः 'ख' वर्गः

१. नागरिकशास्त्रम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) प्राचीन भारत में राजतत्त्व का उद्भव, राजा का स्थान, कर्तव्ययोग्यता एवं अधिकार।

मन्त्रिपरिषद् तथा प्राचीन भारतीय गणतन्त्र का स्वरूप।

सहायक पुस्तकें—

मनुस्मृति-सप्तम अध्याय

(ख) भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषतायें, नागरिकों के मूल अधिकार, नीतिनिर्देशक तत्त्व एवं संघीय तथा राज्य शासन व्यवस्था का संक्षिप्त अध्ययन।

सहायक पुस्तकें—

१. नागरिक शास्त्र के तत्त्व और भारतीय शासन विधान—जी० सी० सक्सेना।
२. नागरिकशास्त्र और भारतीय-शासन—गोरखनाथ चौबे
३. नागरिक शिक्षा (द्वितीय भाग)—लक्ष्मीशंकर एवं जगदीश नारायण सिनहा

४. उदीयमान नागरिक—रामनरेश मिश्र (हिन्दुस्तान बुक डिपो मथुरा)।

५. कौटिल्य अर्थशास्त्र (सम्बन्धी अध्याय)

२. अर्थशास्त्रम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्   ५०

भारत का आर्थिक भूगोल

१. मनुष्य और उसका वातावरण

२. भारत की प्राकृतिक रचना, चट्टानें मिट्टी का वर्गीकरण, खाद तथा इसका मनुष्य के आर्थिक जीवन पर प्रभाव।

३. जलवायु—सिंचाई की आवश्यकता और उसका महत्त्व, तापक्रम, वर्षा, तथा मानसून का भारत पर आर्थिक प्रभाव।

४. मुख्य उपज—देश के आर्थिक क्षेत्र में उनका स्थान।

५. वन—उनका वर्गीकरण और उनके आर्थिक लाभ।

६. उद्योग धन्धे—वस्तु लोहा एवं इस्पात, चीनी, कोयला, सीमेण्ट तथा तेल उद्योग। इनका सामान्य ज्ञान।

७. पशु धन

८. गमनागमन के साधन

९. जनसंख्या तथा उसका वितरण।

१०. पंचवर्षीय योजनाएँ, भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का सामान्यज्ञान।

सहायक पुस्तकें—

१. आर्थिक भूगोल—भूमिका लेखक—श्री एस०डी० त्रिपाठी, गौतम-ब्रदर्श, कानपुर।

२. भारतीय आर्थिक भूगोल का प्रथम परिचय—डा० ए० एन० अग्रवाल, बोरा एण्ड कम्पनी पब्लिसर्स प्रा० लि०, १७ महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद १

३. किशोर आर्थिक भूगोल—श्री बाबूलाल पाण्डेय तथा ओंकारनाथ शुक्ल, अग्रवाल प्रेस, शिवचरनलाल रोड, इलाहाबाद (उ० प्र०)।

३. इतिहासः

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

भारत का इतिहास (१५१६ से १९३७ तक)। इस काल की प्रमुख घटनाओं और व्यक्तियों का परिचय

सहायक पुस्तकें—

१. भारतवर्ष का इतिहास—डा अवधबिहारी पाण्डेय प्र०—नन्दकिशोर एण्डब्रदर्स, वाराणसी

२. भारतवर्ष का इतिहास—डा० ईश्वरीप्रसाद प्र०—इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद

४—पुराण-इतिहास एवं संस्कृति

पञ्चम पत्रम् ५०

महाभारतकालीन घटनाओं एवं व्यक्तियों का परिचय—

(क) १–पाण्डव एवं कौरवों की उत्पत्ति कथा २-जनमेजय का नागयज्ञ ३-युधिष्ठिर का यज्ञ, ४- पाण्डवों का वनवास, ५-यक्ष-युधिष्ठिर सम्बाद, ६-नलोपाख्यान, ७- शकुन्तलोपाख्यान, ८-कीचकवध कथा ९-मत्स्यवेध, १०- द्रौपदी स्वयम्बर, ११-विदुलोपाख्यान १२-लाक्षागृह, १३-द्यूतक्रीड़ा, १४-कच-देवयानी १५-कर्ण का दान, १६-अभिमन्युवध, १७-भारतयुद्ध १८-भीष्म-परशुराम युद्ध १९-परीक्षित जन्म २०-अश्वमेधं यज्ञ २१-जयद्रथवध २२-भीष्म का उपदेश, २३-पाण्डवों का स्वर्गारोहण २४-चक्रव्यूह, २५-द्रोणाचार्य और भीष्म का स्वर्गवास।

(ख) १-व्यास, २-शान्तनु, ३-भीष्म, ४-धृतराष्ट्र, ५-पाण्डु ६-युधिष्ठिर, ७-भीम, ८-अर्जुन, ९-नकुल और सहदेव, १०-कर्ण, ११-दुर्योधन, १२-दुःशासन, १४-अभिमन्यु, १५-परशुराम, १६-द्रोणाचार्य १७-अश्वत्थामा, १८-विदुर, १९-जयद्रथ, २०-आस्तीकमुनि, २१-श्रीकृष्ण, २२- शकुनि।

(ग) १-द्रौपदी, २-गान्धारी ३-कुन्ती, ४-मत्स्योदरी (योजन-गन्धा) ५-विदुला।

५. भूगोलः

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

(अ) भारत का भूगोल

१—सामान्य एवं प्राकृतिक-स्थिति, विस्तार एवं सीमा, प्राकृतिक बनावट, जल प्रवाह, प्राकृतिक विभाग, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, मिट्टी।

२—उत्पादन एवं उद्योग—वन सम्पदा, कृषि एवं सिचाई, खनिज, नदी घाटी बहुध्येयी योजनायें, प्रमुख उद्योग (लौह, इस्पात, सूती वस्त्र, ऊनी वस्त्र, जूट, रेशम, चीनी, कागज, काँच, सीमेण्ट, चर्म, दियासलाई, पोतनिर्माण स्वचालित वाहन एवं वायुयान निर्माण उद्योग)।

३—यातायात एवं व्यापार—सड़कें रेलमार्ग, जलमार्ग—इनके विकास एवं महत्त्व, औद्यौगिक एवं व्यापारिक नगर तथा पोताश्रय, भारत के आयात-निर्यात।

४—जनसंख्या—विकास एवं वितरण, घनत्व, भौगोलिक वातावरण का प्रभाव।

(ब) भारतीय राज्य—

भारत के राजनीतिक विभाग, राज्यों की स्थिति, सीमा एवं विस्तार, फसलें उद्योग (वृहत एवं लघु) यातायात, नगर जनसंख्या का वितरण।

पञ्चम प्रश्नपत्रम् हिन्दी ५०

पाठ्यपुस्तक—हाईस्कूल गद्य संकलन (हाईस्कूल परीक्षा में निर्धारित) राजकीय प्रकाशन उ० प्र०

संदर्भ व्याख्या— २०

लेखक परिचय और भाषा शैली १०

द्रुतपाठ–रक्तरेखा ले० हरिकृष्ण प्रेमी

प्रका०—कौशाम्बी प्रकाशन इलाहाबाद १२

पाँच रंग, सं०–डा० सिद्धनाथ श्रीवास्तव, प्र०–भारतीय विद्यासंस्थान, जगतगंज, वाराणसी।

आधुनिक हिन्दी साहित्य का परिचय।

गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं तथा लेखकों का सामान्य परिचय। ८

७. नेपाली

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

अङ्कविभाजनम्

(१) व्याख्या	१५
(२) लेखक परिचय	५
(३) अनुबाद संस्कृतबाट नेपाली	५
(४) अनुवाद नेपालीबाट संस्कृत	५
(५) सहायक ग्रन्थवाट	१०
(६) पाठ्यांशबाट प्रश्न	१०

पाठ्यपुस्तक नामानि :—

(क) नेपाली गद्यचन्द्रिका भाग १, लेखक—दिनेशचन्द्र रेग्मी—प्र०–रेग्मीवन्धु, नेपाली पुस्तक सदन, काठमांडू।

(ख) प्रबन्धलता (अध्ययन हाम्रातीत मनीषी, गौतम बुद्ध, र० भानुभक्तको दार्शनिक पक्ष, नेपाल र संस्कृत शिक्षा अंशमात्र)।
लें०—डिल्लीराम तिंसिना—श्रीराम पुस्तकालय, ताप्लेजुङ् नेपाल।

(ग) नेपाली सामाजिक कहानी (अन्तरे भाग)
ले०—भीमनिधि तिवारी,
तिवारी प्रकाशन, काठमाण्डू नेपाल।

सहायक-ग्रन्थ :—

१—मध्यचन्द्रिका, ले०—सोमनाथ सिग्देल—पुस्तक संसार, भोटाहिटी, काठमाण्डू।

२—रचनाकेशर, ले०-गोपाल पाण्डे, साझा प्रकाशन, काठमाण्डू। नेपाल।

३—अनुवाद चन्द्रिका भाग २—सोमनाथ सिग्देल, पुस्तक संसार, काठमाण्डू, नेपाल।

८. विज्ञानम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

सूचना--विज्ञान के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से अधिक हो जिससे विद्यार्थियों को सिद्धान्त तथा व्याख्या बोधगम्य हो। पाठ्यक्रम अध्यापन में इस वात पर ध्यान दिया जाय कि— विज्ञान सम्बन्धी नियमों को वह समझ सकें एवं अपनी चिन्तनशक्ति तथा विचारधाराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से करें। अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं। जवतक प्रयोगात्मक परीक्षा सम्भव नहीं हो—लिखित प्रश्नों में से दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों। प्रयोगात्मक पुस्तिका रखना आवश्यक है।

भौतिक शास्त्र—

चुम्बकत्व, चुम्बक के नियम, ध्रुव की इकाई, चुम्बक की वल रेखायें प्रदर्शन, चुम्बकीय प्रेरण, चुम्बकत्व और उसके तत्त्व। विद्युत, स्थिर-विद्युत्प्रेरण, इलक्ट्रोफोरस तथा अन्य विद्युत्-यन्त्र।

धारा विद्युत्—प्रारम्भिक सेल के दोष और उनका निवारण; उदासीन सेल, लैकलंकी सेल, शुष्कसेल, धारा विद्युत् का रूप; विद्युत् वाहक वल, विभव, विभवान्तर प्रतिरोध, ओम के नियम, विद्युत् धारा के रासायनिक नियम, विद्युत् धारा का तापीय प्रभाव।

विद्युत् सरकिट—फ्यूज, विद्युत् मोटर, विद्युत् पंखा, विद्युत् प्रेरणा।

ध्वनि—ध्वनि का तरंग, परावर्तन, वेग, संतरण इत्यादि। सुरीली ध्वनि के विशिष्ट गुण। ग्रामोफोन का सिद्धान्त।

रसायन शास्त्र—

नमक का अम्ल या हाईड्रोकोलिक, अम्ल गैस और क्लोरीन। शोरा और शोरे का अम्ल (नाइट्रिक अम्ल), नौसादर या अमोनियम क्लोराइड तथा अमोनिया। गन्धक, सल्फर डाईआक्साइड, सल्फर डाइआक्साइड और गन्धक का अम्ल।

अम्ल क्षार एवं लवण सोडियम हाइड्रोक्साइड, सोडियम क्लोराइड सोडियम कार्वोनेट और सोडियम वाई कार्वोनेट, चूना, बुझा हुआ चूना चूने का जल कुछ धातु तथा मिश्र-धातु, ताँबा, पारा, लोहा तथा मिश्र धातु पीतल कासां, का अध्ययन। बेंजीन पैट्रोलियम, महत्त्वपूर्ण यौगिक।

रासायनिक प्रयोग के सिद्धान्त और परमाणुवाद का सामान्य-ज्ञान। परमाणु-भार और अणुभार का सामान्य ज्ञान। रासायनिक तुल्याक और संयोजक शक्ति या संयोजकता का सामान्य ज्ञान। संकेत सूत्र और समीकरण के सम्बन्ध में साधारण ज्ञान।

रासायनिक गणना का सामान्य ज्ञान।

जीव विज्ञान—

जीवविज्ञान के दो मुख्य भाग, वनस्पति विज्ञान तथा उसकी

सफलता, लाभ तथा उपयोगिता, वनस्पति विज्ञान शिक्षा का उपाय प्राकृतिक तथा प्रायोगिक अध्ययन एवं उपयोगिता।

बीज एकदल तथा द्विदल संरचना तथा अंकुरण।

पौधों में जड़ तना तथा पत्तियों के विभिन्न अंगों के विषय में तथा उनके कार्य के विषय में साधारण ज्ञान। जड़ तथा तने में रूपान्तर तथा उनके कार्य। जीवाणु, काई या शैवाल फंजाई से लाभ तथा इनकी उपयोगिता (ऐण्टीवायोटिक) एवं अन्यान्य व्यावहारिक उपयोग या आधुनिक माइक्रोवायोलोजी का उपयोग।

प्रायोगिक—

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को दिखाये जाने चाहिये—

चुम्वक के गुणों को दिखाना। सूई को चुम्वक वनाना, चुम्वकीय वलरेखाओं को प्रदर्शित करना। इलेक्ट्रोफोरस का कार्य-विधि दिखाना, सीसे एवोनाइट छड़ को विद्युन्मय वनाना। प्रारम्भिक सेल तैयार करना, एवं कार्यविधि दिखाना, ओम के नियम दिखाना।

अम्ल-क्षार तथा लवण के गुणों को देखना। मिश्रणको अलग करना, वालू, सोडा कपूर, गन्धक, लोहचूर्ण, वुरादा आदि का किसी वन्द वर्तन में मोमबत्ती जलाकर हवा के अवयव को दिखाना।

लोहा, कोयला, ताँवा, गन्धक के गुणों को देखना। एक दल एवं द्विदल बीजों का अध्ययन करना तथा उनके अंकुरण देखना। विभिन्न वर्ग के फलों का अध्ययन करना, जड़ तथा तने का अन्तर ज्ञात करना। (मौरफौलाजी तथा एनाटमी) पौधों के फिजियालोजी में श्वसन, फोटोसिनिथिसिस एवं ट्रांसपिरेशन का अध्ययन करना।

सहायक ग्रन्थ—

१—हाईस्कूल भौतिकशास्त्र–पं० गङ्गाशरणभार्गव पं० मनोहरलाल भार्गव, प्र०—नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी
२—सरलभौतिक—के० कुमार एवं भार्गव
३—हाईस्कूलभौतिकी—शम्भुदयाल अग्रवाल
४—हाईस्कूल भौतिकविज्ञान—आर० के० बाउन्ट्रा
५—प्रारम्भिकभौतिकी—बी० एल० कुलश्रेष्ठ
६–हाईस्कूल रसायनशास्त्र–पं० गङ्गाशरण भार्गव पं० मनोहरलाल भार्गव प्र०–नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स वाराणसी।
७—सरल रसायन—के० कुमार एवं भार्गव
८—सरल रसायन विज्ञान—एस० पी० टण्डन
९—प्रारम्भिक वनस्पति विज्ञान—डा० रामकुमार सक्सेना, डॉ० कामेश्वर सहाय भार्गव, प्र०–नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स वाराणसी
१०—वनस्पति विज्ञान—आर० डी० विद्यार्थी
११—हाईस्कूल वनस्पति विज्ञान—आर० के० बाउन्ट्रा
१२—प्रारम्भिक जीव-विज्ञान भाग २–एस० पी० टण्डन
१३—हाईस्कूल जीवविज्ञान—डा० एस० के० गोस्वामी एवं अग्रवाल, मेरठ

अथवा

गणितम्

(जीवविज्ञान के विकल्प में)

(क) प्रयोगात्मक ज्यामिति—

सरलरेखा तथा कोणों का समद्विभाजन।
सरलरेखा पर समकोण की रचना।
निर्दिष्ट कोण के तुल्य कोण की रचना।

निर्दिष्ट सरलरेखा के समानान्तर सरलरेखा बनाना ।

पर्याप्त निर्दिष्ट आँकड़ों से त्रिभुज और चतुर्भुजों की रचना के सरल उदाहरण ।

निर्दिष्ट सरल रेखा को अभीष्ट तुल्य भागों में बाँटना ।

निर्दिष्ट बहुभुज के क्षेत्रफल के तुल्य क्षेत्रफल वाले त्रिभुज की रचना वृत्त को स्पर्शियों की तथा दो वृत्तों की उभयनिष्ठ स्पर्शियों की रचना ।

पर्याप्त आँकड़ों से वृत्तों की रचना के सरल उदाहरण ।

निर्दिष्ट वृत्त के अन्तः वा वहिः समभुज त्रिभुज, वर्ग, पञ्च-भुज, षड्भुज, और अष्टभुज की रचना ।

(ख) सैद्धान्तिक-ज्यामिति —

१—त्रिभुजों की अनुरूपता के साध्य

२—त्रिभुजों एवं चतुर्भुजों से सम्बन्धित सामान्यज्ञान, वृत्तसम्बन्धी सामान्यज्ञान

९. गणितम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(अ) ज्यामिति— ४०

ज्यामिति के पाठक्रम में सैद्धान्तिक तथा प्रयोगात्मक और संख्यात्मिक ज्यामिति रहेगी। परीक्षार्थियों को दोनों में उत्तर लिखने आवश्यक होंगे। प्रयोगात्मक ज्यामिति में पटरी, परकार, समकोणक (गुनिये) चाँदा तथा पेंसिल अपने पास से लाने होंगे। सैद्धान्तिक ज्यामिति में कोई भी तर्कसंगत उत्पत्ति मान्य होगी तथा उनके लिये आकृति बनाने की परीक्षार्थियों को अनुमति होगी। प्रश्नपत्र में प्रमेय, निर्मेय तथा तदाधारित प्रश्न पूछे जायेंगे ।

[१] प्रयोगात्मक ज्यामिति—

निर्दिष्ट वहुभुज के तुल्य क्षेत्रफल वाले त्रिभुज की रचना। निर्दिष्ट आयात के तुल्य क्षेत्रवाले वर्ग की रचना। वृत्त की स्पर्शियों की तथा दो वृत्तों की उभयनिष्ठ स्पर्शियों की रचना,

पर्याप्त आकड़ों से वृत्तों की रचना के सरल प्रश्न

निर्दिष्ट वृत्त के अन्तःवहिः समभुज, त्रिभुज, वर्ग, पंचभुज, षड्भुज और अष्टभुज की रचना करना।

(२) सैद्धान्तिक ज्यामिति—

यदि किसी त्रिभुज की भुजा का सम्मुख कोण अधिक, सम अथवा न्यून हों तो उस पर वना वर्ग अन्य दो भुजाओं पर बने वर्गों के योग से क्रमशः बड़ा, वरावर तथा कम होगा। असमता की परिस्थिति में अन्तर एक भुजा तथा दूसरी भुजा के उस पर बने विक्षेप द्वारा बने आयत के दुगुने के तुल्य होगा।

किसी भी त्रिभुज में दो भुजाओं पर बने वर्गों का योग तीसरी भुजा के आने पर बने वर्ग तथा उसे समद्विभाजित करने वाली मध्य रेखा के वर्ग के योग से दूना होता है।

निधियाँ—

उस विन्दु की निधि जो दो स्थितिबिन्दुओं से सदा तुल्य दूरी पर रहती है स्थिरबिन्दुओं को मिलानेवाली सरलरेखा की लम्बरूप में अर्धक सरल रेखा है।

दो छेदक सरल रेखाओं से समदूरी पर स्थित बिन्दु की निधि वे दो सरल रेखायें होती हैं जो उन छेदक रेखाओं से बने कोणों को अर्जित करती हैं।

यदि कोई केन्द्रगामी सरल रेखा व्यास के अतिरिक्त जीवा को आधा करे तो वह उस पर लम्ब होती है। विलोमतः केन्द्रगामी लम्ब

रेखा जीवा को आधा करती है। उन तीन विन्दुओं में से जो एक रेखा पर स्थित नहीं है वह एक तथा केवल एक वृत्त ही कहा जा सकता है।

तुल्य वृत्तों में (अथवा एक ही वृत्त में) (१) यदि दो चाप केन्द्रों पर तुल्य कोण छेके तो वे परस्पर तुल्य होंगे। (२) विलोमतः यदि दो चाप तुल्य हो तो वे केंद्र पर तुल्य कोण छेकेंगे।

तुल्य वृत्तों (अथवा एक ही वृत्त में) (१) यदि दो जीवायें तुल्य हों तो उनके चाप भी तुल्य होते हैं। (२) विलोमतः यदि दो चाप तुल्य हों तो उनकी जीवायें भी तुल्य होती हैं।

वृत्त में तुल्य जीवायें केन्द्र से समान दूरी पर होती हैं। इसका विलोम वृत्त की किसी स्पर्शरेखा के स्पर्शविन्दु से जाननेवाली त्रिज्या उस पर लम्ब होती है। यदि दो वृत्त परस्पर स्पर्शी हो तो स्पर्शविन्दु उनके केन्द्रों को मिलानेवाली सरल रेखा पर स्थित होती है।

किसी चाप द्वारा केन्द्र पर छेका गया कोण उसी द्वारा शेष परिधिस्थ किसी विन्दु पर छेके गये कोण का दूना होता है।

एक ही वृत्तखण्ड के कोण तुल्य होते हैं। यदि दो विन्दुओं को मिलानेवाली सरलरेखा एक ही ओर के दो अन्यबिन्दुओं पर तुल्य कोण छेकती हैं तो चारों विन्दु एक वृत्तस्थ होंगे।

वृत्तार्द्ध का परिधिकोण समकोण होता है। यदि वृत्तखण्ड वृत्तार्द्ध से बड़ा हो तो उसकी परिधिकोण समकोण से न्यून तथा यदि वृत्तखण्ड वृत्तार्द्ध से न्यून हो तो उसका परिधिकोण समकोण से बड़ा होता है।

वृत्तान्तर्लिखित चतुर्भुज के सम्मुख कोण पूरक होते हैं। इसका विलोम यदि कोई सरलरेखा किसी वृत्त को स्पर्श करती है तथा स्पर्श विन्दु से कोई जीवा खींची गई है, तो स्पर्शी और जीवा से बने हुए कोण एकान्तर चापखण्डों के परिधिकोणों के तुल्य होते हैं।

यदि वृत्त की दो जीवायें वृत्त के अन्तः अथवा वहिः एक दूसरे को काटे तो एक के खण्डों से बना आयत दूसरे के खण्डों से बने आयत के तुल्य होता है।

(ब) त्रिकोणमिति १०

त्रिकोणमितिक फलनों (निष्पत्तियों) की परिभाषाएँ तथा उनके परस्पर सम्बन्ध ०, ३०, ४५, ६०, ९० अंश के कोणों तथा उनके त्रिकोणमितिक निष्पत्तियों के मान। दो कोणों के योग तथा अन्तर की कोणमितिक निष्पत्तियों के सूत्र तथा उनका प्रयोग। दूरी तथा ऊँचाई के सरल प्रश्न।

१०. पाली

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) धम्मपदम् २०

यमकवग्गो, अप्पमादवग्गो, पापवग्गो, दण्डवग्गो, जरावग्गो

(ख) उदानं २०

बोधिवग्गो, मुचलिकवग्गो

अनुवादः—हिन्दीभाषातः पालिभाषायाम् १०

ग्रन्थ—

पालिचन्द्रोदय, प्र०–नालन्दा प्रकाशन, नालन्दा

११. प्राकृतम्

पञ्चमप्रश्नपत्रम् ३०

(क) रचनानुवादः व्याकरणं च

(ख) प्राकृतगद्यपाठाः २०

(प्राकृत स्वयं शिक्षक २३–४३ पाठाः तथा च
गज्जसंगहो १, ५, ९, १०)

सहायक गन्थः—

१. प्राकृत स्वयं शिक्षक—राजस्थान प्राकृत भारती संस्थान, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर ।

२. श्री प्राकृत विज्ञान पाठमाला—सरस्वती पुस्तक भण्डार, रतनपोल, हाथीखाना अहमदाबाद ।

१२. समाजशास्त्रम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

भारतीय समाज व्यवस्था—

चार पुरुषार्थ—धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष ।
वर्ण-व्यवस्था
आश्रम व्यवस्था । संस्कार
जाति व्यवस्था की विशेषताएँ । जाति तथा वर्ण
संयुक्त परिवार व्यवस्था की विशेषताएँ
हिन्दू विवाह की विशेषताएँ

भारतीय सामाजिक समस्याएँ-विवाह की समस्याएँ, जातिवाद, सम्प्रदायवाद, निर्धनता तथा बेकारी ।

सहायक पुस्तकें—

भारतीय समाज और संस्कृति—कैलाशनाथ शर्मा
भारतीय समाज और सामाजिक संस्थाएँ—रामनारायण सक्सेना
सामाजिक विघटन—मदनमोहन सक्सेना ।

१३. तुलनात्मकदर्शनम्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्

दर्शन का स्वरूप, भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन की विशेषतायें भारतीय दर्शन के विभिन्न विभाग, वैदिक और अवैदिक दर्शनों का संक्षिप्त विवरण, चार्वाक न्याय वैशेषिक—सांख्ययोग—मीमांसा वेदान्त का परिचय। पाश्चात्य दर्शन के ग्रीक विचारों का विकासात्मक स्वरूप तथा आधुनिक दर्शन की प्रवृत्तियाँ, देकार्त, लाक एवं काण्ट के संक्षिप्त विचार।

पाठ्यग्रन्थ —

भारतीय दर्शन	श्री दत्त एवं चटर्जी
पाश्चात्य दर्शन	श्री चन्द्रधर शर्मा

१४. संगीतम्

(केवल बालिकानां कृते)

कण्ठसंगीत

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्　　५०

प्रायोगिक (कण्ठ द्वारा अभ्यास)　　३०

१. स्वरज्ञान—सात शुद्ध और पाँच विकृत स्वरों का अभ्यास शिक्षक द्वारा गाये जाने पर स्वर तथा रागों को पहचानना।

२. कुछ कठिन अलंकारों का अभ्यास।

३. तानपुरा मिलाने का साधारण ज्ञान।

४. रागज्ञान—निम्नलिखित रागों में एक एक छोटा ख्याल आलाप, तान सहित तथा किसी एक राग में ध्रुपद राग

विहाग एवं भैरवी ।
निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल तान, आलापरहित तथा किसी एक राग में लक्षणगीत और सरगम जानना । काफी, भूपाली और बागेश्वरी ।

५. निम्नलिखित तालों को ठाह और दुगुन लयों में बोलना ताल, त्रिताल, झपताल, चौताल और कहरवा ।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

१. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या
श्रुति एवं नाद की विशेषतायें, घग (वर्गस्वर), वर्ज्य, वक्र-स्वर गीत और मात्रा थाट और रागों की उत्पत्ति । ध्रुपद, टप्पा, तरणा भजन ।

२. पाठ्यक्रम में आये हुए रागों का सैद्धान्तिक परिचय ।

३. पाठ्यक्रम में आये तालों को ठाह और द्विगुणलयों में लिखना।

४. पाठ्यक्रम में आये छोटे ख्याल और ध्रुपद को स्वरलिपि में लिखना ।

५. सरल स्वरसमूहों द्वारा रागों को पहचानना ।

६. आवाज की उत्पत्ति और उसको मधुर बनाने के साधन ।

७. श्री विष्णु दिगम्बर तथा श्री भातखण्डे की जीवनी पर प्रकाश।

वाद्य-सङ्गीत (सितार)

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

प्रायोगिक— ३०

१. मुख्य राग—विहाग, भैरवी, इन रागों की एक-एक रजाखानी गत तान तोड़ों सहित ।

२. वैणराग—आसावरी, काफी, बागेश्वरी इन रागों की एक-एक रजाखानी गत तान तोड़ों रहित।

३. छोटे-छोटे स्वरसमुदाय द्वारा राग पहचानने का अभ्यास।

४. त्रिताल चारताल, दादरा, कहरवा, इन तालों के ठेकों को ताली देते हुए ठाह तथा दुगुन में बोलने का अभ्यास।

सैद्धान्तिक—(लिखित प्रश्नपत्र)   २०

निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान—

१. संगीत, ध्वनि, ध्वनि की उत्पत्ति, वर्ज्यस्वर, वक्रस्वर, मीड़ गत, तान, तोड़े, ठेका, जमजमा, घसीट, झाला, जोड़, मात्रा, लय, ताल, समय खाली, ठेका, आवर्तन, बोल, सितार के बोल जैसे—दा दिर दा रा इत्यादि, लयों के प्रकार, कम्पन।

२. पाठ्यक्रम के सभी रागों को स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास

३. भातखण्ड-स्वरलिपि-पद्धति का ज्ञान

. पाठ्यक्रम के सभी रागों का रागपरिचय

५. लिखित स्वरों द्वारा राग पहचानने का अभ्यास

६. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन-चरित्र
तानसेन, अमीर-खुशरू

७. निबन्ध
संगीत में लय तथा ताल का महत्व। संगीत का जीवन पर प्रभाव।

वाद्यसङ्गीत (तबला)

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्   ५०

प्रायोगिक—   ३०

१. लयज्ञान—हाथ से ताली देकर ठाह दुगुन लयों को दिखलाना हाथ से ताली देकर, टुकड़ा परन और कायदा को वोलना
२. निम्नलिखित शब्दों को तबले पर वजाना
क्टिटक, धुमकिट, क्रान्धा या कान्धाधा, धिनगिन गिदा गिन, क्रधा थू, घिड़नग
३. तालज्ञान—त्रिताल, झपताल, एकताल तालों में एक पेशकारा चार टुकड़ा चार तिहाई और एक चक्करदार टुकड़ा जानना आवश्यक है। ताल चौताल में दो परन तथा एक चक्करदार परन जानना।
४. गीतों के साथ संगत करने का अभ्यास
५. तबला मिलाने का साधारण ज्ञान
६. उपर्युक्त तालों को ठाह और द्विगुणलयों में वोलना

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

१. पाठ्यक्रम में आये तालों को ठाह और द्विगुणलयों में लिखना
२. अपने वाद्य (तबला) का चित्र बनाकर अङ्गों को बतलाना
३. तबले के वाजों का वर्णन (दिल्ली, अजराणा, पंजाव तथा पूरव)
४. श्री भातखण्डे और श्री विष्णु दिगम्बर की ताललिपि-पद्धति की तुलना
५. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी—
श्री विष्णु नारायण भातखण्डे और विष्णु दिगम्बर

१५. गृहविज्ञानम्

(केवल बालिकानां कृते)

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

सैद्धान्तिक— ३०

शरीर-विज्ञान—श्वासप्रक्रिया, रेचन। मानव-शरीर-रचना, पाचन संस्थान, श्वाससंस्थान, रक्तसंचालन, उत्सर्जनसंस्थान

स्वास्थ्य-विज्ञान—वैयक्तिक स्वच्छता तथा बीमारियों से बचने के उपाय

गृह-विज्ञान—कूड़ा-करकट तथा मलमूत्र को हटाना गृहस्वामिनी के कर्तव्य

प्रायोगिक— २०

बच्चों की बीमारियाँ। कृत्रिम श्वासक्रिया का उपयोग। साधारण विषैली वस्तुओं के प्रभाव को दूर करने वाली औषधियों का ज्ञान। सर्पदंश का उपचार। व्यक्तियों को सुरक्षित स्थान में ले जाना। हाथ पर घायलों को ले जाना।

सिलाई—फँसी काम फ्राक, बच्चों के वस्त्र

फैन्सी सिलाई। तकिये का गिलाफ, मेजपोश, चायपात्र का आवेरण।

वस्त्रों की धुलाई—सूती रेशमी तथा ऊनी वस्त्रों की धुलाई तथा कलफ-लोहा करना

पाक-विज्ञान—जौ, साबूदाना, सूजी, दही का पानी, दाल खिचड़ी तथा चावल पकाना

सहायक पुस्तकें:—

१—गृहकला तथा गृहप्रबन्ध, ले०—विमला शर्मा, तथा मलका वर्मा, प्र०—लायल बुकडिपो, मेरठ

२—वस्त्रविज्ञान एवं परिधान, ले०—प्रमिला वर्मा, प्र०—बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना ३

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

अंग्रेजी

There shall be one paper of 50 marks. The content and distribution of maks would be as follows:—

A—PROSE TEXT :

(i) Explantion of prose pieces in English or Hindi. 10

(ii) Explanation of prose pieces in English. 5

(iii) Questions from the text. 6

(iv)Spelling. 5

B—ESSAY WRITING. 10

C—Filling in gaps involving tenses, voices, Sequence of tenses and prepositions. 5

D—(i) Punctuation. 4

(ii) Narration, 5

PRESCRIBED BOOKS:

हाइस्कूल इंगलिश रीडर—उत्तरप्रदेशशासन द्वारा प्रकाशित
(प्रोजलेखन ११ से २० तक)

–o–

उत्तरमध्यमापरीक्षा

१—प्रवेशनियमः

उत्तरमध्यमापरीक्षायां वक्ष्यमाणपरीक्षासूत्तीर्णाः अन्वयमर्हन्ति—

(अ) पूर्वमध्यमापरीक्षा —सम्पूर्णानन्दसंस्कृतविश्वविद्यालयस्य ।

(आ) पूर्वमध्यमापरीक्षा–काशिकराजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयस्य।

(इ) ज्ञानश्रीपरीक्षा—राजकीयसंस्कृतमहाविद्यालयस्य ।

(ई) पूर्वमध्यमापरीक्षा—(नवीनपाठचक्रमेण) विहारसंस्कृतसमितेः ।

(उ) पूर्वमध्यमापरीक्षा—(नवीनपाठचक्रमेण) कामेश्वर सिंह-दरभंगा सं० वि० वि० ।

(ऊ) हाईस्कूलपरीक्षा —(संस्कृतविषयसहिता) उत्तरमाध्यमिकशिक्षापरिषदः । किन्तु संस्कृते प्रतिशतं पष्ठचङ्कानां लाभः अनिवार्यः ।

(ए) कस्यापि प्रादेशिकशासनस्य शिक्षाविभागद्वारा प्राप्तमान्यताकसमितेः, विश्वविद्यालयस्य, तत्समकक्षपरीक्षा वा किन्तु संस्कृते प्रतिशतं पञ्चचत्वारिंशद लाभः अनिवार्यः ।

विशेष :—

(क) पूर्वमध्यमायां गृहीतः 'क' वर्गीयो विषयः उत्तरमध्यमायां कवर्गीयो विषयो भविष्यति, किन्तु कमपि, क-वर्गीयं विषयं गृहीत्वोत्तीर्णं पूर्वमध्यमापरीक्षः संस्कृतेन सह हाईस्कूल परीक्षां तत्समकक्षपरीक्षां वोत्तीर्णः केवलं प्राचीनव्याकरण—साहित्य-ज्योतिष-पुराणेतिहासथेरवादबौद्धदर्शनविषयेषूत्तरमध्यमायां प्रवेशमर्हति ।

(ख) पूर्वमध्यमायां गृहीतः 'ख' वर्गीयो विषयः उत्तरमध्यमायाम् परिवर्त्तितो भवितुमर्हति, किन्तु कस्यामपि परीक्षायां प्रथमखण्डे गृहीतः कोऽपि विषयः द्वितीयखण्डे परिवर्त्तितो भवितुं नार्हति ।

(ग) परन्तु ये छात्राः पूर्वमध्यमापरीक्षायां तत्समकक्षपरीक्षायां वा विज्ञानविषयं न गृहीतवन्तः स्युः, ते उत्तरमध्यमाकक्षायां विज्ञान-विषयं गृहीत्वा प्रवेशं नार्हन्ति ।

२—इयं परीक्षा द्वयोः वर्षयोः पूर्णा भविष्यति । अस्यां परीक्षायां खण्डशः परीक्षार्थिनः अन्वेतुमर्हन्ति ।

३—उत्तरमध्यमापरीक्षायां वक्ष्यमाणेषु अनिवार्य 'क' वर्गीय—'ख' वर्गीयेषु पञ्चसु विषयेषु घण्टात्रयसमाधेयानि, प्रतिखण्डं षट्प्रश्न-पत्राणि, ऐच्छिकेऽतिरिक्तविषये प्रतिखण्डम् एकं प्रश्नपत्रम्, प्रति-प्रश्नपत्रं ५० पञ्चाशत् पूर्णाङ्काः भविष्यन्ति । प्रतिखण्डं प्रतिविषयं समष्टौ प्रतिशतं त्रयस्त्रिंश-(३३) दंकानां लाभः उत्तरणप्रयोजको भविष्यति ।

४—उत्तरमध्यमायाः प्रथमखण्डे श्रेणीविभागो न भविष्यति ।

अनिवार्यविषयः

पाठ्यक्रमः

१—संस्कृतकाव्यम्
२—संस्कृतव्याकरणम्
३—हिन्दीभाषा

वैकल्पिकः विषयः 'क' वर्गः

निम्नलिखितस्यैकस्य कवर्गान्तर्गतविषयस्य ग्रहणमनिवार्यम् ।

१-ऋग्वेदः २-शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः) ३-कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः) ४-सामवेदः ५-अथर्ववेदः (शौनकशाखीयः)

६—प्राचीनव्याकरणम् ७—नव्यव्याकरणम ८—साहित्यम् ९—न्यायः १०—दर्शनम् ११—थेरवादबौद्धदर्शनम १२—ज्यौतिषम् १३—पुराणेतिहासम् ।

वैकल्पिकः विषयः—'ख' वर्गः

(निम्नलिखितखवर्गान्तर्गतस्यैकस्य विषयस्य ग्रहणमनिवार्यम्)

१—नागरिकशास्त्रम् २—अर्थशास्त्रम् ३—इतिहासः ४—भूगोलः ५—हिन्दीभाषा—६—नेपालीभाषा ७—पालीभाषा ८—प्राकृतभाषा ९—विज्ञानम् १०—गणितम् ११—तुलनात्मकदर्शनम् १२—समाजशास्त्रम् १३—सङ्गीतम्—कण्ठसङ्गीत-तवलावाद्यसङ्गीत-सितारवाद्य-सङ्गीतेष्वन्यतमम् (केवलं वालिकानां कृते) १४—गृहविज्ञानम् (केवलं बालिकानां कृते) ।

ऐच्छिकोऽतिरिक्तो विषयः

अंग्रेजी

अंग्रेजी भाषायां प्रतिखण्डम् एकं प्रश्नपत्रं भविष्यति यत् पूर्वमध्यमायां तत्समकक्षपरीक्षायां वा अंग्रेजीविषयं गृहीत्वा उत्तीर्णा एव परीक्षार्थिनः स्वेच्छया ग्रहीतुं प्रभवन्ति, उत्तीर्णतायां प्रमाणपत्रे तदुल्लेखो भविष्यति । प्रथमखण्डे अतिरिक्त-विषये उत्तीर्णा एव द्वितीयखण्डे अन्वेतुमर्हन्ति ।

-: ० :-

उत्तरमध्यमा-प्रथमखण्डम्

पाठचक्रमः

	पूर्णाङ्काः	उत्तीर्णाङ्काः
अनिवार्यविषय—संस्कृतकाव्यम्		
प्रथमं प्रश्नपत्रम्—नाटकालङ्कारनिवन्धानाम्	५०	१७
अनिवार्यविषय—संस्कृतव्याकरणम्		
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्—व्याकरणस्य	५०	१७
अनिवार्यविषय—हिन्दीभाषा		
तृतीयं प्रश्नपत्रम्—हिन्दीगद्यव्याकरणनिवन्धानाम्	५०	१७
वैकल्पिकः विषय—'क' वर्गः		
चतुर्थं प्रश्नपत्रम् 'क' वर्गस्य	५०	} ३३
पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ,,	५०	
वैकल्पिकः विषयः 'ख' वर्गः		
षष्ठं प्रश्नपत्रम् 'ख' वर्गस्य	५०	१७
ऐच्छिकोऽतिरिक्तो विषयः		
एकं प्रश्नपत्रम् अंग्रेजी भाषायाः	५०	१७

अनिवार्यविषयः—संस्कृतकाव्यम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्—नाटकालङ्कारनिवन्धानाम् ५०

(क) छत्रपतिसाम्राज्यम् ले०—मूलशंकर-मणिकलाल-याज्ञिकः
देवभाषा प्रकाशन, दारागंज, इलाहावाद । २५

(ख) अलङ्काराः १५

अनुप्रासः यमकम्, श्लेषः, उपमा, रूपकम्, उत्प्रेक्षा, अतिशयोक्तिः, दृष्टान्तः, विरोधाभासः, काव्यलिङ्गम्, विभावना, विशेषोक्तिः स्वभावोक्तिः, अर्थान्तरन्यासः, सङ्करः, संसृष्टिश्चेति षोडशालङ्काराणां सोदाहरणानि लक्षणानि चन्द्रालोकानुसारीणि अथवा साहित्यदर्पणानुसारीणि ।

सहायकग्रन्थौ

१. अलङ्कारसारमञ्जरी, म० म० नारायणशास्त्रिखिस्ते कृता

२. अलङ्कारमञ्जूषा, लक्ष्मीकान्तदीक्षितकृता

प्रकाशकः—नारायण प्रकाशन, इलाहाबाद ।

(ग) निबन्धः (संस्कृतभाषायाम्) १०

सहायकग्रन्थौ—

१. प्रबन्धपारिजातः—श्रीरामचन्द्रमिश्रविरचितः

२. टालस्टायकथासप्तकम्, भाषान्तरकारः, डॉ० वागीशशास्त्री

प्रकाशकः — चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी ।

अनिवार्य विषयः—संस्कृतव्याकरणम्

द्वितीयं प्रश्नपत्रम् व्याकरणस्य ५०

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते)

मध्यकौमुदी—अदादिगणमारभ्य लकारार्थान्ता ।

अथवा

बालसिद्धान्त कौमुदी —भ्वादिगणमारभ्य क्र्यादिप्रकरणान्ता

ले० प्रकाशक—ज्योतिः स्वरूपमिश्र द्वारा–भवदेवमिश्र

बी० कालोनी ४, सेक्रेटरियेट, महानगर, लखनऊ ।

अथवा

भट्टिकाव्यम् १४–१७ सर्गाः

विशेषः—प्रश्नपत्रनिर्माणकाले भट्टिकाव्यतः २५ अंकानां व्याकरणसम्बन्धिप्रश्नाः अनिवार्यरूपेण प्रष्टव्याः ।

अथवा

(केवलं व्याकरणच्छात्रेभ्यः)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः प्रत्यक्षखण्डस्य पृथिवीलक्षणान्तो भागः

अनिवार्य—विषयः हिन्दी

हिन्दीगद्यानुबादव्याकरणनिवन्धानाम्—

तृतीयं प्रश्नपत्रम् ५०

प्रष्टव्य–पाठ्यपुस्तक के अंशों का सामान्य अर्थ, पाठ सारांश, व्याकरण भाषा संवन्धी प्रयोग एवं निबन्ध ।

पाठ्यपुस्तकः—१ निबन्ध मंजूषा–सं०–इन्द्रनाथ चौधरी १८
प्र०–नेशनल पब्लिशिङ्ग हाउस नई दिल्ली

२ (क) नाट्ययुग–सं०–कुंवरजी अग्रवाल प्रका०–विश्वविद्यालय प्रकाशन चौक वाराणी ।

(ख) द्रुतपाठ—संस्कृत नाटक और नाटककार, लेखकः–डा० रामअवधपाण्डेय एवं रविनाथ मिश्र (भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी) ५

(ख) अनुवाद—संस्कृत से हिन्दी ५

हिन्दी से संस्कृत ५

सहायक पुस्तक—सुंदर काण्ड (सर्ग ७ से ९ तक) ५

(सं०-पं० श्री नारायण चतुर्वेदी)

(ग) व्याकरण—भाषा प्रयोग तथा मुहावरे

सहायक पुस्तक—हिन्दी प्रयोग, लेखक—रामचन्द्र वर्मा ५

(घ) निवन्ध— १२

सहायक पुस्तक—(१) हिन्दी रचना और अनुवाद,
लेखक—डॉ० श्रीप्रसाद डॉ० रामअवध पाण्डेय
(प्र० मोतीलाल, वनारसी दास) सिंह साहित्य
भवन प्रा० लि० इलाहाबाद ।

(२) रचनात्मक निवन्ध—कुलदीपनारायण सिंह
(साहित्य भवन प्राइवेट लि० इलाहाबाद)

वैकल्पिकः विषयः 'क' वर्गः

१. ऋग्वेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) सस्वराया ऋग्वेदसंहिताया नियतो भागो यथा— ३५

मण्डलम् ४ सूक्तानि १५, ३१-३२, ४६-५०, ५७-५८
मण्डलम् ५ सूक्तानि ४-५, ९-१०, २४-२५, ३९-४०, ४६
५१, ८२-८४ ।

मण्डलम् ६ सूक्तानि १, १६, २८, ४७।

(ख) प्रयोगरत्नानुसारी ग्रहयज्ञप्रयोगः १५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) सस्वराया ऋग्वेदसंहितायाः नियतो भागो यथा— ३५

मण्डलम् ६ सूक्तानि ५३-५८, ६१, ६८-७५,

मण्डलम् ७ सूक्तानि १, १५, ३४-३५, ४१, ४६-५५,

६०-६३, ९४-१०४।

मण्डलम् ८ सूक्तानि--११, २०, २८-३१।

(ख) पिङ्गलछन्दस्सूत्रस्य वैदिकप्रकरणम् उदाहरणसहितम् १५

२. शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः १२-१७ अध्यायाः ३५

(ख) नान्दीश्राद्धोत्तरमवशिष्टः ग्रहशान्तिप्रयोगः संस्कार-
भास्करानुसारी १५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) शुक्लयजुर्वेद संहितायाः सस्वरायाः १८-२१ अध्यायाः ३५

(ख) पिङ्गलच्छन्दस्सूत्रस्य वैदिकच्छन्दः प्रकरणम् १५

३. कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाः तृतीयकाण्डम् ३५

(ख) हिरण्यकेशीयः आपस्तम्बीयो वा ग्रहशान्तिप्रयोगः १५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(ख) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाश्चतुर्थकाण्डम् ३५

(ख) पिङ्गलच्छन्दःसूत्रस्य वैदिकच्छन्दःप्रकरणम् सोदाहरणम् १५

४. सामवेदः

चतुर्थप्रश्नपत्रम् ५०

(क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः पूर्वार्चिकस्य५-६ प्रपाठकौ २५

(ख) आरण्यगानस्यार्कपर्व २५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः आरण्यकाण्डादारभ्य उत्तरार्चिकस्य १-३ प्रपाठकाः ३५

(ख) पिङ्गलछन्दःसूत्रस्य सोदाहरणं वैदिकछन्दःप्रकरणम् १५

५. अथर्ववेदः (शौनकीयशाखीयः)

चतुर्थप्रश्नपत्रम् ५०

(क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः पञ्चमकाण्डम् ३०

(ख) अथर्ववेदीया कुशकण्डिका २०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) अथर्ववेदसंहितायाः स्वरायाः षष्ठकाण्डम् ३०

(ख) पिङ्गलच्छन्दःसूत्रस्य सोदाहरणम्, वैदिकच्छन्दःप्रकरणम् २०

७. प्राचीनव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) अष्टाध्याय्याः ५-६ अध्यायौ काशिकाधारेण सूत्र-पदच्छेद-विभक्ति-समासार्थोदाहरणसिद्धि सहितौ । विशेषसूत्रातिरिक्तसूत्रप्रदर्शनं नानिवार्यम् । ३०

(ख) लिङ्गानुशासनम् (उदाहरणे लिङ्गज्ञानमात्रमपेक्षितम्) १०

(ग) अष्टाध्याय्याः—५-६ अध्याययोः सूत्रपाठस्य कण्ठस्थीकरणम् । १०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

आख्यातिकश्चुरादिगणान्तः

७. नव्यव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

सिद्धान्तकौमुदी शैषिकादिद्विरुक्तप्रक्रियान्ता

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

सिद्धान्तकौमुदी भ्वादिगणादिजुहोत्यादिगणान्ता

८. साहित्यम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) दशकुमारचरितस्य पूर्वपीठिका । ३०

(ख) रघुवंशमहाकाव्यस्य १३-१४ सर्गौ २०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

तर्कसंग्रहः पदकृत्यसहितः

९. न्यायः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क)सांख्यकारिका २५

(ख) योगसूत्रम् २५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्—

सिद्धान्तलक्षणम् (जागदीश्याः ५०

अथवा

दिनकर्याः प्रत्यक्षखण्डान्तो भागः)

१०, दर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

न्यायविषयक चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ।

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्या अवशिष्टो भागः २५
(स्मृतिनिरूपणादारभ्य गुणनिरूपणं यावत्)

(ख) न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः प्रत्यक्षखण्डस्य जातिबाधक-
संग्रहान्तो भागः (दिनकरीसहितः) २५

११. थेरवादबौद्धदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) अभिधर्मकोशः प्रथमकोशस्थानम् (मूलमात्रम्) ३०

(ख) वज्रच्छेदिका प्रज्ञापारमिता (मूलमात्रम्) २०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्—

अभिधम्मत्थसंगहो १-४ परिच्छेदाः (मूलमात्रम्) ५०

अथवा

उत्तरमध्यमा प्रथमखण्डस्य पालिविषयक खवर्ग-पत्रवत् ।

विशेषः—इमं वैकल्पिकं विषयं त एव ग्रहीष्यन्ति ये खवर्गे पालीविषयं न गृहीतवन्तः ।

१२. ज्यौतिषम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) रेखागणितस्य १–२ अध्यायौ २५

(ख) मुहूर्तचिन्तामणिः गोचरप्रकरणात् अग्न्याधानप्रकरणान्तः २५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) रेखागणितस्य ३–४ अध्यायौ २५

(ख) मुहूर्तचिन्तामणिः राज्याभिषेकप्रकरणाद् अवशिष्टो भागः २५

१३. पुराणेतिहासम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) विष्णुपुराणस्य प्रथमोंऽशः २५

(ख) वाल्मीकिरामायणस्य बालकाण्डस्य—२-११ सर्गाः (ऋष्यश्रृङ्गोपाख्यानपर्यन्तम्) २५

१४. प्राकृत एवं जैनागमः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्

उत्तरज्झयणं (केसिगोयमिज्जं अध्ययनम् २३)

(व्याख्या ३० अंकाः, व्याकरणात्मकटिप्पणयः २० अंकाः)

ग्रन्थ प्राप्ति—

उत्तराध्ययन सूत्र—प्रकाशक—१. सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा।
२. जैन विश्वभारती लाडनूँ।

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

कत्तिगेयाणुवेक्खा (गाथा १—१०१)

(व्याख्या ३० अंकाः, व्याकरणात्मकटिप्पणयः २० अंकाः)

ग्रन्थप्राप्ति—

कार्तिकेयानुप्रेक्षा, परमश्रुतभावक मण्डल, अगास।

जैनदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

बृहद्द्रव्यसंग्रहः (नेमिचन्द्राचार्यविरचितः) ब्रह्मदेवविनिर्मित-वृत्तिसहितः

ग्रन्थप्राप्तिः—

परमश्रुत प्रभावक मण्डल, अगास, पोस्ट-बोरीआ
(आणंद-गुजरात)

अथवा

चरित्तपाहुड–कुन्दकुन्दाचार्यविरचितः

व्याख्या	२०
विषयपरिचयः	२०
ग्रन्थकर्तुः परिचयः	१०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

न्यायदीपिका (धर्मभूषणयतिविरचिता)

ग्रन्थप्राप्तिः—वीर सेवा मंदिर, २१ दरियागंज दिल्ली–२

व्याख्या—	२०
विषयपरिचयः	२०
ग्रन्थकर्तुः परिचयः	१०
महाभारतस्य आदिपर्वणि १-३० अध्यायाः	२५
२. विष्णुपुराणस्य द्वितीयांशः	२५

वैकल्पिकविषयः 'ख' वर्गः

सहायकग्रन्थः

षष्ठपत्रम्—प्राचीनभारतस्येतिहासः (आदितः ५५० ई० पर्यन्तम् । ५०

१. प्राचीन भारत का इतिहास—डॉ० एस० एन० दुबे, आगरा

२. प्राचीन भारत—डॉ० राजबली पाण्डेय

३. भारतायनम्—डॉ० दिनेशचन्द्र पाण्डेय

१. नागरिकशास्त्रम्

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

(क) नागरिकशास्त्र के सिद्धान्त—प्राचीन नागरिक-अनागरिक में भेद, २५

वर्णव्यवस्था

शासन

शासन की आवश्यकता

शासन का प्रकार

अराजकता के दोष

अनुशासन—अनुशासन का महत्त्व

दण्डनीति का संक्षिप्त अध्ययन

राजा—राजा की उत्पत्ति, राजा व प्रजा का सम्वन्ध।

(ख) नागरिकशास्त्र के सिद्धान्त-अर्वाचीन २५

१—नागरिकशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र, अध्ययन विधि, उपयोगिता एवं अन्य सामाजिकशास्त्रों से सम्बन्ध।

२—व्यक्ति, समाज, समुदाय, परिवार राज्य के तत्त्व, उत्पत्ति।

३—नागरिक—नागरिकता, नागरिकता का आदर्श।

४—राष्ट्रीयता, अन्ताराष्ट्रीयता।

५—लोकतन्त्र, राजनीतिक दल, जनमत।

पाठ्यपुस्तकें—क एवं ख के लिये निर्धारित

१—नीतिमयूख—नीलकण्ठ

२—नागरिक शासन के तत्त्व—परमात्माशरण

३—हिन्दूराजतन्त्र—वाजपेयी

४—चेंजिग कन्सेप्ट ऑफ सिटिजनशिप—जी० एन० सिंह

२. अर्थशास्त्रम्

षष्ठ प्रश्नपत्रम् ५०

१—भूमिका

अर्थशास्त्र की परिभाषा तथा उसका क्षेत्र, विषय का अन्य समाज-शास्त्रों से सम्बन्ध, अर्थशास्त्र के विभाग तथा उसका एक दूसरे से सम्बन्ध।

२—उपयोगिता

आवश्यकता की परिभाषा, उसका वर्गीकरण, आवश्यकता की विशेषतायें, उपयोगिता का अर्थ सीमान्त तथा कुल उपयोगिता, घटती उपयोगिता का नियम, माँग की लोच, समसीमान्त उपयोगिता का नियम, उपभोक्ता की बचत।

३—रहन-सहन का स्तर

आय-व्यय और बचत में व्यक्तिगत तथा सामाजिक दृष्टिकोण से पारस्परिक सम्बन्ध, पारिवारिक बजट तथा बजट-निर्माण के प्रयोग तथा उसका महत्त्व।

४—उत्पादन

भूमि—भारत की प्राकृतिक बनावट, भूमि, जलवायु, शक्ति तथा कच्चे माल के साधन।

कृषि—भारत में कृषि।

श्रम—भारत में जनसंख्या का घनत्व एवं विवरण, स्वास्थ्य एवं जन्म-मरण के आँकड़े, माल्थस का सिद्धान्त, श्रम की कार्य-क्षमता, श्रम-विभाजन।

पूँजी—स्थिर, चल, भवन, यन्त्र, यातायात, संवाद-वहन के साधन तथा सिंचाई, पूंजी के निर्माण एवं संचय की विधियाँ।

संगठन— ग्रामीण उद्योग और कारखाने, बड़े पैमाने का उत्पादन

तथा उसकी सीमायें। उत्तर प्रदेश में कुटीर उद्योग, क्रमागत उत्पत्ति द्वारा वृद्धि, सामान्य तथा ह्रास नियम।

५—राजस्व

राजस्व की परिभाषा, राजस्व में कर-प्रत्यक्ष तथा परोक्ष, केन्द्रीय सरकार का आय-व्यय, उत्तर प्रदेश का आय-व्यय, शासनसंस्थाओं के आय-व्यय के बजट का आलोचनात्मक अध्ययन।

६—पंचवर्षीय योजनाओं का सामान्य ज्ञान

सहायक पुस्तकें —

१—अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त—श्रीनारायण अग्रवाल

२—अर्थशास्त्र की रूपरेखा—श्री ए० एस० गर्ग।

३—प्रारम्भिक अर्थशास्त्र—शंकर सहाय सक्सेना।

४—आदर्श मुद्रा तथा भारतीय बैंकिंग—आदित्य मिश्रा

५—मुद्रा तथा बैंकिंग—लालता प्रसाद अग्रवाल

६—अर्थशास्त्र का विवेचन भाग १—ले० ओमप्रकाश केला, भारतीय प्रकाशन- हीवेट रोड, इलाहाबाद।

७—अर्थशास्त्र की रूपरेखा भाग १—ले०—एम० डी० टण्डन तथा बी० टण्डन, प्र०—इडिण्यन प्रेस प्रा० लि० इलाहाबाद।

३. इतिहासः

एकप्रश्नपत्रम् ५०

भारत का इतिहास (आरम्भ से १५२६ तक)

इस काल की घटनाओं,व्यक्तियों और युग-प्रवृत्तियों का परिचय

सहायक पुस्तकें—

(क)--भारतीय इतिहास का परिचय–डॉ० राजवली पाण्डेय, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

(ख)–भारत का इतिहास भाग–१ डॉ० ईश्वरीप्रसाद, प्र० इण्डियन-प्रेस, इलाहाबाद

४– इतिहास-पुराण एवं संस्कृति

षष्ठपत्रम् ५०

(१) पौराणिक इतिहास-अष्टादश पुराण परिचय तथा पुराणों का रचयिता

(२) पुराणकालीन प्रमुख आख्यानों एवं प्रमुख व्यक्तियों का सामान्य परिचय

(क) १-व्यासचरित्र २-ध्रुवचरित्र ३-प्रह्लाद चरित्र ४-ययातिचरित्र ५-वेन तथा पृथु का आख्यान, ६-सगरोपाख्यान, ७-गङ्गावतरण, ८-हरिश्चन्द्रोपाख्यान, ९-पुरूखा-उर्वसी आख्यान, १०-शर्मिष्ठा और देवयानी, ११-नल-दमयन्ती की कथा, १२-स्यमन्तक मणि की कथा, १३-कालियदहन कथा १४-कपोतोपाख्यान, १५-बाणासुर की कथा, १६-निमिचरित १७-मनु की कथा।

(ख) १-श्रीकृष्ण, २-व्यास, ३-सूत, ४-शौनक, ५-वशिष्ठ, ६-विश्वामित्र ७-परशुराम, ८-भगीरथ, ९-रन्तिदेव, १०-शिवि, ११-नहुष, १२-अम्बरीष, १३-अजामिल, १४-ययाति।

(ग) १-अहिल्या, २-यशोदा, ३-रुक्मिणी, ४-सत्यभामा ५-उषा, ६-कुब्जा।

५. भूगोल

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

(अ) प्राकृतिक भूगोल—सौरमण्डल, पृथ्वी—आकार, दैनिक एवं वार्षिक गति, अन्तस्तल परतें एवं चट्टानें, भूकम्प, ज्वालामुखी पहाड़, पठार तथा मैदान, नदी के कार्य पवन के कार्यं, हिम के कार्यं, झीलों का उद्भव, ऋतु एवं मौसम, ताप, वायुभार, हवायें एवं वर्षा, स्थलीय तथा समुद्रीय वायु, चक्रवात एवं प्रतिचक्रवात, स्थल एवं जल का वितरण, लहरें धारायें तथा उनका जलवायु और आर्थिक जीवन पर प्रभाव।

(आ) प्रादेशिक भूगोल—विश्व के प्रमुख प्राकृतिक विभाग तथा निम्न सन्दर्भ में उसका विशेष अध्ययन—स्थिति, प्राकृतिक दशा, जलवायु, प्राकृतिक वनस्पति, कृषि, खनिज, उद्योग, मनुष्य-जीवन, यातायात, व्यापार, प्रमुख नगर एवं जनसंख्या।

(इ) आर्थिक भूगोल—विश्व में कपास, गन्ना, चावल, गेहूँ, चाय, कहवा, रबर, जूट के उत्पादन की दशाएँ तथा स्रोत, ऊन, रेशम, लौह, कोयला, पेट्रोलियम, जलविद्युत् के स्रोत, लौह इस्पात, वस्त्र-व्यवसाय (सूती- ऊनी एवं रेशमी) मत्स्य, पोत निर्माण चीनी-उद्योग।

(ई) प्रयोगात्मक भूगोल

(१) मापक के प्रकार—सामान्य-मापक, समय-मापक, तुलनात्मक-मापक, कणंवत् मापक का निर्माण।

(२) मानचित्रों का बृहती-करण एवं लघ्वीकरण।

(३) समुच्चय रेखाओं द्वारा भू-आकृतियों का प्रदर्शन, रेखाओं द्वारा अङ्कित मानचित्र पर मार्गों एवं अन्तःदृश्यता का प्रदर्शन ।

(४) धरातल-पत्रक पर प्रयुक्त होने वाले साङ्केतिक चिह्नों का अध्ययन ।

(६) मौसम पत्रक पर प्रयुक्त होने वाले साङ्केतिक चिह्नों का अध्ययन ।

६. हिन्दी

षष्ठ प्रश्नपत्रम् ५०

प्रष्टव्य—पाठ्यपुस्तक से ससन्दर्भ व्याख्या, कवि और काव्य समीक्षा, द्रुतपाठ से विवेचनात्मक प्रश्न और रस, अलङ्कार, छन्द प्रष्टव्य होंगे ।

(क) पाठ्यपुस्तक—

इण्टरमीडिएट काव्याञ्जलि—(उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा निर्धारित)

ससन्दर्भ व्याख्या २०

कवि और काव्य समीक्षा १०

(ख) द्रुत पाठ— १२

१—रश्मिरथी—छात्रोपयोगी संस्करण—दिनकर, प्रकाशक—उदयाचल प्रकाशन पटना ।

(ग) रस, अलङ्कार और छन्द— ८

१. अलंकार—(श्लेष, अप्रस्तुतप्रशंसा, समासोक्ति, वक्रोक्ति, परिसंख्या, सन्देह)

२. छन्द--वरवै, वीर, त्रिभंगी, द्रुतविलम्बित, भुजंगप्रयात, मन्दाक्रान्ता, गीतिका)।

३. रस--

सहायक पुस्तकें--

१--काव्य प्रदीप-श्री रामवहोरी शुक्ल, प्रकाशक--हिन्दी भवन, प्रयाग।

२--काव्याङ्ग कौमुदी (तृतीय कला)--श्री विश्वनाथ प्रसाद मिश्र प्रकाशक--नन्दकिशोर एण्ड ब्रदर्स, वाराणसी।

७. नेपाली

पष्ठप्रश्नपत्रम् — ५०

अंकविभाजनम्--

१--व्याख्या	१५
२--लेखक परिचय	५
३--अनुवाद संस्कृतवाट नेपाली	५
४-- ,, नेपालीबाट संस्कृत	५
५--सहायक ग्रन्थबाट	१०
६--पाठ्यांशबाट प्रश्न	१०

पाठ्यग्रन्थनामानि:—

(क) नेपाली पद्य चन्द्रिका भाग २ लेखक —जगदीश चन्द्र रेग्मी, रेग्मी बन्धु नेपाली पुस्तक सदन, दुर्गाघाट, वाराणसी।

(ख) भिखारी (भिखारी, बादल, यात्री, वन, प्रश्नोत्तर, बालक-काल, धासी मात्र) ले० लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा, साझा प्रकाशन, काठमाण्डू नेपाल ।

(ग) नैवेद्य, ले० धरणीधर कोइराला, नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जिलिङ्ग, बंगाल ।

अथवा

मुक्त सुदामा—युद्धप्रसाद मिश्र, प्र०—स्वयं लेखक, मुमुक्षु-भवन, अस्सी, वाराणसी ।

सहायकग्रन्थनामानि—

१—छन्द र अलंकार, ले०—डिल्लीराम तिंसिना, माधव भण्डारी, प्र०—प्रेमजनक पुस्तकालय, ५ थर, मेचीअञ्चल, नेपाल ।

२—हाम्रो साहित्य र साहित्यकारहरू, ले० डिल्लीराम तिंसिना माधव भण्डारी, प्र०—पुस्तक संसार, भोंटाहिटी, काठमाण्डू, नेपाल ।

३—अनुवाद चन्द्रिका भाग ३, सोमनाथ सिग्देल, प्र०—पुस्तक-संसार, भोटाहिटी काठमाण्डू नेपाल ।

८. पालिः

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

(क) पालि प्रवेशिका (भाग २, संकलन) २५

प्र०—तारा पब्लिकेशन, वाराणसी ।

दण्डी, सुखकारी, आयु, धेनु, मातु, पितु, सत्थ, सब्बू, सयम्भू, अम्ह, तुम्ह, सब्ब, किं, य, गच्छन्त आदि शब्दानां रूपाणि। भ्वादि, रुधादि, दिवादि, तुदादि, तनादि, चुरादि, स्वादि, जुहोत्यादि, क्र्यादि धातुगणोक्त-धातूनां लट्, लोट्, लृट्, लिङ् लकारेषु रूपाणि, सन्धिः, तद्धितः, कृदन्तश्च।

(ख) वालावतारो (पालिव्याकरणम्) आदितः समास कप्पपर्यन्तम् १५

(ग) अनुवादः हिन्दी भाषातः पालिभाषायाम् १०

९. प्राकृतम्

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

(क) रचनानुवादः व्याकरणं च ३०

(प्राकृत स्वयं शिक्षक ४४-६३ पाठाः)

(ख) प्राकृतपद्यपाठाः २०

(प्राकृतप्रवेशिका —डा० कोमलचन्द्र जैन—सुभाषितानि, सज्जन-दुर्जनचर्चा, धर्ममाहात्म्यम्, शीर्षकपाठाः)

ग्रन्थप्राप्ति—

प्राकृत प्रवेशिका—डा० कोमलचन्द्र जैन,

प्रकाशक—तारा पब्लिकेशन्स, वाराणसी।

१०. विज्ञानम्

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

(सूचना :—विज्ञान के पाठचक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से

अधिक हो, जिससे सिद्धान्त तथा व्याख्या विद्यार्थियों को बोधगम्य हो। पाठ्यक्रम-अध्यापन में इस बात पर ध्यान दिया जाय कि विज्ञान सम्बन्धी नियमो को समझ सकें एवं अपनी चिन्तनशक्ति तथा विचारधाराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बनायें। अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं। प्रयोगात्मक परीक्षा जब तक सम्भव नहीं हो लिखित प्रश्नों में से दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों। प्रयोगात्मक-पुस्तिका रखना आवश्यक है।)

भौतिकशास्त्र—

स्थिर तथा गतिज अवस्था: वेगत्वरण, समवेग, विषमवेग, सापेक्षगति, दैशिक तथा अदैशिक राशियाँ, वेगवृद्धि, गुरुत्वाकर्षण द्वारा वेगवृद्धि और उनका मापन। रेखीय गति तथा कोणीय गति। न्यूटन के नियम, इनसीं का सिद्धान्त, कांच पात सिद्धान्त का प्रयोग।

गतिपालक चक्र, लट्टू, घूर्णस्थापक, यन्त्र, आवेग का सिद्धान्त, उदाहरण, बल का माप तथा इकाई।

क्रिया-प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, उदाहरण बल संयोजन तथा वियोजन, दैनिक जीवन के कुछ उदाहरण, घुरण-सिद्धान्त, जलयुग्म।

गुरुत्व :—गिरते हुए पिंडों के नियम, गुरुत्व-केन्द्र, पिण्डों की साम्यस्थिति, साम्यस्थिति के तीन भेद, गतिक साम्य, वृत्ताकार कक्ष पर समगति, केन्द्रोपसारि और केन्द्राभिसारिबल, ग्रहों की गति, मक्खन निकालने का यन्त्र।

समय की इकाई, समय नापने की रीति, प्राचीन वायुघटिका, जलघटिका, सूर्यघटिका, घड़ी दोलक, आवर्तगति, दोलक के नियम। सेकेण्ड दोलक, सेकेण्ड दोलक का प्रयोग। कमानीदार दोलक-यन्त्र।

कार्य, वल, ऊर्जाशक्ति इनकी इकाइयाँ। परिभाषा शक्ति की व्यावहारिक इकाई, वाट, किलोवाट। (परिभाषा)। कार्य का व्यावहारिक उपाय—किलोवाट आवार। ऊर्जा का अविनाश-सिद्धान्त, यांत्रिकशक्ति और ताप-शक्ति का सम्बन्ध।

यन्त्र—यन्त्र की दक्षता, वेग-निष्पत्ति, यान्त्रिक लाभ। चिचां, ढेकी, सायकिल का पावदान, प्लेटफार्म बैलेन्स, चर्खी, क्रेन, पेंचदार कील, वर्मा, देवरी, दातेदार पहिया, पञ्चर।

द्रव्य विज्ञान—दाब के नियम प्रयोग, कुछ उदाहरण, नगरों में पानीवितरण की क्रिया, आर्टेजियनकप, जलप्रेरित दावक उत्प्लावन-वल, उत्प्लावन बल की व्याख्या, आर्किमिडिज का सिद्धान्त, तैरना, तैरने का नियम, पनडुब्बी, आइसवर्ग, हाइड्रोमीटर, वायुदाव फोटिन बैरोमीटर, एनिराइड बैरोमीटर, एनिराइड बैरोमीटर द्वारा ऊँचाई नापना, वायुद्वारा उत्प्लावन बल—गुब्बारा, हवाईजहाज, ठोस पर दाब का प्रभाव, ब्वायल का नियम, वायुमण्डल सम्बन्धी साधारण ज्ञान, पिचकारी, जलपम्प, दमकल प्रक्षालक, वासुदेव का प्याला, पेट्रोल-पम्प, सायकिल पम्प, फुटबाल पम्प, सोडावाटर की मशीन।

सामान्य ज्ञान—पदार्थ के कुछ विशिष्टगुण, अणुसिद्धान्त पृष्ठबल, कोएहेसन, एडहेसन, स्थिति-स्थापक बल, चाप और पिकार (stress & strain)।

ताप का रूप, ताप और तापक्रम, सेक्स का उच्चतम-न्यूनतम तापमापक,उच्चतर तापक्रम नापने की रीतियाँ, द्रवों का प्रसार, ठोस का प्रसरण। स्थायी आयतन में दाब और तापक्रम का प्रभाव, परम तापक्रम तथा परम शून्यांकविशिष्ट ताप, द्रव का विशिष्ट ताप, शीतलीभवन के नियम, शीतलीभवन से द्रव का विशिष्ट ताप निकालना।

समुद्र तथा स्थलवायु, अवस्था परिवर्तन, वाष्पीकरण का गुप्तताप, किसी ठोस का गलनांक निकालना, गलनांक पर दाब का प्रभाव, पुनः शीतलीभवन-प्रयोग, हिम-मिश्रण वाष्पन और द्रवण क्वथनांक, क्वथनांक पर दाब का प्रभाव, क्वथनांक पर द्रव्य की अशुद्धियों का प्रभाव, वाष्पन का गुप्तताप निकालना, वाष्पन से शीत पैदा होना, बर्फ जमाने की रीति, वर्फ जमाने की मशीन, वायुमण्डल में जल वाष्प, मेघ, आर्द्रता ओले, आर्द्रता मापन।

ताप का संचरण-संवाहन तथा विकिरण, चिमनी का प्रयोग, विकीर्ण ताप के रूप, विकीर्ण ताप के गुण, चालक, अचालक,चलन तापक्रम, ज्वलन-तापक्रम, डेवी का लेम्प, द्रवों की चालकता, कारखानों में चिमनी का प्रयोग, खानों में हवा की शुद्धि। प्राकृतिक व्यापारिक हवायें और सामुद्रिक धारायें, थर्मस फ्लास्क, ताप का यांत्रिक तुंल्यांक भाप का इञ्जन, भाप के टरवाइन तथा अन्तर्दहन इञ्जन के विषय में सामान्य ज्ञान।

निम्नलिखित विषयों के सामान्य ज्ञान।

ध्वनि, ध्वनि का वर्तन, अनुप्रस्थ तरंगें, ध्वनि का प्रसरण, त्वरणवेग और त्वरण-दैर्घ्य, ध्वनिवेग, हवा में ध्वनिवेग का निकालना हाइड्रोफोन, ठोस पदार्थ में ध्वनि का वेग, ध्वनि-स्रोत, ध्वनिस्रोत का पता लगाना, ध्वनि वर्तन, परावर्तन स्टेथेस्कोप विवर्तन, ध्वनिसंयोजन, स्थावर, तरंग नाद के गुण, सायरन, संगीत, स्वर और

ग्राम तार का कम्पन ट्युनिंग फार्क वायुस्तम्भ का कम्पन, सीटी, वांसुरी हारमोनियम, सितार सारङ्गी फोनोग्राफ, चुम्बकीय-ध्वनि पुनरुत्पादन, मोटरहार्न ।

कार्बनिक रसायन शास्त्र, ऐलिफैटीक यौगिक ।

(निम्नलिखित विषयों में सामान्य ज्ञान आवश्यक तथा विस्तृत विवरण अनावश्यक है)

संतृप्त हाइड्रोकार्बन या पैरेफिन, मिथेन, पेट्रोलियम तथा आसवन पेट्रोलियम पदार्थ, उपयोगिता, असंतृप्त हाइड्रोकार्बन एथिलीन एसिटिलीन, इथाइल अलकोहल, एलडीहाइड, फार्मेल्डिहाइड, एसिटोन, एलीफैटिक या वसीय अम्ल एसिटिक अम्ल, वसीय अम्लों के यौगिक, एस्टर, तेल, वसा साबुन, ग्लिसरोन उसका उपयोग, कार्बोहाइट्रेड, ग्लुकोज, फ्रुक्टोज, सुक्रोज, स्टार्च सेल्यूलौज, प्रोटीन तथा अमीनों, अम्ल, हमारा भोजन, भारतीय-भोजन की रचना तथा ईंधन-शक्ति ।

ऐरोमैटिक या सौरभिक यौगिक

सौरभिक हाइड्रोकार्बन, कोलतार और उसका असवन, देनजीन साधारण गुण, उत्पादन उपयोगिता। फीनाल (सामान्य ज्ञान) उत्पादन उपयोगिता ।

जीव विज्ञान

जीव-कोष एक सम्पूर्ण जीव की दृष्टि से। जीव विज्ञान की प्रमुख विशेषतायें (अनेकता में एकता, सेल वायोलाजी) ।

वर्गीकरण:—प्राणि-विज्ञान तथा वनस्पति-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान एवं वनस्पति-विज्ञान में वर्गीकरण, प्रत्येक (प्रमुख) वर्ग के नाम तथा उदाहरण, बहुकोषधारी जीव की विशेषताएँ, मार्फालाजि

एनाटमी, सायलोलाजी, फिजियालाजी इत्यादि शाखाओं के अध्ययन तथा उनसे लाभ, उदाहरण स्वरूप वनस्पति विज्ञान में मक्का एवं चना।

वीजों की संरचना, मक्का, गेहूँ, धान, चना, सेम, रेड़ी तथा उनका अंकुरण, जड़ तथा पत्तियों के कार्य तथा उनके रूपान्तरित-रूप एवं कार्य-फूल-पुष्प, पुष्प-विन्यास, कार्य, परागण, स्वयं तथा परम्परा-गुण विधियाँ गर्भाधान, फल, फल के वर्गीकरण, वीज तथा फलों का विकिरण।

लाभदायक पौधे, औषधि तथा प्रायोगिक, निम्नवर्गीय पौधे में शैवाल फंजाई तथा वायरस एवं जीवाणु, लाभदायक तथा उपयोगिता की दृष्टि से एवं विभिन्न व्यापार एवं दशाओं में प्रयोग की दृष्टि से।

प्रायोगिक रसायन-शास्त्र

प्रयोगशाला के उपयोग, गुणात्मक विश्लेषण, कार्बनिक यौगिकों की परीक्षा, आयतनात्मक विश्लेषण, आक्सीजन तथा अवकरण।

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को अवश्य दिखाये जाने चाहिये—

लम्बाई नापना, वर्नियर स्केल तथा कैल्यिपर्स का प्रयोग, पेंचमापी तथा गोलाई मापी का प्रयोग।

मशीनें (उत्तोलक, घिर्री इत्यादि) तथा उनका अध्ययन।

किसी धातु के पतले टुकड़े का गुरुत्वकेन्द्र निकालना, मात्रा और भार में अन्तर ज्ञात करना, दोलक का कार्य-विधि दिखाना, द्रवों का दाब और आर्किकिमिडीज का सिद्धान्त दिखाना, आपेक्षित घनत्व निकालना १—आपेक्षिक घनत्व बोतल से आर्कमिडिज के सिद्धान्त द्वारा, निकल्सन्स हाइड्रोमीटर द्वारा या हेयर के उपकरण द्वारा, फटिन बैरोमीटर से वायुदाव नापना, वायल का नियम का अध्ययन

करना, साधारण सायफन वनाना एवं कार्यविधि देखना, वस्तुओं पर उष्मा का प्रभाव ज्ञात करना, द्रवों की विशिष्ट उष्मा निकालना, गलनांक तथा क्वथनांक निकालना, ध्वनि चलने के लिए माध्यम की आवश्यकता होती है, सिद्ध करना, हवा में ध्वनि का वेग निकालना, परावर्तन की कुछ उपयोगिता दिखाना, स्टेथेस्कोप (सुनने की नली), ट्यूनिंग फाक का तथा सोनोमीटर का प्रयोग दिखाना, कार्बनिक योगिकों की साधारण परीक्षा, ग्लुकोज स्टार्च, प्रोटीन, एथिल अल्कोहल ।

प्रायोगिक जीवविज्ञान

सायटोलाजी तथा हिस्टालाजी का अध्ययन करना (वनस्पति) । विभिन्न कोष तथा उनकी रचना ज्ञात करना । तना मूल तथा पत्तियों की मार्फालाजी तथा एटानमी अध्ययन करना । बीजों का अंकुरण दिखाना—वनस्पति फिजियालाजी में असमॉसीस ट्रन्सपीरेशन, फोटोसिनथिसिस, स्वसन को प्रयोग द्वारा सिद्ध करना ।

पाठ्य पुस्तकें :—

प्रारम्भिक भौतिकी—वी० एल० कुलश्रेष्ठ ।

कार्बनिक रसायन—पंचानन्द दे ।

माध्यमिक कृषि रसायन:—डॉ० पृथ्वीनाथ भार्गव, डॉ० कैलाशनाथ उपाध्याय ।

(कार्बनिक अकार्बनिक तथा प्रायोगिक)

भौतिक विज्ञान प्रवेशिका (भाग—१, २), डॉ० नन्दलाल सिंह

वनस्पति विज्ञान—आर० डी विद्यार्थी

वनस्पति विज्ञान डॉ० एस० के० गोस्वामी कल एवं चौधरी
आधुनिक जीव विज्ञान-ग्रन्थमाला
माध्यमिक भौतिकी—के० पी० घोष
माध्यमिक प्रायोगिक भौतिकी—के० पी० घोष
माध्यमिक वनस्पति विज्ञान—डॉ० एस० के० गोस्वामी एवं अन्य, मेरठ

अथवा

गणितम्

(जीव विज्ञान के विकल्प में)

१—वीजगणित घातांक तथा लघु गणकों के नियम तथा उनका प्रयोग, समानान्तर तथा गुणोत्तर श्रेणियों का व्यापक पद तथा योग वर्गी समीकरण, क्रम चय तथा संचय का सामान्य ज्ञान, द्विपद प्रमेय का प्रयोग, दो त्रिकोणमिति, कोणमापन त्रिकोणमितीय निष्पत्तियाँ तथा अन्तर की ज्या, कोटिज्या तथा स्पर्शज्या के सूत्रों का प्रयोग।

११. गणितम्

षष्ठ प्रश्नपत्रम् ५०

(अ) वीजगणित—दो या अधिक अज्ञात वर्णों का वर्गसमीकरण, वर्ग-समीकरण मीमांसा, करणी, काल्पनिक राशियाँ तथा व्यञ्जक, समानान्तर, गुणोत्तर तथा हरात्मक श्रेणियाँ, क्रमचय तथा संचय घातांक तथा लघुगणकों के सिद्धान्त, द्विपद प्रमेय घनात्मक तथा पूर्णसंख्यात्मक घातांक के लिये द्विपद प्रमेय का अन्य घातांकों में प्रयोग, घातांक प्रमेय तथा लघुगणकीय श्रेणियाँ।

(आ) त्रिकोणमिति—कोणमापन की तीनों विधियाँ, त्रिकोणमितीय निष्पत्तियाँ, दूरी तथा ऊँचाइयाँ, श्रेणीय निष्पत्तियों के संस्थात्मक मान ०°, ३०°, ४५°, ६०°, ९०°, १५°, १८°, ३६°, ५४°, ७५°, पदों में निष्पत्तियों के चिह्न ९०°+ कोण १८०°+ कोण, २७०°+ कोण ३६०°+ कोण की निष्पत्तियों की माँग, ऋण कोणों की निष्पत्तियाँ, दो कोणों के योग तथा अन्तर की ज्या तथा कोटिज्या की ज्यामितीय उपपत्तियाँ तथा उनसे निष्पन्न सूत्र, द्विगुण तथा त्रिगुणित तथा आधे कोणों की निष्पत्तियाँ, त्रिकोणमितीय समीकरण, त्रिभुज की भुजाओं तथा कोणों के सम्बन्ध त्रिभुज का हल लघुगणकों के प्रमेय सहित त्रिभुज के अन्तर्वृत्त, वहिर्वृत्त तथा परिवृत्त के व्यासार्द्धों का भुजाओं से सम्बन्ध।

(इ) घन-मापन—लांबिकसमानाफलक संक्षेत्र (Prism) स्तूप (Pyramids), वर्तुल वेलन तथा शंकु, गोल, गोलखण्ड तथा छिन्न, शंकु, छिन्नवेलन, छिन्न स्तूप तथा छिन्न गोलों के तल तथा आयतन। संख्यात्मक प्रश्न में त्रिकोणमिति तथा लघुगणकीय सारणियों का प्रयोग करना अनुमत है।

(ई) चलन-कलन—परिभाषायें तथा अवकल-गुणक की व्याख्या, सरल फलिनों का अवकलन तथा उनका साधारण वक्रों के स्पर्शी और अभिलंबियों के निकालने में प्रयोग।

चल राशिकलन—अवकलन के विलोम के रूप में अनुकलन (Integration) सरल फलकों का अनुकलन, खण्ड अनुकलन, स्थानापत्ति द्वारा अनुकलन, अनुकलन के लिये आंशिक भिन्नों का प्रयोग।

सूचना—चलन-कलन तथा चल राशि कलन के प्रश्नों के अति परवलीय फसलों पर आधारित प्रश्न नहीं पूछे जायेंगे।

टिप्पणी—अ, आ, इ, ई, में प्रश्नों का अनुपात २, २, १ का होना चाहिये, एक विषय में कम से कम दो प्रश्न अवश्य रहने चाहिये।

१२. तुलनात्मकदर्शनम्

षष्ठ प्रश्नपत्रम् ५०

तर्कशास्त्र निगमनविधि

(क) पाश्चात्य तर्कशास्त्र :—

न्यायशास्त्र की परिभाषा, न्यायशास्त्र का विषय-विचार और भाषा, न्यायशास्त्र का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध, न्यायशास्त्र की उपयोगिता विचार के नियम पद और उनका विभाग, पद का गुण और निर्देश-वाच्य धर्म-परिभाषा एवं तार्किक (नैयायिक) विभाग, तार्किक या नैयायिक वाक्य, वाक्यों का अर्थ, वाक्य में पदों का विस्तार, अनुमान का स्वरूप, और उनके अनेक भेद, वाक्यप्रतिप्रमुखता न्याय वाक्यों के स्वरूप, आकार, संयोग एवं भेद उभयतो-पाश संक्षिप्त-न्याय वाक्य का संक्षिप्त अनुलोमयुक्तिमाला, संक्षिप्त-प्रतिलोम-न्यायमाला, न्याय-वाक्य का और उसकी उपयोगिता, दोष।

(ख) भारतीय तर्कशास्त्र :—

विषय प्रवेश :—न्यायशास्त्र का उद्देश्य और महत्त्व, न्यायशास्त्र का विकास प्रमा :—ज्ञान और उसके भेद, प्रमा के लक्षण, प्रमा का विश्लेषण, कारण प्रमाण :—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द-प्रमा और अन्य विषय :—संशय, विपर्यय, तर्क, कथा, वाद, जल्प, बितण्डा, छल जाति और निग्रहस्थान।

(क) पाठ्य पुस्तकें

१—पाश्चात्य तर्कविद्या (निगमनविधि)—श्री भोलानाथ राय।

२—पाश्चात्य तर्कशास्त्र (निगमनविधि)—भिक्षु जगदीश काश्यप ।

सहायक पुस्तकें—

१—Essentials of Logic—Stebbing.

(ख) पाठ्यपुस्तकें—

१—तर्कसंग्रह-अन्नम्भट—(दीपिकावृत्तिसहित)

सहायक पुस्तकें—

१—भारतीय तर्कशास्त्र तथा ज्ञानशास्त्र-श्री अशोक वर्मा ।

विशेषः—उपर्युक्त पाठ्यक्रम में निर्धारित संस्कृतमूलग्रन्थों के विषयमात्र के आधार पर तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे ।

१३. समाजशास्त्रम्

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

समाजशास्त्र के सिद्धान्त—

समाजशास्त्र का अर्थ तथा विषयक्षेत्र, समाजशास्त्र का अन्य सामाजिक विद्वानों से सम्बन्ध, समाज की प्रवृत्ति, मानव समाज की विशेषतायें, व्यक्ति और समाज, वंशानुक्रम तथा पर्यावरण, समूह का अर्थ, प्राथमिक एवं द्वितीयक समूह, समुदाय का अर्थ, ग्रामीण एवं नगर समुदाय, वर्ग एवं जाति, सामाजिक संस्थाओं की प्रकृति, परिवार एवं विवाह, राज्य, धर्म, सामाजिक प्रक्रियायें—समाजीकरण, सहयोग, संघर्ष एवं प्रतिस्पर्धा, सामाजिक नियन्त्रण का अर्थ, सामाजिक परिबर्तन के प्रतिमान, सामाजिक विघटन का अर्थ । सामाजिक विघटन ।

के प्रमुख प्रकार, सामाजिक नियन्त्रण के प्रमुख साधन तथा माध्यम, सामाजिक परिवर्तन का अर्थ।

सहायक पुस्तकें--

१. समाजशास्त्र के सिद्धान्त--सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार
२. समाज-मैकाइवर एण्ड पेज (हिन्दी में अनूदित)
३. समाजशास्त्र परिचय--रामपाल सिंह गौड़
४. समाजशास्त्र के मूल सिद्धान्त--कैलाशनाथ शर्मा।
५. सामाजिक विघटन--मदनमोहन सक्सेना।

१४. संगीतम्

(केवलं बालिकानां कृते)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

(कण्ठसंगीतम्)

प्रायोगिक-- ३०

१. स्वरज्ञान--शुद्ध तथा विकृत स्वरों का पूर्ण अभ्यास, रागों को पहचानने की निपुणता।

२. तानपुरा मिलाने का साधारण ज्ञान

३. रागज्ञान--निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल, अलाप तथा तान सहित। किन्ही एक राग में ध्रुपद या धम्मार जानना आवश्यक है। राग वृन्दावनी, सारंग, भीमपलासी और भैरव।

निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल तान, अलाप रहित। राग मारवा, तिलक कामोद।

४. तालज्ञान--निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन चौगुन लयों में कहना, ताल त्रिताल, झपताल, धम्मार और चौताल।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र)   २०

निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या--

१. नाद की विशेषतायें (नाद का ऊँचा-नीचापन, नाद का बड़ा छोटापन, नाद की जाति)।

२. स्वर (शुद्ध और विकृत स्वर), श्रुति अलाप, तान (तीनों के प्रकार, मुर्की, कण (स्पर्श स्वर), कम्पन मींड, गमक, वादी संवादी, विवादी, अनुवादी, अंश न्यास आन्दोलन, शुद्ध स्वरों की आन्दोलन संख्या, वीणा के तार पर शुद्ध स्वरों का स्थान, पकड़ आरोह, अवरोह छूट।

ख्याल (छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल), ध्रुपद, धम्मार, ठुमरी,

३. पाठ्यक्रम में आये छोटे ख्याल ध्रुपद अथवा धम्मार को स्वरलिपि में लिखना तथा रागों का स्वर-विस्तार लिखना।

४. पाठ्यक्रम में आये रागों का पूर्ण शास्त्रीय परिचय।

५. पाठ्यक्रम में आये तालों की विभिन्न लयकारियों (ठाह, द्विगुन, तिगुन, चौगुन) में लिखना।

६. उत्तरी तथा दक्षिणी थाट-पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।

७. सरल स्वरसमूहों द्वारा रागों को पहिचानना।

८. अलंकारों को आरोह, अवरोह में पूर्ण करना।

९. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी पर प्रकाश—
शारङ्गदेव, अमीर खुशरू, तानसेन।

अथवा—वाद्यसङ्गीतम् (सितार)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

प्रायोगिक ३०

१. वृन्द्रावनी, सारंग, भीमपलासी, भैरव इन रागों की एक-एक रजाखानी गत तानतोड़ों सहित ।

२. पूर्वी, मारवा, इन रागों की एक-एक गत मसीत-खानी अथवा रजाखानी, गत, तानतोड़ों रहित ।

३. तीन ताल, दादरा कहरवा, झपताल, चारताल इन तालों के ठेकों को ताली देते हुए ठाह तथा दुगुण में बोलने का अभ्यास ।

४. मुख्य रागदर्शक स्वरों द्वारा राग पहचानने का अभ्यास ।

सैद्धान्तिक—(लिखित प्रश्नपत्र) २०

(निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान)

१. ध्वनि की उत्पत्ति नाद, नाद की जाति, गुण तथा छोटा बड़ापन, आन्दोलन, आश्रय राग, ग्रह अश, न्यास सप्तक का पूर्वाङ्ग उत्तराङ्ग, पूर्वराग तथा उत्तरराग चल और अचल थाट, वादी स्वर का राग के समय से सम्बन्ध, श्रुति, अलाप, तानों के प्रकार, जमजमा, तिहाई परमेल, प्रवेशक राग ।

२. पाठ्यकम के सभी रागों को स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास ।

३. अपने पाठ्यक्रम के सभी रागों का राग परिचय ।

४. लिखित स्वरों द्वारा राग पहचानने का अभ्यास ।

५. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवनचरित्र—
गोपालनायक, शारंगदेव ।

६. निबन्ध

(अ) शास्त्रीय संगीत का जनता पर प्रभाव।

(ब) हिन्दुस्तानी संगीत की विशेषतायें।

अथवा—वाद्यसंगीतम् (तबला)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

प्रायोगिक— ३०

१. लयज्ञान—अंकों की सहायता से हाथ से ताली देकर ठाह दुगुन तिगुन और चौगुन तथा आड़ा लयों को दिखलाना।

२. तालज्ञान—निम्नलिखित तालों को हाथ से ताली द्वारा ठाह और द्विगुण लयों में कहना।
ताल—त्रिताल, झपताल, रूपक, दीपचन्दी, धम्मार, आड़ाचौताल, तिलवाड़ा, चौताल दादरा और कहरवा उपर्युक्त तालों में त्रिताल, झपताल तालों में कुछ कायदे, टुकड़ा, मुखड़ा, रेला, पल्टा, परन और चक्करदार टुकड़े जानना। ताल दादरा और कहरवा में तथा धम्मार और चौताल में लड़ी और लग्गी जानना।

३. कुछ परन जानना।

४. अपने वाद्ययन्त्र को स्वर में मिलाने का अभ्यास।

५. गायन और वादन के साथ संगत का अभ्यास।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्न-पत्र) २०

१. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या—
लय (विलम्बित, मध्य, द्रुत), पेशकारा, टुकड़ा, मुखड़ा, आड़, पटना, तिहाई, दुगुन, तिगुन, लग्गी, लड़ी।

२. तबले का संक्षिप्त इतिहास।

३. पाठ्यक्रम में आये तालों को ठाह और दुगुन लयों में लिखना।

४. पाठ्यक्रम में आये तालों के टुकड़ों, परन, पेशकारा और कायदों कोताललिपि में लिखना।

५. तबले के ठेकों का बाज (दिल्ली, बनारस आदि)।

६. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी।
शारंगदेव, अमीरखुसरू, तानसेन।

१५. गृहविज्ञानम्

(केवलं बालिकानां कृते)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

सैद्धान्तिक—(लिखित प्रश्नपत्र) ३०

शरीर-विज्ञान तथा स्वास्थ्य-रक्षा

(क) जीवित तन्तुओं के कोष्ठक, वनावट का अध्ययन।
(ख) अस्थि-पंजर तथा मांसपेशियों का अध्ययन।
(ग) भोजन तथा पाचन-क्रिया।

१—यकृत की वनावट तथा कार्य, प्लीहा तथा क्लोम।

२—भोज्य पदार्थों का वर्गीकरण।

३—आयु जलवायु तथा उद्यम के अनुसार भोजन की आवश्यकता।

४—दूध तथा सन्तुलित भोजन।

स्वास्थ्य-रक्षा—वैयक्तिक स्वास्थ्य-रक्षा, हवा का आवागमन, कूड़ा-करकट तथा मूत्र का विसर्जन, जल तथा भोजन की व्यवस्था,

इनके प्रति साधारण जनता का उत्तरदायित्व, गन्दे स्थानों से स्वास्थ्य को भय, वाटिका, खेल-कूद का मैदान, खुला स्थान, स्वास्थ्य जीवन के नियम।

समाजशास्त्र

मनुष्य की आवश्यकताओं तथा उनको पूर्ण करने में आने-वाली कठिनाइयों का अध्ययन, पारिवारिक जीवन से मनुष्य की आवश्यकताओं की पूर्ति, भारतीय परिवार तथा उनके सदस्यों के कर्त्तव्य का अध्ययन, पारिवारिक बन्धनों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, बाल्यावस्था का मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास पर प्रभाव, बाल्यावस्था, यौन-शिक्षा, बालक-बालिका-सम्बन्ध।

शिशु-रक्षण—भावी माता तथा शिशु की देख-भाल। शिशु की तौल, बच्चे को मां के दूध से विमुख करना, दाँत निकलना, वस्त्र पहिनना, मल-मूत्र के त्याग करने की शिक्षा देना, पाचन-क्रिया के रोग, शिशु-मरण, शिशु-रक्षण।

प्रायोगिक— २०

भोजन पकाना—तरकारी, अचार, मुरब्बा, मीठा अचार, शिकंजी, सास, फलों का मुरब्बा तथा दूध की मीठी वस्तुएँ बनाना।

सिलाई—सिलाई की मशीन के यन्त्रों का पूर्ण परिचय प्राप्त करना। प्रत्येक वर्ग से एक वस्त्र बनाना।

१—कुर्ता, ब्लाउज, सलवार।
२—पैजामा, कमीज, बुशशर्ट।
३—फैन्सी वस्त्रों का एक सेट

पाठ्यपुस्तकें—

१. गृह प्रबन्ध–ले०–कान्ती पाण्डेय, प्र०–बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना—३।

२. हमारा आहार, ले०–एम० स्वामीनाथन् तथा आर० के० भगवान्, प्रकाशक—गणेश एण्ड कम्पनी, मद्रास।

ऐच्छिकः अतिरिक्तो विषयः

अंग्रेजी

There shall be one paper, in Uttara Madhyama Part I, of three hours' duration carrying 50 marks.

BOOKS PRESCRIBED :—

1. Simple Prose For Intermediate—by J.N. Sinha Hindustan book House Kanpur.

Or

2. Standard Essay in English—by B. N. Sahani and Gulabdas, Chaukhambha Prakashan—Varanasi.

DISTRIBUTION OF MARKS :—

(A) Pros Text—

(i) Explanation in English with reference to context. 10

(ii) Questions on the text.

(iii) Translation of Prose pieces into Hindi. 6

(iv) Use of words in sentences of English. 4

(B) Translation from Hindi into English. 10

(C) Unseen passage. 6

(D) (i) Idioms. 3

(ii) Syntax. 5

—o—

उत्तरमध्यमा-द्वितीयखण्डम्

प्रवेशनियमः—

१. उत्तरमध्यमाप्रथमखण्डे उत्तीर्णः द्वितीयखण्डे अन्वेतुमर्हति ।

२. १९५० ई० पूर्वं मध्यमातृतीयखण्डमुत्तीर्णश्छात्रः नवीन-निर्दशिकानुसारं खण्डोत्तरमध्यमाद्वितीयखण्डे पूर्वगृहीत 'क' वर्गीय-विषयेण सह अनिवार्यविषयं कमप्येकं 'ख' वर्गीयविषयं च गृहीत्वाऽन्वेतुमर्हति ।

३. प्रथमखण्डे यः विषयः गृहीतः स एव द्वितीयखण्डे ग्रहीतुं शक्यते ।

४. उत्तरमध्यमायाः द्वितीयखण्डे अनिवार्यविषयाणां त्रीणि प्रश्न-पत्राणि, 'क' वर्गे द्वे प्रश्नपत्रे 'ख' वर्गे चैकमिति घण्टात्रयसमाधेयानि षट् प्रश्नपत्राणि भविष्यन्ति । अतिरिक्ते अंग्रेजीविषये एकं प्रश्नपत्रम्, यत् प्रथमखण्डे अंग्रेजीपत्रे उत्तीर्ण एव ग्रहीतुं शक्नोति । प्रतिप्रश्नपत्रं पञ्चाशदङ्काः । प्रतिखण्डं प्रतिविषयं प्रतिशतं त्रयस्त्रिंशदङ्कानां च लाभः उत्तरणप्रयोजको भविष्यति ।

५. उत्तरमध्यमापरीक्षायाः प्रतिखण्डं श्रेणीविभागो न भविष्यति, अपितु अन्तिमखण्डमुत्तीर्णे प्रतिखण्डं प्राप्ताङ्कानां योगेन निम्ननिर्दिष्ट-रीत्या श्रेणीविभागो भविष्यति ।

श्रेणीनिर्धारणम्—

१. तत्र समष्टौ प्रतिशतं षष्टिः (६०) तदधिकान् वा अङ्कान् लब्धवन्तः प्रथमश्रेण्यां निवेशं लप्स्यन्ते ।

२. समष्टौ प्रतिशतं पञ्चचत्वारिंशत् (४५) तदधिकान् वा अङ्कान् लब्धवन्तः द्वितीयश्रेण्यां निवेशं लप्स्यन्ते ।

३. समष्टौ प्रतिशतं त्रयस्त्रिंशत् (३३) तदधिकान् वा अङ्कान् लब्धवन्तः तृतीयश्रेण्यां निवेशं लप्स्यन्ते ।

पाठ्यक्रमः—

	पूर्णाङ्काः	उत्तरणाङ्काः
अनिवार्यविषयः—संस्कृतकाव्यम्		
प्रथमं प्रश्नपत्रम्—नाटकनिबन्धव्युत्पत्त्यनुवादानाम्	५०	१७
अनिवार्यविषयः संस्कृतव्याकरणम्		
द्वितीयं प्रश्नपत्रम्—व्याकरणस्य	५०	१७
अनिवार्यविषयः हिन्दीभाषा		
तृतीयं प्रश्नपत्रम्—गद्यव्याकरणनिबन्धानाम्	५०	१७
वैकल्पिकविषयः क वर्गः		
चतुर्थंप्रश्नप्रत्रम्—'क' वर्गीयविषयस्य	५०	३३
पञ्चमं प्रश्नपत्रम्—,, ,,	५०	
वैकल्पिकविषयः (ख) वर्गः		
षष्ठं प्रश्नपत्रम्—'ख' वर्गीयविषयस्य	५०	१७
अतिरिक्तः ऐच्छिकः विषयः		
एकं प्रश्नपत्रम्—अंग्रेजीभाषायाः	५०	१७

अनिवार्यविषयः—संस्कृतकाव्यम्

प्रथमं प्रश्नपत्रम्—नाटक-निबन्ध-व्युत्पत्त्यनुवादानाम् ५०

(क) स्वप्नवासवदत्तम् २०

(ख) अशुद्धवाक्यानां शोधनम् ५

(ग) अनुवादः—हिन्दीभाषातः संस्कृते १५

(घ) निबन्धरचना—संस्कृतभाषायाम् १०

सहायकग्रन्था :—

(१) वीराङ्गनावैभवम्—गोपालशास्त्रीदर्शनकेशरीकृतम्
प्रकाशकः मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।

(२) गुप्ताशुद्धिप्रदर्शनम् अम्बिकादत्तव्यासकृतम्
(व्यासपुस्तकालयः मानमन्दिर, वाराणसी)

(३) प्रस्तावतरङ्गिणी श्रीचारुदेवशास्त्रिणः
(प्र० चौखम्बा संस्कृतपुस्तकालय, वाराणसी)

अनिवार्यविषयः संस्कृतव्याकरणम्

द्वितीयं प्रश्नपत्रम्—व्याकरणस्य ५०

(व्याकरणेतरच्छात्राणां कृते)

मध्यकौमुद्याः कृदन्तप्रकरणम्, तद्धितप्रकरणम्, स्त्रीप्रत्यय-प्रकरणञ्च।

अथवा

बालसिद्धान्तकौमुदी—चुरादिप्रकरणमारभ्य उत्तरकृदन्तप्रकरणान्ता।

ले०-प्रकाशक—ज्योतिःस्वरूप मिश्र द्वारा—भवदेव मिश्र, बी. ४ सेक्रेटरिएटकालोनी, महानगर, लखनऊ।

अथवा

भट्टिकाव्यम्—१८-२२ सर्गाः

विशेषः–प्रश्नपत्रनिर्माणकाले भट्टिकाव्यतः २५ अंकानां व्याकरण-सम्बन्धिप्रश्नाः अनिवार्यरूपेण प्रष्टव्याः ।

अथवा

(केवलं व्याकरणच्छात्राणां कृते)

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः प्रत्यक्षखण्डे जलनिरूपणात् प्रत्यक्षखण्ड-समाप्तिपर्यन्तो भागः ।

अनिवार्यविषयः हिन्दी

प्रष्टव्यः-पाठ्यपुस्तक के अंशों का सामान्य अर्थ, पाठ सारांश, व्याकरण भाषा सम्बन्धी प्रयोग एवं निबन्ध ।

तृतीयं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) पाठ्यपुस्तक— १५

१. हिन्दी संग्रह सं०–डा०–सिद्धनाथ श्रीवास्तव
(प्र०–चौखम्बा विद्या भवन वाराणसी) १५

२. चक्रव्यूह—लक्ष्मीनारायण मिश्र प्र० कौशाम्बी प्रकाशन, इलाहाबाद ५

(ख) द्रुत पाठ— ८

अकेली आवाज [छात्र संस्करण]
लेखक—राजेन्द्र अवस्थी एण्ड संस, दिल्ली ।

(ग) अनुवाद—संस्कृत से हिन्दी ५
हिन्दी से संस्कृत ५

सहायक पुस्तक—

सुन्दरकाण्डम्—सं०-पं०-श्रीनारायण चतुर्वेदी [सर्ग १०-१२]

(घ) व्याकरण—सहायक पुस्तक सुगम हिन्दी

व्याकरण:—ले०-जीवननाथ शास्त्री

(ङ) निबन्ध— १२

सहायक पुस्तक-हिन्दी रचना और अनुवाद

ले०-डा० श्री प्रसाद, डा० रामअवध शास्त्री

प्र०-मोतीलाल, बनारसीदास।

वैकल्पिकः ('क' वर्गः)

१. ऋग्वेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) सस्वराया ऋग्वेदसंहितायाः नियतो भागः यथा— ३५

मण्डलम् ८ सूक्तानि ४४, ४८, ८०-८१, ९५,

मण्डलम् ९ सूक्तानि १ ६७, ७६, ९१, १११-११४

(ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः १५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) सस्वराया ऋग्वेदसंहितायाः नियतो भागः यथा—

मण्डलम् १० सूक्तानि ९-१०, १५, १८, १९, ३०, ३४,

३३-३७, ४६-५०, ६२-६३, ७०-७५, ८०-८५, ९०,

९७, १०३, ११७—११९, १२१, १२५-१३०, १५१

१५२, १५८, १६१-१६३, १७०, १७३, १७४, १७७-१७९, १८३-१९१ । 　३५

(ख) ऋग्वेदसंहिताया प्रथमाध्यायस्य सस्वरः पदपाठः क्रमपाठश्च । 　१५

२. शुक्लयजुर्वेदः (माध्यन्दिनशाखीयः)

चतुर्थंप्रश्नपत्रम्— 　५०

(क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः २३-३० अध्यायाः । 　३५

(ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः 　१५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— 　५०

(क) शुक्लयजुर्वेदसंहितायाः सस्वरायाः ३१-४० अध्यायाः 　३५

(ख) मुहूर्तचिन्तामणेः संस्कारप्रकरणम् । 　१५

३. कृष्णयजुर्वेदः (तैत्तिरीयशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— 　५०

(क) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाः पञ्चमकाण्डम् । 　३५

(ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः । 　१५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— 　५०

(क) तैत्तिरीयसंहितायाः सस्वरायाः षष्ठं काण्डम् । 　३५

(ख) तैत्तिरीयसंहितायाः नमकचमकाध्याययोः पदक्रम-जटाघनपाठाः 　१५

अथवा

४. सामवेदः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः उत्तरार्चिकस्य ४–६ प्रपाठकाः । २५

(ख) आरण्यगानस्य इन्द्रव्रतशुक्रियपर्वणी २५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) सामवेदसंहितायाः सस्वरायाः उत्तरार्चिकस्य ७–९ प्रपाठकाः । २५

(ख) सुबोधिनीपद्धतिः आदितः कौतुकबन्धप्रयोगान्ता । २५

५. अथर्ववेदः (शौनकीयशाखीयः)

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः ७, ८ काण्डे । ३०

(ख) कुण्डमण्डपसिद्धिः । २०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) अथर्ववेदसंहितायाः सस्वरायाः १२ काण्डम् । ३०

(ख) अथर्ववेदसंहितायाः प्रथमकाण्डस्य पदपाठः । २०

६. प्राचीनव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) अष्टाध्याय्याः ७-८ अध्यायौ काशिकाधारेण-सूत्रपदच्छेद-विभक्तिसमासार्थोदाहरणसिद्धिसहितौ। उदाहरणसिद्धौ विशेषसूत्रातिरिक्तसूत्रप्रदर्शनं नानिवार्यम्। ३०

(ख) नियतभागस्य प्रत्युदाहरणानि। १०

(ग) अष्टाध्याय्याः ७-८ अध्याययोः सूत्रपाठकण्ठस्थीकरणम्। १०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

आख्यातिकः–ण्यन्तात् लकारार्थप्रक्रियान्तः। धातुरूपज्ञान-मावश्यकम्।

७. नव्यव्याकरणम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

सिद्धान्तकौमुद्या दिवादिगणादिनामधात्वन्तो भागः

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

सिद्धान्तकौमुद्या कण्ड्वादिप्रकरणमारभ्य उणादिहीनकृदन्तान्तो भागः

८. साहित्यम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) काव्यमीमांसाया राजशेखरकृताया १–५ अध्यायाः ३०

(ख) वृत्तरत्नाकरस्य १–३ अध्यायाः २०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

किरातार्जुनीयस्य ३–६ सर्गाः

९. न्यायः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) अर्थसङ्ग्रहः २५

(ख) वेदान्तसारः सदानन्दकृतः २५

पञ्चमं प्रश्नप्रत्रम्— ५०

जागदीश्या अवच्छेदकत्वनिरुक्तिः

अथवा

दिनकर्याः अनुमानोपमानशब्दखण्डान्तो भागः

१०. दर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्—न्याय प्रश्नपत्रवत्

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

न्यायसिद्धान्तमुक्तावल्याः व्याप्तिवादः दिनकरीसहितः

११. थेरवादबौद्धदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

बोधिचर्यावतारः १–६ परिच्छेदपर्यन्तः

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

मिलिन्दपञ्हो (लक्खणविमतिच्छेदप्रश्ना)

अथवा

उत्तरमध्यमा द्वितीयखण्डस्य पालिविषयक ख वर्ग-पत्रवत् ।

विशेषः—इमं वैकल्पिकं विषयं त एव छात्राः ग्रहीष्यन्ति ये 'ख' वर्गे पालिविषयं न गृहीतवन्तः ।

१२. ज्यौतिषम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम्— ५०

(क) ग्रहलाघवम् रविचन्द्रस्पष्टाधिकारान्तम् २५

(ख) लघुजातकम् २५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) ग्रहलाघवम् पञ्चतारास्पष्टीकरणादारभ्य सूर्यग्रहणान्तम् २५

(ख) लघुपाराशरी । २५

१३. पुराणेतिहासम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

१. श्रीमद्भगवद्गीता १०–१८ अध्यायः २५

२. विष्णुपुराणस्य चतुर्थोंऽशः २५

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

विष्णुपुराणस्य पञ्चमोंऽशः

१४. प्राकृत एवं जैनागमः

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

रयणसारो (व्याख्या ३० अंकाः
व्याकरणात्मकटिप्पणयः २० अंकाः)

ग्रन्थप्राप्ति—

रयणसार—सम्पादक डा० देवेन्द्रकुमार शास्त्री।

प्रकाशक—कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली।

सम्पादक—पं० वलभद्र जैन, जयपुर।

पञ्चमं प्रश्नपत्रम्— ५०

दसवेआलियं (दशवैकालिक वर्गीकृत १–१५ पाठाः)
अथवा–पाइय पज्जसंगहो वीयो भाओ (पाठाः १-५)
(व्याख्या ३० अंकाः, व्याकरणात्मकटिप्पणयः २० अंकाः)

ग्रन्थप्राप्ति—

१. धर्मप्रज्ञप्ति खण्ड १. दशवैकालिक वर्गीकृतः। प्रकाशक-जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, पोर्चुगीज चर्चं स्ट्रीट, कलकत्ता।

२. पाइय-पज्जसंगहो वीयो भागो—डा० नेमिचन्द्र शास्त्री, ह० द० जैन कालेज आरा (बिहार)

१५. जैनदर्शनम्

चतुर्थं प्रश्नपत्रम् ५०

(क) प्रमेयकण्ठिका (शान्तिवर्णी विरचिता ३०

ग्रन्थप्राप्तिः—वीर सेवा मंदिर ट्रस्ट, जैनमंदिर नरिया, वाराणसी–५

(ख) भिक्षुन्यायकर्णिका २०

ग्रन्थप्राप्ति—आदर्श साहित्यसंघ, चुरू (राजस्थान)

व्याख्या २०

विषयपरिचयः ३०

पञ्चमं प्रश्नपत्रम् ५०

तत्त्वार्थसूत्रम् मूलमात्रम् (उमास्वामिकृतम्)

व्याख्या २०

विषयपरिचयः २०

ग्रन्थकर्तुः परिचयः १०

वैकल्पिकः विषय 'ख' वर्गः

१. नागरिकशास्त्रम्

षष्ठ प्रश्नपत्रम् ५०

भारतीय शासन-विधान एवं नागरिक-जीवन— ३०

(क) भारत के संविधान की विशेषताएँ, मूल अधिकार, नीति-निर्देशक तत्त्व, केन्द्रीय तथा प्रादेशिक शासन-व्यवस्था का अध्ययन, स्थानीय शासन का संघटन तथा कार्य, राष्ट्रिय आन्दोलन, कांग्रेस का महत्व, साम्प्रदायिक आन्दोलन, भारत में शिक्षा, राजनीतिक दल, ग्रामीण जीवन एवं कृषक की समस्यायें, राष्ट्रीय आयोजन, नारी उत्थान एवं संयुक्त राष्ट्रसंघ।

सहायक पुस्तकें:—

१. आधुनिक भारतीय शासन—गोरखनाथ चौबे,

२. भारतीय शासन और नागरिक जीवन—ओमप्रकाश केला

(ख) मनुस्मृतेः ८—१० अध्यायाः । २०

२. अर्थशास्त्रम्

षष्ठ प्रश्नपत्रम् ५०

१. विनिमय—

वस्तु-विनिमय-प्रणाली का अध्ययन, क्रय-विक्रय द्वारा विनिमय, बाजार का विस्तार।

२. विनिमय के साधन—

द्रव्य की परिभाषा, इसके कार्य तथा महत्ता, द्रव्य के बिभिन्न रूप, अच्छे द्रव्य के लक्षण, प्रामाणिक तथा सांकेतिक सिक्के, परिमित एवं स्वतन्त्र रूप से मुद्रा की ढलाई, ग्रेकाम का सिद्धांत। द्रव्य का मूल्य सूचक अंक।

साख तथा साख-पत्र—

चेक, हुण्डी, बैंक ड्राफ्ट।

३. मूल्य तथा उसका निर्धारण—

पूर्ण प्रतियोगिता की स्थिति में मूल्य का निर्धारण तथा दैनिक जीवन में मूल्य का निर्धारण।

४. वितरण का अर्थ, राष्ट्रिय आय।

५. लगान—

रिकार्डों का सिद्धान्त तथा आधुनिक सिद्धान्त।

६. मजदूरी—

नगद एवं वास्तविक मजदूरी, श्रम की माँग तथा पूर्ति द्वारा मजदूरी का निर्धारण।

७. व्याज—

कुल एवं वास्तविक व्याज, व्याज के सिद्धान्त, भारत की पूँजी की गतिशीलता, पूँजी-निर्माण, लाभ कुल एवं वास्तविक लाभ, लाभ के सिद्धान्त। भारत में जोखिम का क्षेत्र।

सहायक पुस्तकें—

१. अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त—श्रीनारायण अग्रवाल।
२. अर्थशास्त्र की रूप-रेखा—श्री ए० एस० गर्ग।
अर्थशास्त्र का विवेचन भाग २— श्री ओमप्रकाश केला भारती प्रकाशन ९० हीवेट रोड इलाहाबाद।
४. अर्थशास्त्र के मूल सिद्धान्त—श्रीकान्त मिश्र, कमला प्रकाशन, कानपुर।
५. प्रारम्भिक अर्थशास्त्र—शंकर-सहाय सक्सेना।
६. आदर्श मुद्रा तथा भारतीय बैंकिंग—आदित्य मिश्र।
७. मुद्रा तथा बैंकिंग—लालता प्रसाद अग्रवाल।

३. इतिहासः

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

भारत का इतिहास (१५२६ उ० से १९४७ तक)

(इस काल के घटनाओं, व्यक्तियों और युगप्रवृत्तियों का परिचय)

सहायक ग्रन्थ—

(१) भारतीय इतिहास का परिचय—डॉ० राजबली पाण्डेय, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी।

(२) भारत का इतिहास भाग २—डॉ० ईश्वरी प्रसाद, इण्डियन प्रेस, इलाहाबाद।

४–पुराण इतिहास एवं संस्कृति

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

१–पौराणिक धर्म एवं संस्कृति

२–पौराणिक कथाएँ

(क) १–वर्णाश्रमधर्म, २-संस्कार, ३-अवतार, ४-शिक्षा, ५-समाज, ६-परिवार ७-नारी की दशा।

(ख) १-अमृतमन्थन एवं रत्नोत्पत्ति, २-जमदग्नि और विश्वामित्र, ३-जड़भरत-का आख्यान, ४-सौभरि-चरित्र, ५-श्रीकृष्ण की बाललीला, ६-कच-देवयानी की कथा, ७-गजेन्द्र-मोक्ष, ८-वृन्दोपाख्यान ९-नचिकेतोपाख्यान, १०-पुरञ्जनोपाख्यानम्, ११-कृष्णावतारकथा १२-सुदामाचरित्र, १३-सावित्री-सत्यवान्कथा, १४–त्रिशंकुचरितम् १५–इलोपाख्यानम्, १६-अगस्त्योपाख्यानम्, १७-अवधूतोपाख्यानम् १८-पूतना-वधकथा, १९–शिशुपालवधकथा, २०–गोकर्णोपाख्यानम् २१-दक्षयज्ञविध्वंस कथा, २२-स्यमन्तकमणि की कथा, २३-मुचुकुन्द की कथा, २४-यदुकुलसंहार का आख्यान, २५-विन्ध्योपाख्यानम्।

(ग) १-इन्द्र, २-इन्द्रद्युम्न, ३-कद्रू और विनता, ४-कालयवन ५-जनक, ६-साम्व, ७-धुन्धुमार।

५ भूगोल

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

(अ) भारत—स्थिति, सीमा, विस्तार, प्राकृतिक रचना, प्राकृतिक विभाग, वहाव प्रणाली, जलवायु, उसके प्रकार और उनका आर्थिक क्रियाओं पर प्रभाव, मिट्टी तथा उसकी उर्बरता, वन सम्पदा और उसका विकास, कृषि का महत्त्व, मुख्य फसलें, कृषि की समस्यायें, सिंचाई के साधन, खनिज सम्पदा, शक्ति उत्पादन के स्रोत, प्रमुख नदी घाटी योजनाएँ, मुख्य उद्योग, यातायात एवं व्यापार, जन-संख्या—वृद्धि एवं वितरण, नगर, तथा बन्दरगाह।

(आ) एशिया—स्थिति सीमा, विस्तार, प्राकृतिक रचना, जलवायु, मिट्टी, प्राकृतिक वनस्पति।

एशिया के देशों का निम्नलिखित सन्दर्भ में अध्ययन—

कृषि, खनिज,उद्योग, शक्ति के साधन, यातायात, व्यापार, जन-संख्या, मुख्य नगर एवं बन्दरगाह।

(इ) मानव भूगोल—परिभाषा, सीमा एवं विकास, मानव भूगोल के मुख्य सिद्धान्त, विश्व के विभिन्न भागों में मनुष्य का रहन-सहन, ग्रामीण एवं नागरिक बस्तियाँ और उनके प्रकार गृह-निर्माण के साधन, गृहों के प्रकार।

(ई) प्रायोगिक भूगोल—

(१) प्रक्षेप—

शंकवाय—साधारण एवं द्विमायक अक्षांशीय।

वेलनाकार—साधारण एवं समक्षेत्र, फलीय।

ध्रुवीय—समदूरवर्ति एवं समक्षेत्र-फलीय।

(२) आंकड़े का प्रदर्शन—
सांख्यिकीय रेखाचित्र (साधारण एवं संयुक्त), रैखिक रेखाचित्र, वृत्तीय-रेखाचित्र, चक्रीय-रेखाचित्र।

(३) मौसम पत्रक—एक ग्रीष्मकालीन एवं एक शीतकालीन मौसम पत्रक का अध्ययन।

६. हिन्दी

षष्ठप्रश्नपत्र ५०

प्रष्टव्यः—पाठ्यपुस्तक से ससन्दर्भ व्याख्या, पाठ सारांश लेखक परिचय, द्रुतपाठ से विवेचनात्मक प्रश्न और गद्य साहित्य का सामान्य परिचय।

पाठ्यपुस्तक— २०

इण्टरमीडिएट गद्य गरिमा—माध्यमिक शिक्षा परिषद् द्वारा उ० प्र० के लिए स्वीकृत राजकीय प्रकाशन।

ससन्दर्भ व्याख्या एवं पाठ सारांश
लेखक परिचय और समीक्षा १०

(ख) द्रुतपाठ

१. अभिनय एकांकी—संम्पा० महेन्द्र कुलश्रेष्ठ प्र०–राजपाल एण्ड कश्मीरीगेट, दिल्ली। ६

२. आंचलिक कहानियाँ [प्र० शारदा प्रकाशन, वाराणसी] ६

(ग) गद्य साहित्य का परिचय ८

सहायक पुस्तक

हिन्दी साहित्य का इतिहास—एक परिचय ले०—डा० त्रिभुवन सिंह हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी ।

हिन्दी साहित्य का रूपरेखा—ले० डा० गणपतिसिंह, चन्द्रगुप्त नेशनल पब्लिशिंग हाऊस नई दिल्ली

७. नेपाली

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

अङ्कविभाजनम् :—

१. व्याख्या १५

२. लेखक परिचय ५

३. अनुवाद संस्कृतबाट नेपाली ५

४. अनुवाद नेपालीबाट संस्कृत ५

५. सहायक ग्रन्थबाट १०

६. पाठ्यांशबाट प्रश्न १०

पाठ्यग्रन्थनामानि :—

(क) नेपाली गद्य चन्द्रिका भाग २, ले०—दिनेशचन्द्र रेग्मी, प्र०—रेग्मीबन्धु, नेपाली पुस्तक सदन, दुर्गाघाट, वाराणसी ।

(ख) पौराणिक कहानी—ले० बदरीनाथ भट्टराई, प्र०—साझा-प्रकाशन—काठमाण्डू नेपाल ।

(ग) सहनशीला सुशीला, भीमनिधि तिवारी, तिवारी प्रकाशन काठमाण्डू, नेपाल ।

सहायक ग्रन्थनामानि :—

१. नेपाली साहित्यको विवेचना, ले०—यज्ञराज सत्यपाल, प्र०—स्वयं, काठमाण्डू, नेपाल ।

२. नेपाली भाषा र साहित्य, ले०—हर्षनाथ शर्मा भट्टराई—पुस्तक पसल, छेत्रेपाटी, काठमाण्डू, नेपाल ।

३. अनुवाद चन्द्रिका भाग ४, ले०—सोमनाथ सिग्देल, प्र०—पुस्तक संसार, भोटाहिटी, काठमाण्डू, नेपाल ।

(ख) पौराणिक कहानी—ले०—वदरीनाथ भट्टराई प्र०—ने० भा० प्र० स० काठमाण्डू नेपाल ।

अथवा

नेपाली सामाजिक कहानी (अन्तरे भाग) श्री भीमनिधि तिवारी काठमाण्डू, नेपाल ।

सहायक ग्रन्थ—

(१) पुराना कवि र कविता—श्री बाबूराम आचार्य, ने० भा० प्र० स० काठमाण्डू, नेपाल ।

(२) हाम्रो साहित्य र साहित्यकार—श्री दिल्लीराम तिंसिना श्री माधव भण्डारी

(३) नेपाली भाषा र साहित्य—श्री हर्षनाथ शर्मा भट्टराई

८. पालिः

षष्ठप्रश्नपत्रम्

(क) पालिपाठसंग्रहो (पठमो भागो) ३५
नालन्दाप्रकाशनमण्डल, नालन्दा

(ख) व्याकरणम्— १५
दण्डी, सुखकारी, वायु, धेनु, मातु, पितु, सत्थ सब्बज्जु, सयम्भू,

अम्ह, तुम्ह, सव्व, किं, य, गच्छन्त—शब्दानां रूपाणि, भ्वादि, स्यादि, दिवादी, तुदादि, तनादि, चुरादि, स्वादि, ज्यादि, क्र्यादिगणोक्त-पूधातूनां लट्, लृट्, लिट्, लङ् लकारेषु रूपाणि; सन्धिः, तद्धितः, कृदन्तश्च ।

सहायकग्रन्थ :—

पालिव्याकरणम्—भिक्षुधर्मरक्षितकृतम्, प्रकाशकः । ज्ञानमण्डल, वाराणसी ।

९. प्राकृतम्

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

(क) रचनानुवादः व्याकरणं च ३० अंकाः
(प्राकृत स्वयं शिक्षक ६४-८९ पाठाः)

(ख) प्राकृतगद्यपद्यपाठाः २० अङ्काः
(प्राकृत-प्रवेशिका, बूल्नर, भाग २ पाठ १, २, ९)

ग्रन्थप्राप्ति—

मुन्शीराम, मनोहरलाल, दिल्ली

१०. विज्ञानम्

षष्ठप्रश्नपत्रम्— ५०

सूचना—विज्ञान के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक अध्ययन अधिक से अधिक हो जिससे सिद्धान्त तथा व्याख्या विद्यार्थियों को बोधगम्य हो, पाठ्यक्रम-अध्यापन में इस बात पर ध्यान दिया जाय कि विज्ञान-सम्बन्धी नियमों को वह समझ सके, एवं अपनी चिन्तनशक्ति तथा विचारधाराओं को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बनावे, अतः अध्यापक लिखित प्रयोगों के

अतिरिक्त स्वयं विभिन्न प्रयोग दिखा सकते हैं, प्रयोगात्मक परीक्षा जबतक सम्भव न हो, लिखित प्रश्नों में दो प्रश्न अवश्य प्रयोगात्मक हों, प्रयोगात्मक पुस्तिका रखना आवश्यक है ।

भौतिकशास्त्र—

प्रकाश—प्रकाश एक विकीर्णशक्ति, तरंगें, तरंगों का प्रसरण, प्रकाश का अन्य शक्तियों से सम्बन्ध ।

छिद्र केमरा के सिद्धान्त का सूक्ष्म दिग्दर्शन, दीप्तिमापन दीप्तिमापक, फोटोमीटर (रमफोर्ड)

प्रकाश का परावर्तन, प्रतिबिम्ब का स्थान, पूर्ण प्रतिबिम्ब देखने के लिए दर्पण की लम्बाई, परावर्तित किरण का घुमाव, सेक्सटेन्स का प्रयोग ।

नतोदर तथा उन्नतोदर दर्पणों के नाभ्यन्तर निकालना, समतल तथा गोलीय दर्पण की पहचान । दर्पणों के उपयोग ।

प्रकाश का वर्तन—नाक्षत्रिक वर्तन, नक्षत्रों की जुगजुगाहट, वर्तन के नियम, वस्तुओं का दृष्टिगोचर होना, सघन और विरल-माध्यम, पूर्ण परावर्तन, पूर्ण परावर्तन के उदाहरण, मरीचिका, पूर्ण परावर्तक त्रिपार्श्व । गोलीय तलों पर वर्तन, लेन्स की वर्तनक्रिया, लेन्स का पावर, उन्नतोदर लेन्स का सूत्र, नतोदर लेन्स का सूत्र । नेत्रदोष तथा उनके निवारण । प्रकाश का विस्तरण—न्यूटन का प्रयोग । साधारण स्पेकट्रम या वर्णाली । शोषित वर्णाली, सौर वर्णाली ।

फोटो, केमरा तथा आँख की बनावट । दीप्तिमान एवं दीप्तिहीन वस्तुओं का रङ्ग । इन्द्र-धनुष, चन्द्र और सूर्य पर मण्डल, प्रकाश-विक्षेपण, समुद्र का नीलापन ।

आलोकयन्त्र तथा नेत्र सहायक यन्त्र के विषय में साधारण ज्ञान ।

चुम्बकत्व–भूचुम्बकत्व तथा उनका कारण भूचुम्बकत्व की मौलिक राशियाँ। उनके मापन की विधि। विक्षेपण-चुम्बकत्व-मापक और दोलन-चुम्बकत्व-मापक।

विद्युत—गोल्वेनोमीटर (लमटोवृज, ज्या, केलवीन) की तुलना ओह्म का नियम—वैद्युत राशियाँ उनकी इकाइयाँ।

प्रतिरोध की इकाई –अमीटर, वोल्ट मीटर, टैनजेन्ट गैल्वेनो मीटर से ओह्म के नियम की परीक्षा।

वैद्युत मापन—प्रतिरोध मापन,तापक्रममापक, विभवमापक।

वैद्युत और ताप दोनों में सम्बन्ध। विद्युत प्रकाश, विद्युत आर्थ, विद्युत बत्तियाँ, कार्वन फिलामेन्ट, गैसभरी बत्तियाँ आदि, विद्युत शक्ति और सामर्थ्य।

साधारण ज्ञान :--

विद्युत धारा के रासायनिक गुण, विद्युत् चुम्बकीय, उपपादन, फैराडे की देन, फैराडे का नियम, लेज्ज का नियम, डायनों का सिद्धान्त तथा डायनमों का निर्माण, विद्युत मोटर और उसकी कार्यविधि :—मोटर की दक्षता।

बिजली घण्टी –टेलीग्राफ, टेलीफोन, माइक्रोफोन, एम्पलीफायर, सामान्यज्ञान, कंथोड किरणे। रेडियो धमिता, फांटो इलेक्ट्रीक सेल की उपयोगिता चोर घंटी, स्वतः फाटक का खुल जाना, बोलता चित्र, टेलीवीजन।

अकार्बनिक रसायनशास्त्र—

रसायनशास्त्र--द्रव्य तथा उनके गुण, होने वाले परिवर्तन एवं प्रायोगिक विधियाँ, रासायनिक संयोग के नियमः–परमाणुवाद एवं पारमाणविकरचना, संकेत सूत्र समीकरण और संयोजकता, एवोगड्रो की परिकल्पना,अणु भार तुल्यांक-भार एवं परमाणु-भार(गणना के प्रश्न

न हों), आयनिक सिद्धान्त, अम्ल-क्षार और लवण,आक्फीकरण तथा अवकरण, तत्वों का वर्गीकरण जल :—रासायनिक गुण एवं क्रियायें, क्लोरीन नाइट्रोजन, अमोनिया नाइट्रिक अम्ल फास्फोरस गंधक, सल्फ्यूरिक अम्ल, कार्बन एवं विभिन्न रूपों के कार्बन धातुएँ और उनका निष्कर्षण, खनिज धातु निष्कर्षण, निम्नलिखित विषयों का सामान्य ज्ञान अपेक्षित है।

क्षार धातुएँ—सोडियम, पोटेंशियम तथा उनके यौगिकों में कार्बो-नेट, बाई कार्बोनिट, हाइड्रोकसाइड सल्फेट नाइट्रट क्लोराइड तथा उनकी जाँच एवं उपयोगिता। मुद्रा धातुयें, कापर, सिलवर तथा उनके यौगिक सल्फेट आक्साइड क्लोराइड, नाइट्रेट जाँच, उपयोगिता। क्षारीय मुद्रा धातुयें, कैल्शियम, मर्करी, अलमुनियम, मैंगनिशियम, लोह और इनके साधारण यौगिक उनकी जाँच तथा उपयोगिता। ताम्र एवं रजत पारा एवं अल्मुनियम, लौह एवं मैंगनिज।

(इनका विस्तृत विवरण अनावश्यक है)

जीवविज्ञान

जीव कोष एक सम्पूर्ण जीवकी दृष्टि से। जीव-विज्ञान की प्रमुख विशेषतायें (अनेकता में ऐकता, सेल बांयोलाजी)

वर्गीकरण :—प्राणि विज्ञान में वर्गीकरण, प्रत्येकवर्ग (प्रमुख) के नाम तथा उदाहरण, बहुकोषधारी जीव की विशेषताएँ, मार्फो-लाजी, एनाटमी, सायटोलाजी फिजियालाजी इत्यादि शाखाओं के अध्ययंन तथा उनसे लाभ। प्राणि विज्ञान में मेढक, उदाहरण स्वरूप।

मेढक :—बाहरी आकार और स्वभाव, आन्तरिक रचना। अस्थिपंजर, मांस-पेशियाँ तथा उनके कार्य। पाचन-संस्थान, श्वसन-संस्थान, परिभ्रामक-संस्थान, प्रणालिकाबिहीन ग्रन्थियाँ, स्नायु-

संस्थान, ज्ञानेन्द्रियाँ विसर्जन-संस्थान, पुनरुत्पादन-संस्थान तथा जीवन, इतिहास सम्बन्धी साधारण ज्ञान तथा मनुष्य के उपर्युक्त अंगोंका तुलनात्मक अध्ययन। निम्नवर्गीय प्राणियों द्वारा मनुष्य शरीर में रोगोत्पादन तथा उनके निराकरण के सम्बन्ध में सामान्य-ज्ञान।

निम्नलिखित प्रयोग विद्यार्थियों को अवश्य दिखाया जाना चाहिए। प्रकाश का सरलरेखाओं में गमन तथा दीप्तिमापन।

समतल दर्पण तथा गोलीय दर्पणों में प्रकाश का परावर्त्तन के नियमों की परीक्षा, प्रीजिल द्वारा वर्तन, पानी तथा शीशे का वर्तनांक निकालना, नतोदर तथा उन्नतोदर दर्पणों के नाभ्यन्तर निकालना।

उन्नतोदर लेन्स का नाभ्यन्तर निकालना: न्यूटन का प्रयोग तथा वर्णाली निकालना, चुम्बक की बलरेखायें खींचना, चुम्बकत्व मापन-विधि ज्ञात करना, अमीटर, वोल्टमीटर तथा गेल्वेनोमीटर का प्रयोग दिखाना, ओह्म की नियम की परीक्षा करना।

रसायन शास्त्र :—गुणात्मक विश्लेषण, सारीय अवयवों की शोषित जाँच शोषित परखनली की जाँच, कोवाल्ट नाइट्रेट जाँच, तथा कोयला अवकरण जाँच तथा ज्वाला द्वारा जाँच।

लेड सिल्वर मरकरी कापर, लोहा, अल्युमुनियम, जिंक, मैगनीज सोडियम, पोटैनियम; अमोनियम की भीगी जाँच।

अम्लीय अवयवों की शोषित जाँच, गाढ़ सल्फ्यूरिक अम्ल द्वारा जाँच। सल्फेट फासफेट की विशेष जाँच, अम्लीय अवयवों की भीगी जाँच।

आयतनात्मक विश्लेषण—व्यूरेट पीपेट इत्यादि का उपयोग, अम्ल या क्षारों के स्टैण्डर्ड घोल, सोडियम कार्बोनेट कास्टिक सोडा, सल्फ्यूरिक एसिड का उपयोग।

आक्सीजन तथा अवकरण, पोटेशियम परमैगनेट का स्टैण्डर्ड घोल तैयार करना और इनसे दूसरे घोल का संकेन्द्रण (Concentration) नारमेलिटि या ग्राम फ्लींटर हिसाब से निकालना।

जन्तुओं के विभिन्न वर्गों का उदाहरण दिखाना। जीवकोष का अध्ययन करना।

मेढक के भीतरी अंगों को दिखाना।

सायटोलाजी तथा हिस्टालाजी का अध्ययन करना (प्राणी) विभिन्नकोष तथा उनकी रचना ज्ञात करना।

पाठ्य पुस्तकें—

१. सरलरसायन—श्री के० कुमार तथा आर० एल० भार्गव
२. अकार्बनिक रसायनशास्त्र—श्री पंचानन दे
३. माध्यमिक कृषि रसायन—डा० पृथ्वीनाथ भार्गव, डा० कैलाशनाथ उपाध्याय
४. आरम्भिक भौतिक—श्री वी० एल० कुलश्रेष्ठ
५. सरलभौतिकी—ले० के० कुमार तथा आर० एल० भार्गव
६. भौतिकविज्ञान प्रवेशिका भाग—१२—डा० नन्दलालसिंह
७. प्रायोगिक—भौतिक विज्ञान—डा० नन्दलाल सिंह
८. माध्यमिक भौतिक विज्ञान—राय चौधरी एवं सिनहा
९. जन्तुविज्ञान—आर० डी० विद्यार्थी
१०. जन्तुविज्ञान—जार्डिन एवं निगम
११. प्राणी विज्ञान—जे० एन० मितरा
१२. माध्यमिक जन्तु विज्ञान—डा० एस० के० गोस्वामी एवं अन्य, मेरठ

१३. वनस्पति विज्ञान—आर० डी० विद्यार्थी

१४. आधुनिक जीवविज्ञान—ग्रन्थमाला

अथवा

गणितम्

(जीवविज्ञान के विकल्प में)

१—घनमापत-वतुलशंकु, बेलन और गोल के पृष्ठतल तथा आयतन।

२—नियामक ज्यामिति-आयतकार नियामकों में सरलरेखा तथा वृत्त का सामान्य ज्ञान।

३—चलन-कलन तथा चलराशि कलन-परिभाषायें तथा प्रमुखसूत्र घातांक फलिन ($_{इ}$य) लघुगणकीय फणिन ($_{इ}$ य) तथा उत्क्रमफलिन (ज्या^{१} य) इत्यादि को छोड़कर।

११. गणितम्

(अ) आयताकार नियामकों में नियामक दो विन्दुओं के बीच की दूरी रेखा अन्तः तथा बाह्यतः विभाजक विन्दु के नियामक त्रिभुज का क्षेत्रफल, निधियाँ सरलरेखा, सरलरेखा युग्म, वृत्त का समीकरण, स्पर्शी, अभिलम्बी, ध्रुव तथा ध्रुवी। र^{२}=४ अय के रूप में परबलय य^{२} र^{२} का समीकरण स्पर्शी तथा अभिलम्बी − + − = १ के रूप में दीर्घवृत्त अ^{२} ब^{२} का समीकरण तथा स्पर्शी और अभिलम्बी।

(अ) स्थितिशास्त्र

एकधरातलीय बल—समानान्तर तथा असमानान्तर बल-संयोजन, काय, (body) पर तीन बलों के प्रयोग में बलसाम्य,

पूर्ण, एकधरातलीय बलसमूह से क्रियाकृत कार्य के साम्य की, स्थितियाँ तथा तदाधारित सरल उदाहरण, गुरुत्व केन्द्र घर्षण, कार्य तथा शक्ति, सरलमशीनें, उत्तोलक, (lever) तुला घिरनी समूह।

(इ) गतिशास्त्र

वेग, वेग-संयोजन, सापेक्ष-वेग, गतिवृद्धि, एकरूप गतिवृद्धि में सरलरेखात्मिका गति, गतिवृद्धि--संयोजन, न्यूटन के गतिनियम, गुरुत्वाकर्षण से ऊर्ध्वाधर तथा नतधरातल में सरलरेखात्मिका गति, घिरनी पर रस्सी से बँधे दो भारों की गति, प्रक्षेप, चिक्कण-कार्यों का समक्ष संघात, गतिशक्ति (Kinetic energy) की परिभाषा तथा कलन।

टिप्पणी--अ, आ, इ में प्रश्न समानुपाती होने चाहिए, पूरे विषय को दृष्टि में रखते हुए प्रत्येक विषय में ४ प्रश्न आवश्यक होने चाहिए।

१२. तुलनात्मकदर्शनम्

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

तर्कशास्त्र आगमनविधि

(क) पाश्चात्य तर्कशास्त्र

विषय प्रवेश:—आगमनमूलक पद्धति का इतिहास, आगमन की समस्या, वैज्ञानिक आगमन तथा उसकी विशेषताएँ, विभिन्न प्रकार के आगमन—"यथा कथित" आगमन-युक्त आगमन की विधि तथा उसके विभिन्न सोपान, आगमन तथा निगमन का सम्बन्ध, आगमन का महत्त्व, उपयोगिता तथा आवश्यकता, आगमनमूलक न्याय-युक्ति।

(ख) भारतीय तर्कशास्त्र

बौद्ध दर्शन के तर्कशास्त्र का संक्षिप्त परिचय

(क) पाठ्यपुस्तकें—

१—पाश्चात्य तर्कविद्या (आगमनविधि)—श्री भोलानाथ राय

२—पाश्चात्य तर्कशास्त्र (आगमन)—भिक्षु जगदीश कश्यप

सहायक पुस्तक—

A Modern Introduction to Logic—by St. Cohen and Nagel.

(ख) पाठ्यपुस्तक—

१—न्यायप्रवेश —दिङ्नागकृत

सहायक पुस्तक—

भारतीय तर्कबोध ज्ञानमीमांसा—प्रो० अनिरुद्ध झा

विशेष—

उपर्युक्त पाठ्यक्रम में निर्धारित संस्कृतमूलग्रन्थों से विषयमात्र के आधार पर तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे।

१३. समाजशास्त्रम्

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

भारतीय समाज-व्यवस्था

पुरुषार्थ का अर्थ एवं महत्व। धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष, वर्ण-व्यवस्था, आश्रम-व्यवस्था, संस्कारों का अर्थ एवं महत्त्व, कर्म का सिद्धान्त, संयुक्त परिवार की विशेषताएँ,संयुक्त परिवार में परिवर्तन, जातिव्यवस्था की विशेषताएँ, जाति-व्यवस्था में परिवर्तन, भारत की प्रमुख सामाजिक समस्याएँ--विवाह की समस्याएँ।

जातिवाद, सम्प्रदायबाद, क्षेत्रवाद, निर्धनता तथा बेकारी, भारत में सामाजिक पुनर्निर्माण।

सहायक पुस्तकें—

हिन्दू मोसल अर्गेनाइजेशन—पी० एन० प्रभु

भारतीय समाजसंस्थायें—रवीन्द्रनाथ मुखर्जी

भारतीय सामाजिक संस्थायें—सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार

१४. संगीतम्

(केवलं बालिकानां कृते)

षष्ठप्रश्नपत्रम् ५०

कण्ठसंगीतम्

प्रायोगिक (कण्ठ द्वारा अभ्यास)—

१स्वरज्ञान—शिक्षक द्वारा गाये जाने पर स्वरों को पहचानना पाठ्यक्रम में आये रागों को स्वरों द्वारा पहचानना।

२—रागज्ञान—निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल, आलाप-तान सहित। किसी एक राग में बिलम्बित ख्याल और तराना जानना आवश्यक है।

राग केदार मालकोस और जौनपुरी।

निम्नलिखित रागों में एक-एक छोटा ख्याल आलाप तान रहित।

राग हमीर और बहार तथा पूर्वी।

३—निम्नलिखित सभी तालों को ठाह और द्विगुण लयों में बोलना ताल, त्रिताल, झपताल और एक ताल।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

१—निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों की व्याख्या। गीत शैलियों का विश्लेषण। अल्पत्व, बहुत्व, पूर्वराग, उत्तरराग; रागों का

समय से सम्बन्ध, आश्रयराग, सन्धिप्रकाश राग, परमेलप्रवेशक राग।

टप्पा, तराना त्रिवट, चतुरंग, रागमाला और होली।

२—पाठचक्रम में आये रागों का शास्त्रीय परिचय।

३—पाठचक्रम में आये तालों को ठाह और द्विगुणलयों से लिखना।

४—पाठचक्रम में आये छोटे ख्याल बड़े ख्याल और तराना कों स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।

५—सरल स्वर-समूहों द्वारा रागों को पहचानना।

६—उत्तरी तथा दक्षिणी संगीत पद्धतियों के स्वरों की तुलना।

७—तानपुरा के अङ्गों का ज्ञान, उनके तारों के मिलाने का ज्ञान। तानपुरा के स्वरों से सहायक नाद की उत्पत्ति।

८—भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

९—निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी पर प्रकाश—

श्रीविष्णुनारायण भातखण्डे, श्रीविष्णु दिगम्बर और श्री नायकगोपाल।

अथवा—वाद्यसङ्गीतम् (सितार)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ८०

प्रायोगिक ३०

१—केदार- जौनपुरी, मालकौस, इन रागों की एक-एक रजाखानी गत तान तोड़ों सहित।

२—तिलक, कामोद, हमीर, बहार, इन रागों की एक-एक गत, मसीतखानी अथवा रजाखानी में तान तोड़ों रहित।

३—तीनताल रूपक, एकताल, धमार, तिलवाड़ा, दीपचंदी इन तालों के ठेकों को ताली देते हुए ठाह तथा दुगुनलयों में बोलने का अभ्यास ।

४—मुख्यरागदर्शक स्वरों द्वारा राग पहचानने का अभ्यास ।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

(निम्नलिखित का ज्ञान)

१—अपने वाद्य का इतिहास

२—गतों के प्रकार, उनका एक दूसरे से अन्तर, बाइस श्रुतियों का स्वर में विभाजन, थाट और राग के मुख्य नियम, सन्धि-प्रकाश राग शुद्ध छाग्राराग तथा संकीर्ण राग । भारतीय वाद्यों के प्रकार तत् अवनद्ध, धन, सुशिर, ख्याल, ठुमरी, लक्षण गीत चिकारी,, खर्ज्य, तोड़ा, पेशकारा, परन अनुलोम-विलोम मीड़ ।

१. संगीत, स्वर, अलंकार, अल्पत्व—बहुत्व ।

२. गापकी—नायकी वाग्गेयकार, राग रागिणी-पद्धति ।

३. पाठ्यक्रम के सभी रागों को स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास ।

४. अपने पाठ्यक्रम के सभी रागों का राग-परिचय ।

५. लिखित स्वरों द्वारा राग पहचानने में निपुणता ।

६. निबन्ध—राग और रस शास्त्रीय संगीत का भविष्य ।

७. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन-चरित्र ।

श्री भातखण्डे, श्रीविष्णुदिगम्बर, पलुस्कर, तानसेन ।

अथवा—वाद्यसंगीतम् (तबला)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

प्रायोगिक ३०

१. लय ज्ञान—आडलय का विशेषज्ञान, अङ्कों की सहायता से विभिन्न लयकारियों को हाथ से ताली देकर दिखलाना जैसे, १ में २, २ में १, २ में २, ३ में ४, २, ३ में ४ और ४ में ३ मात्रा बोलना।

२. तालज्ञान—निम्नलिखित तालों को ठाह और द्विगुणलयों में बोलना—ताल एक ताल, त्रिताल, झूमरा तिव्र (तीवरा), सूलफात्ता, चोटी, सवारी गजझप्पा और मत्तताल। पिछले वर्षों के तालों में विशेष तैयारी।

३. लहरा पर तबला बजाना।

४. वाद्य या कण्ठ-संगीत के साथ संगत करने का अभ्यास।

५. नये टुकड़े और कायदों को तुरन्त बनाने की क्षमता।

६. परीक्षक द्वारा बतलाये शब्दों को तवले पर बजाना।

७. दक्षिण ताल-पद्धति का साधारण ज्ञान।

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्र) २०

१. निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान और उनकी व्याख्या, तिगुन, रेला, उठान, काल, चतस्र और तिस्र जातियाँ सम-विषम, अतीत-अनागत।

२. पाठ्यक्रम में आये तालों की ठाह और द्विगुण लयों में लिखना।

३. पाठ्यक्रम में आये तालों के टुकड़े पेशकारों कायदे और परन केताललिपि में लिखना।

४. उत्तरी तथा दक्षिणी तालों का तुलनात्मक-अध्ययन।

५. भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।

६. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी—

श्रीविष्णुनारायण भातखण्डे, श्रीविष्णु दिगम्बर और श्रीनायक गोयल।

१५. गृहविज्ञान

(केवलं बालिकानां कृते)

षष्ठं प्रश्नपत्रम् ५०

स्वास्थ्य-रक्षा तथा शरीर-विज्ञान

सैद्धान्तिक (लिखित प्रश्नपत्रम्) ३०

शरीर-विज्ञान—मादक वस्तुओं का भूख तथा पाचन पर प्रभाव, रचना यन्त्र—त्वचा, गुर्दा, तथा अँतड़ियाँ रुधिर संचारण-यन्त्र, रुधिर का कार्य, रक्त-संचारण।

श्वास लेने के यन्त्र। स्वर-यन्त्र, टेटुया, फुफ्फुस, ग्रैवेय-नलिका, ठीक प्रकार से श्वास लेना, फुफ्फुस में प्राणवायु ग्रहण करने का सामर्थ्य तथा इसका महत्व। व्यायाम तथा नाड़ी-मण्डल। आँख, कान तथा नाक की बनावट। आँख के रोग तथा उनका उपचार। जननेन्द्रियों का अध्ययन।

स्वास्थ्य-रक्षा—मलेरिया, तपेदिक, कोढ़, चेचक, हैजा, प्लेग, मोतीझरा के रोक-थाम का निदान तथा चिकित्सा।

समाजशास्त्र—कम उम्र में विवाह करने के दोष तथा गुणों की समीक्षा, विवाह का कानूनी तथा शरीर-विज्ञान के दृष्टिकोण से अध्ययन। विवाह के भावात्मक, सामाजिक आर्थिक अथवा यौन-सम्बन्धी पहलुओं पर विचार। पारिवारिक बजट पर विचार।

शिशु-संरक्षण—शिशु का विकास, शरीर-रचना, वृद्धि तथा चरित्र-निर्माण।

प्रायोगिक

भोजन—तरकारी, अचार, मुरब्बा, मीठा अचार, शिकंजी, साग,